n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

B-1

MARK

श्री ब्रह्मानंद भजनमाला

भजन ४००

कीमत ३.००

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

K.K. Sharma

178

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

ॐ

श्रीरमापतये नमः

श्री ब्रह्मानंद भजनमाला

—:०:—

इयं

श्री पर महंसस्वामि ब्रह्मानंद

विरचिता

सेयं

अजमेरनगरे माडर्न मुद्रणालये,

पं० हरिप्रसादेन मुद्रापयित्वा प्रसिद्धि नीता

विक्रमसंवत् २०२३, शकाब्दाः १८८८

ईस्वीसन् १९६६

सर्वाधिकार सुरक्षित

...वीं आवृत्ति] [मूल्य १.०० रु०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

श्री पुष्कर तीर्थ निवासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding II

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

blic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

ईश्वरदर्शनम्

यह ग्रन्थ ईश्वरभक्ति उपासना के विषय का है, ज्ञासुओं के सरलमार्ग से तत्वज्ञान का पुर्णरीति से घ होने के लिए निर्माण किया है, तथा निर्गुण वर का स्वरूप लक्षण, आराधन की विधि का धान विस्तार से किया हुआ है, और अध्यात्मविद्या जानने के लिए ईश्वरदर्शन यह एक ही पुस्तक है। भाष्य भाषाटीका सहित, जिल्दबन्द ग्लेज कीमत २॥) ई रुपया।

श्रीनित्याचारदर्पणः

यह ग्रन्थ नित्यनियम का है, शास्त्रोक्त रीति से दाचार का नित्य पालन करना, इष्ट देवता तथा श्वर के साकार और निराकार की आराधना करने की ारी विधि हे। विष्णु, शिव, दुर्गा, आदि देवताओं पूजन तथा ध्यान करने की विधि सरल रीति से स्तार से लिखी है। प्रातःकाल से लेकर रात्रि के सोते सय तक का नित्याचार और स्त्रियों का धर्म भली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्रकार से निर्माण किया है, सो भक्त पुरुषों तथा स्त्रियों को ईश्वर का आराधन नित्यकर्म अवश्य करना चाहिए। मूल संस्कृत भाषा का जिल्दबन्द ग्लेज कीमत २) रुपया।

—:०:—

श्रीविचारदीपकः

मूल श्लोक संस्कृत भाषाटीका सहित यह ग्रन्थ वेदांत विषय का है, इसमें गुरु शिष्य के संवादद्वारा सब वेदांतशास्त्रों का सार निरूपण किया है। जिल्दबन्द ग्लेज कीमत २) रुपया।

श्रीयोगरसायनम्

मूल श्लोक संस्कृत भाषाटीका, इस ग्रन्थ में योग शास्त्रों का अपने अनुभव के अनुसार योग के साठ अंगों का वर्णन किया है। योगविद्या के जानने के लिए यह ग्रन्थ निर्माण किया गया है। जिल्दबन्द ग्लेज कीमत १।) सवा रुपया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

भजनों की अनुक्रमणिका

भजन	पृष्ठ
अगर है ज्ञान को	७७
अगर है प्रेम दर्शन	७०
अगर हैं प्रेम मिलने	७१
अगर है मोक्ष की	७०
अचरज देखा भारी	२९५
अनहद की धुन	२६४
अतङ्गदधुनी सिर	१७४
अपने को आप	६९
अब जाग मुसा	३२८
अब तुम दया करो	१६०
अब तुम दया करो	१६१
अब तुम दया करो	१६२
अब तुम दया करो	१६३
अब तो छोड़	१६८
अब तो तजो नर	२००
अब तो नाथ	१३९
अब तो सुनिये	२०८
अब तो सुनो प्रभु	१९९
अब तो सुमर पद	१९९
अब पाया है	३०९
अब जाना है	३०७
अये ईश मेरी बेमनी	२१३
अये ईश दासपे दया	२११
अये द नबंधु	६९
अये रामतेरे नाम का	२०८
अये विश्वपति	२१२
अये ईश तेरा नाम	२२३
अये ईश मेरी बिना	२२४
अये ईश तुझे	२१४
अये ईश तुझे नित्य	२२५
अये कृष्ण तेरे नाम	२२६
अये राम तेरा नाम	२२८
अये राम तेरी	२२९
अर्जुन को रण	२२
अहो प्रभु अचरज	१५०
अहो प्रभु काल	१५४
आज सखी सतगुरु	२७
आज सखी स्वपने में	९३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

भजन	पृष्ठ
अज मेरी सुनिये	२४
अ:ज सखी सत	१ ८
आज सखी शाम	१३०
आज मेरी लाज हरि	१३२
आज मेरी बेनती	१३३
आज मेरी बेनती	१३३
आज मुझे आयके	१३४
आज सखी कुंज में	१३५
आदिदेब विश्व	१८२
आना आना रे	२६९
आयो वसत सखीरी	३२५
आली नंदको लाल	१८४
आवो आवो सखी	१९५
आशक मस्त फकीर	१२५
आशक हुआ जो मन	२३०
आशक हुआ जो दिल	२३१
आशक हुआ जों दिल	२३२
ईश्वर मैं दास तेरो	९८
ईश्वर तेरी वड़ाई	१०१
ईश्वर तुं है दयालु	१०२
ईश्वर तुं दीनबंधु	१०२

भजन	पृष्ठ
ईश्वर को जान बदे	१०३
ईश्वर तू है दयाल	१८२
ईश तेरा रूप	२१७
ईश्वर तेरे दरबार की	२२९
ईश्वर दयानिधान	२२०
ईश्वर तेरा स्वरूप	२२०
ऊघो तुझे ज्ञान सार	३९
ऊघो मुझे संत सदा	४०
ऊघो वो सांवरी सूरत	८०
ऊघो वो सांवरी सूरत	८०
ऊघो वो सांवरी सूरत	८१
ऊघो वो सांवरी सूरत	८१
ऊघो वो सांवरी सूरत	८२
ऊघो वो सांवरी सूरत	८३
ऊघो वो सांवरी सूरत	८३
उजियाला है	३१२
ऐसा ज्ञान हमारा	३०४
ऐसो करी गुरुदेव	११९
क्या पानी में मल	२९
क्या भूलियो दिवाने	९७
क्या तो रहा मुसाफिर	१०७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
कर्म कर्म क्या	३२	कैसी मधुर शाम	२१४
कर हरिका भजन	८५	कैसे करू मैं तो	२१६
करो सतसंग पिया	२५६	कैसे सखोरी	३१८
कहे कृष्ण मोरध्वज	५०	कैसे करू गुरु	२३५
कहे पांडव	५१	गाफिल तूं जाग	६८
कहे नाथ जलधर	५४	गाफिल तूं सोच	९८
कहे भक्त प्रहलाद	३३३	गायरे नर गाय	१५७
कहे मारकंड मुनिराया	५७	गुरुचरणकमल	२६०
कहे लछमन	५८	गुरुविन कौन मिटावे	१९८
कामिऊ काम कमाल	१२७	गुरुबिन कौन सहाई	२९१
कालगति वलबान	३०२	गोरी चन्द बाल	५३
काहे शोच करे	३१	घटही में उजियारा	२११
काहे शोच करे नर	१५६	घटही में अविनाशी	२१२
काहे दूर जाये	२८४	घटका करा विचार	३०१
काहे गर्व करे	३४१	घर जाना है घर	३११
कित जावोगे	३०६	चरखा कात	३२१
कित जावुं मैं	३०७	चल चल चल सखी	१४९
किधर को	१४५	चलो चलो सखी अब	६०
किस देवता ने आज	२३२	चलो चलो सखियां	१६५
कृष्ण घर नंद के	७१	चेत रे नर चेतु···	१२६
कृष्ण ने कैसी होदी	१२२	चेतन चमक नियारी	३०४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
चेतन देवकी	२८	जन्म जन्मको मैं	२१
चंचल मन निशि	१७२	जपो हरिनाम	२७८
चालो सखी री	३१८	जय गणेश गण	१७
जगदीश जगतपति	५५	जय शंकर कैलाश	२३
जगदीश मैं शरण	५६	जय दुर्गे दुर्गति	२४
जगदीश प्यारे	९९	जय जगदीश्वरी	२५
जगदीश ईश	१००	जय कमले	२६
जगदीश मैं	१००	जय जय जगदीश	१२८
जगदीश सकल जग	१४०	जयजयजय जगीश्वर	१४६
जगदीश्वर जगत बीच	२४१	जय महेश जटा	१८१
जगस्वपने की माया	१७८	जय गुरुदेव	३४८
जगतपति ईश्वर करो	२७३	जय शिव शिव	३४९
जगतपति ईश्वर तू	२७४	जय जगदीश्वर	३५०
जगतपति ईश्वर तू	२७४	जाग जाग जाग मोह	६५
जगतिपति ईश्वर दया	२७५	जाग मुसाफ़िर देख	१२०
जगत में स्वारथ	१७६	जाग मुसाफिर क्या	१५७
जगत में एक सार	२३४	जाग रे नर जाग	१५८
जगत मैं रामनाम	२७७	जागरे मुसाफिर	२८५
जगत में जीवन	२७८	जागो जागी रे	२०७
जगदीश दयानिधि	३२८	जाती जिधरको	१४६
जतन कर अपना	८६	जिन्दगी सुधार	९८४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
जिधर को देखुं	२१०	तुम मेरी गली	२९०
जिसको नहीं है बोध	२३३	तेरी शरण में आयके	२१०
जीवनकी मत	३०	तेरी शरण पड़ा मैं	१९०
जीवनको प्रतिपाल	३०	तेरी उमर बीती	२४०
जो ईशका उपकार	२१२	तेरी बीती उमर	२५०
जो गर्भका इकरार	२११	तेरे दिदारके लिये	२३०
जो जन हरिका	१५४	तेरो जन्म मरण	१९१
जो जन ध्यान धरे	१५५	तेरी प्रभुजी	११६
जोग जुगत हम पाई	२९२	दयाकी नजरोंसे	२०९
जो जुगत हम जानी	२९३	दर्शन बिन जियरा	१८७
जो नाम का परताप	२१२	दर्शन बिन जियरा	२६२
जो भजे हरिको सदा	२०१	दर्शन बिन तरसे	१८८
जो मौतका दिन	२१३	दिखा दे रूप ईश्वर	९२
झूठ सब जगतपसारा	२५३	दिखाये यार अब	९३
तजो अब नींद	२८०	दिखादे नजर से	१४२
तब पावोगे	३०९	दिल ले लिया है	१०८
तुमे है हरि शरण	२६४	दिलादे नाथ अब	८७
तुम जाय बसे मोहन	१९२	दिलादे भीख दर्शनकी	८७
तुम पढ़ोरे तोता	२४५	दीनदयाल दया करके	११३
तुम पढ़ोरी मैना	२४६	दीन रघु दया कीजे	१३२
तुम तो बड़ा	१६८	दीन के दयाल	२८७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

भजय	पृष्ठ
दीनानाथ दयाल	१८८
दीनानाथरामपनिभव	३२७
दीनानाथ रमापति मैं	३२७
देख सखी कृष्ण	१३१
देख सखी वन	१३८
देखले नजरों से	२०३
देख नजरों से	२५३
देखले चतुर नर	२८८
देख सखी जगदीश	१२५
देखा अजब खिलारी	३०१
देखी सखी बिंदरा	१२२
देखोरी आज	१३७
देखो नजर से	१४३
देखी नंदमहर में घर	२०५
देखी वृन्दावन	१६५
देखा देखोरी लंगर	१८५
दे दे पिया दर्शन	११७
दे दर्शन मोहे आज	१९७
दे पिया दर्शन मुझे	२०२
दो दिन का जगमें	६१
ध्यान का वादा	११४

भजन	पृष्ठ
नजरभर देखले	७८
नजरभर देखले	७८
नजरोंसे देख प्यारे ई	०४
नजरों से देख प्यारे	१०५
नजरों से देख प्यारे	१०४
नवजियों बैद्य क्या	९५
नरकरले रे सतसंग	२४२
नरसिंघ तेरा	२२९
नर क्या सुख	३२१
नहि आते हो	३०५
नाथ दिया अब	२२
नाथ तेरी माया आज	३४
नाथ कैसे नरसिंघ	३६
नाथ कैसे द्रुपदी के	३६
नाथ मैं शरण तुमारी	२५४
नाम नाम नाम जपो	६४
नाम हरिका लोना	१११
नाम लिया हरिका	११२
नाम निरंजन	३०२
नाम निरंजन गावोरे	३२८
नारायण मैं शरण	८१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

भजन	पृष्ठ
नारायश जिनके वरि	१८
नारायण को नाम	९
नारायण जिन हिरदे	२०
नारायण की भजन	२०
नारायणका नाम सदा	२३५
निर्गुण बंथ निराला	२००
निरंजन पदको	२३६
निरंजन घरका	२३७
निरंजन धुनको	२३६
निरंजनमाला	२३७
निरंजन गुरुका	२३८
निरंजन पुरका पंथ	२३९
पछतावेगा	३१३
प्रथम सुमर श्री	१८०
प्रभु मेरी नैयाको पार.	४०
प्रभु तेने कैसी	४१
प्रभु सबमें समाया	७५
प्रभु आज चरणो	१४१
प्रभु मेरे दिल में	१४२
प्रभु प्रभु प्रभु मैं दास	१४८
प्रभु इक नाम तेरा	१५०

भजन	पृष्ठ
प्रभु तेरी महिमा	१५१
प्रभु तेरी महिमा	१५२
प्रभु तेरी महिमा	१५१
प्रेम कर सब	१६९
प्रभु तुम सकल	१७०
प्रभु तुम सब जग	१७१
प्रभु निर्विकार	१८३
प्रभु हमारा	२४३
प्रभु तेरी शरण	२५१
प्रभु तेरे चरण	२६६
प्रभु सुनले बिनती	२६७
प्रभु मेरा अरजी	२७०
प्रभु सुन अरज	२७२
प्रभुजी तेरी किस	२८१
प्रभुजी मेरा	२८२
प्रभुजी राखो	२०६
पनिया भरन	२८७
पिया चालो नग	२६८
पिया मिलगे के काज	१८९
पिलादे प्रेमका प्याल	८८
प्रीत की रीत न जाने	१२२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

भजन	पृष्ठ
प्रीतम प्रीत लगी	१२४
पुरुषार्थको करो	३३९
पूरण ब्रह्म सनातन	१२३
पूरण प्रेम लगा	१२६
प्रेमनगर मत	२८६
फकीरीमें मजा	८५
बता दे मोक्ष	९०
बरज रही मैं इन	२८
बलिहारी मैं	३१०
बंसीका बजाना	१६५
बंसीका बजानारी	१६६
बाहिरढूंढन	६२
बिना हरिनाम के सुमरे	८४
बिनासंतसंग के	८९
बिना कृष्णदर्शन	१५४
बिना हरिके भजन	६२
वृन्दावन कुञ्जभवन	२३१
ब्रजराज आज	१०६
ब्रजराज प्यारे	१०६
ब्रजराज तेरे काज	२२७
बुद्धि बिना बिचार	२५४

भजन	पृष्ठ
भजन बिन भवजल	२६५
भजनमें क्यों चित्त	३३०
भजरे नर रामचरण	१२८
भजले रामनाम	१६४
भजले शनरंग	१७७
भरोसा है मुझे	१३
भाग्य बड़े सत	२६
मत सोना मुसा	२६८
मन क्या भुला	१००
मनमोहन सुन्दर	२४३
मनकी बातन	३०२
मन भाति है	३११
मन माया है	३१४
मनुवा उलटी	१६६
मनुवा सोच समझ	१६७
मनुवा रे हरि	३१८
मनुवा रे राम	३१८
मनुवा रे तज	३१९
महादेव कहे निर्वानी	४६
मान मान कहा	६३
माधवकी छब	१९६

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

भजन	पृष्ठ	भजन	पृष्ठ
मान मान मेरी	१३७	मेरा पिया मुझे	२६३
मान रे मन मौन	१५८	मेरी सुरत गगन	१७५
मानले कहना हमारा	२०३	मुरी बिनती सुनो	२४०
मानले वचन मेरी	२८८	मेरो मति या हरि	२८६
मानुष जनम फिर	१४४	मेरी मतिया कर	२८९
मिलजा मुझे पियारे	१०८	मेरो सजनी	२९०
मिलजादो शामसे उधो	८४	मेरो आलोरी	३१६
मिलादो सखी शाम	२६३	मेरी सुनले अरज	२४९
मुझे क्या काम दुनियाँ	८९	मेरे मना अब तो	२६६
मुझे हैं काम ईश्वर	९०	मेरे मना	२६५
मुझे लगन लगी	१९५	मेरा सुनले बचन	२५१.
मुझे संतगुरु संत	१७६	मेरो प्रभुजी	३१५
मुझे लागी लगन	२४६	मेरो मन रे	३१५
मुझे दे दर्शन गिर	२५९	मेरो मन रे	३१६
मुझे दीजे दरस	२६७	मेरे मन रे क्यों	३१७
मुझे लीजे रे	२६७	मैनावती बचन	५२
मुनि कहत वसिष्ठ	४२	मैं तो तेरा दास	२१६
मुनि कपिल कहे	४४	मैं तो तेरा दास	२८३
मुसाफिर जागवे	९४	मैं तो प्रभु	२६६
मुसाफिर क्या सोवे	२६५	मैं तो रमता	१६१
मुसाफिर चल जाना	२६१	मैं हूँ दास तुम्हारा	[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भजन	पृष्ठ
मैं हूँ शरण तुमारी	२९७
मैं तो गुरु	३२६
मोकूं काने दे	१८७
मोहनी मुरत शाय	२४८
यमराज कहे दंडधारी	५२
यह संसार	३२९
रसभरी रे मोहन	१८६
राजा दशरथ के	२०५
राम तेरी रचना अब	३५
राम तेरा नाम	२१५
राम दशरथ के घर	७३
राम सुमर राम सुमर	१२९
राम नाम सुमरले	१३४
राम सुमर राम उमर	१४७
राम सुमर राम तेरे	२४६
राम रट लेरे प्राणी	२५२
री गुजरिया	२९०
रे मनुवा अब	४२
रे मनुवा क्यों	२५३
लगाले प्रेम ईश्वर	८६
लगाले प्यारे	२३९

भजन	पृष्ठ
वाहवा क्या खेल	३१४
विश्वपति जगदीश्वर	३१४
शरण में आ पड़ा तेरी	७७
शरण में पड़े की लाज	१९१
शरण पड़े की लाज प्रभु	२१८
श्याम के संग	३२४
शिव शिव शिव शिव	२४
शिव भोला भंडारी	९९९
शीश मुकुट तिलक	१८१
शुकदेव कहे तप	४६
शुकदेव कहे मुनि	४४
शुकदेव समय मन	४५
श्रीकृष्ण कहे सुन	३४३
श्रीकृष्ण नाम सार	१३८
श्रीकृष्ण कहे गिरधारी	४३
श्रीकृष्ण लाज	५०
श्रीरामचन्द्र नंद	१३४
श्रीराम नाम सुमर	१३९
श्रीराम कहे समझाई	४७
श्रीराम कहे सुख	४८
श्रीराम कहे बिल	४९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भजन	पृष्ठ
श्रीराम कहे हनु	४९
श्रीराम कहे सुन	१४५
शंकरतेरी जटामें चले	२६
शंकर तेरी जटा में	११०
सखी सुन हाल हमारा	२५७
सखीरी सुन बाजत	२९१
सखीरी सुन वंशी	२७०
सजन तेरी	२९९
सतसंगत जगसागर	२९७
सदाशिव सर्व	७४
सदाशिव शंकर	२५८
सब तज कर राज्य	५४
समझकर देखले	९१
समझ मन	२७०
सांवरी सूरत तेरी	२८६
सांवरी कैसा खेलत	३२३
सुन नाथ अरज	५६
सुनरो सखी मोहन	१०९
सुन सुन सुन प्रभु	१४७
सुनले प्रभु अरज	१७९
सुन भाई हमारा	२४३
सुन सखी अब	३२०
सुन सखरी वर्षा	३२१
सुमर नर रामनाम	२७६
सुहावे सखीं	२९४
सुनो सुनो बचन	५८
सुनो सुनो ध्यान	५९
सुनोसुनो सखी मुक्त	६०
सुनो जगदीश दिल	७६
सुनो जगदीश	२५५
सुनो जगदीश प्रभु	२७९
सुनो दिलको लगा	९२
सुनो दिलको लगा	८९
सुनो आज जगदीश	१४०
सुनोसुनो सखी ज्ञान	१९६
सुनो खेचरी बात	२९४
सुनो सखीरी आज	२१९
सुनो सखी अब	३२०
सुना सखीरी अनहद	३२०
सोहंसोहंसोहंसदाबोलरे	६६
सोहंसोहंसोहंसदाबोलरी	६७
सोहं शब्द विचारो	२९५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भजन	पृष्ठ
संदेश आगया	९६
हरि तेरे चरणनकी	३७
हरि तुम भक्तनके हित	३८
हरि कैसे बलिघर	३८
हरिको सुमर पियारे	९६
हरि हरि हरि नित	१४८
हरि सुमरण बिन	१७३
हरिनाम तुमर सुख	१८९
हरि तुम भगतन के	१७१
हरिनाम तुमर तेरी	१८३
हरिनाम सुमर	१७३
हरिजन करोरे नर	१९३
हरिभजन करे	१९३
हरिचरणकमल	१९४
हरिका भजन करले	१९८
हरि तुमारी छवि	२४४
हरि नाम समरले	२४७
हरि रसभरी बैन	२५९
हरि भजन बिना	२६१
हरिदर्शन की मैं	२६१
हरि तुम भक्तके प्रति	२७१
हरि तुम भक्तन के	२७१
हरिजी तुम भक्तन के	२८२
हरि भजरे उमरा	३१७
हरिका नाम	३३७
हेरी सखी चल	११६
हेरी सखी बतलाया	११५
हेरी सखी आज मुझे	१३०
होरी कुंज गलिन्	३२६
ज्ञान दे गुरुदेवने	२०४

॥ अनुक्रमणिका समाप्त ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ॐ

श्रीरमापतये नमः ।

अथ

श्री ब्रह्मानंदभजनमालाप्रारंभः

(राग जंगला वा पीलु ताल ३ तर्ज—महादेव कहे सुन)

जय गणेश गणनाथ दयानिधि
सकल विघन कर दूर हमारे ॥ टेक ॥ जय०
प्रथम धरे जो ध्यान तुमारो
तिसके पूरण कारज सारे ॥ १ ॥ जय०
लंबोदर गजवदन मनोहर
कर त्रिशूल परशू वर धारे ॥ २ ॥ जय०
ऋद्धिसिद्धि दोऊ चमर ढुलावे
मूषकवाहन परम सुखारे ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मादिक सुर ध्यावत मनमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ऋषिमुनिगण सब दास तुमारे ॥ ४ ॥ जय०
ब्रह्मानंद सहाय करो नित
भक्तजनों के तुम रखवारे ॥ ५ ॥ जय०

(राग जंगला ताल ३)

नारायण मैं शरण तुमारी
दया करो महाराज हमारे ॥ टेक ॥ नाराय०
मात तात सुत दार सहोदर
कोई न आवत काज हमारे ॥ १ ॥ नाराय०
भवसागर जल दुस्तर भारी
तुमरे चरण जहाज हमारे ॥ २ ॥ नाराय०
पाप अनेक किये जगमांही
तुमको है अब लाज हमारे ॥ ३ ॥ नाराय०
ब्रह्मानंद दया तुमरीसे
सब दुख जावत भाज हमारे ॥ ४ ॥ नाराय०

(राग जंगला ताल ३)

नारायण जिनके परिपालक
तिनको कौन दुखाय सके रे ॥टेक॥ नाराय०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्रह्लाद भक्तको डारा अगनमें
रोम न एक जलाय सके रे ॥ १ ॥ नाराय०
गजको पकड़ ग्राहने खेंचा
नहि जल बीच डबाय सके रे ॥ २ ॥ नाराय०
द्रुपद सुताके बीच सभाके
रचन लाज उडाय सके रे ॥ ३ ॥ नाराय०
ब्रह्मानंद जो हरिगुण गावे
को निर्भय पद पाय सके रे ॥ ४ ॥ नाराय०

(जंगला ताल ३)

नारायण को नाम सुमर नर
जन्ममरणदुख जाय तुमारा ॥ टेक ॥ नाराय०
मानुषजन्म मिला जगमांही
दाव जीतकर फिर किम हारा ॥ १ ॥ नाराय०
जो परलोक सहायक तेरा
उस मालिकको काहे विसारा ॥ २ ॥ नाराय०
काल खड़ा सिर ऊपर तेरे
क्या सुख सोवत पांव पसारा ॥ ३ ॥ नाराय०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ब्रह्मानंद बिना हरिसुमरण
नहि भवसागर हो निस्तारो ॥ ४ ॥ नाराय०

(जंगला ताल ३)

नारायण जिनके हिरदे में
सो कछु कर्म करे न करे रे ॥ टेक ॥ नाराय०
नाव मिली जिसको जलअन्दर
वाहुसे नीर तरे न तरे रे ॥ १ ॥ नाराय०
पारसमणि जिनके घरमांही
सो धनसंच धरे न धरे रे ॥ २ ॥ नाराय०
सूरज को परकाश भयो जब
दीप की जो जरे न जरे रे ॥ ३ ॥ नाराय०
ब्रह्मानंद रूप जिन जानो
काशी में जाय मरे न मरे रे ॥ ४ ॥ नाराय०

(राग जंगला ताल ३)

नारायणको भजन करो नर
मनकी छोड़ भटकना सारी ॥ टेक ॥ नाराय०
क्या मथुरा क्या काशी जावे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

क्या पर्वत वन फिरत अनारी ॥ १ ॥ नाराय०
जप तप योग कठिन कलिमांही
थोड़ी उमर काम बहु भारी ॥ २ ॥ नाराय०
शास्त्र अनेक पढ़ो दिनराती
मुक्ति न हो बिन भजन तुमारी ॥३॥ नाराय०
ब्रह्मानंद कटे भवबंधन
हरिका नाम सुमर सुखकारी ॥ ४ ॥ नाराय०

(जंगला ताल ३)

जन्म जन्मको मैं दास तुमारो
करुणाकर अब तार मुरारे ॥टेक॥ जन्म०
भवसागर जलतरण कठिन है
किसविध जाऊँ पार मुरारे ॥ १ ॥ जन्म०
तुमबिन और न पालक मेरो
वंचक सब परिवार मुरारे ॥ २ ॥ जन्म०
मैं गुणहीन दोष परिपूरण
अपनी ओर निहार मुरारे ॥ ३ ॥ जन्म०
ब्रह्मानंद विलंब न कीजे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सुनिये मेरी पुकार मुरारे ॥ ४ ॥ जन्म०

(जंगला ताल ३)

नाथ दियो अब दरस तुमारे
सफल करो प्रभु नैन हमारे ॥ टेक ॥ नाथ०
तेजपुञ्जमय अंग मनोहर
रवि शशि कोटि लजावनहारे ॥ १ ॥ नाथ०
शीश मुकुट मणि जड़ित विराजे
कानन कुण्डल मकराकारे ॥ २ ॥ नाथ०
शंख चक्र कर कमल सुहावे
पीत बसन तन ऊपर धारे ॥ ३ ॥ नाथ०
ब्रह्मानंद चतुर्भुज सुन्दर
मंदहसन हरि गरुड़े सवारे ॥ ४ ॥ नाथ०

(जंगला ताल ३)

अर्जुनको रणभूमि विषे हरि
ब्रह्मज्ञान निर्मल समझावे ॥ टेक ॥ अ०
तू किसका है कौन तुमारा
एकहि आवत एकहि जावे ॥ १ ॥ अ०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अविनाशी यह जीव सनातन
देहके संग मरण नहिं पावे ॥ २ ॥ अ०
घटघट भीतर व्यापक हूँ मैं
भेद भावना क्यों मन लावे ॥ ३ ॥ अ०
ब्रह्मानंद स्वरूप है तेरा
शोक की बात क्यों न बिसरावे ॥ ४ ॥ अ०

(जंगला ताल ३)

जय शंकर कैलाशपति शिव
वरण ब्रह्म सदा अविनाशी ॥ टेक ॥ जय०
अंग विभूति गले मुण्डमाला
शीश जटा जल गंग विलासी ॥ १ ॥ जय०
चंद्रकला मस्तकपर सोहे
तीन नयन त्रैलोक्य विकाशी ॥ २ ॥ जय०
कर त्रिशूल पहरे मृगछाला
संग वसे गिरिजा नित दासी ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद करो करुणा प्रभु
भवभंजन भक्तन सुखराशि ॥ ४ ॥ जय०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(जंगला ताल ३)

शिव शिव शिव शिव नाम सुमर नार
सकल मनोरथ पूरणकारी ॥ टेक ॥ शिव०
रावण नाम लियो दृढ़ मन से
सकल देव आज्ञा सिरधारी ॥ १ ॥ शिव०
नंदीगण जब सुमरण कीनो
कालपाश तत्काल निवारी ॥ २ ॥ शिव०
उपमन्यु मुनि करी तपस्या
दूधसमुद्र कियो बड़भारी ॥ ३ ॥ शिव०
ब्रह्मानंद येहि वर मांगे
भक्ति दान दीजे त्रिपुरारी ॥ ४ ॥ शिव०

(राग जंगला ताल ३)

जय दुर्ग दुर्गतिपरिहारिणी
शंभुविदारिणी मात भवानी ॥ टेक ॥ जय०
आदिशक्ति परब्रह्मस्वरूपिणी
जगजननी चहुँ वेद बखानी ॥ १ ॥ जय०
ब्रह्मा शिव हरि अर्चन कीनो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ध्यान धरत सुर नर मुनि ज्ञानी ॥ २ ॥ जय०
अष्टभुजा कर खड्ग बिराजे
सिंह सवार सकल वरदानी ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानन्द शरण में आयो
भवभय नाश करो महारानी ॥ ४ ॥ जय०

(जंगला ताल ३)

जय जगदीश्वरी मात सरस्वती
शरणागत प्रतिपालनहारी ॥ टेक ॥ जय०
चन्द्रबिंबसम वदन विराजे
शीशमुकुट माला गलधारी ॥ १ ॥ जय०
वीणा वाम अंगमें शोभे
सामगीत ध्वनि मधुर पियारी ॥ २ ॥ जय०
श्वेतवसन कमलासन सुन्दर
संग सखी शुभ हंससवारी ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद मैं दास तुमारो
दे दर्शन परब्रह्म दुलारी ॥ ४ ॥ जय०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(जंगला ताल ३)

जय कमले कमलासन सुन्दरी
सकलजगतमाता सुखदायी ॥ टेक ॥ जय०
रत्नमुकुट मस्तकपर राजे
बनमाला गल बीच सुहाई ॥ १ ॥ जय०
काननमें कुण्डल कर कंकण
पग नूपुर शोभा अधिकाई ॥ २ ॥ जय०
गरुड़ चढी हरिसंग बिराजे
शेष नाग तन सेज बिछाई ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानन्द करे जो सुमरण
सुख सम्पत नित होत सवाई ॥ ४ ॥ जय०

(जंगला ताल ३)

भाग्य बड़े सतगुरु मैं पायो
मनकी दुबिधा दूर बलाई ॥ टेक ॥
बाहिर ढूँढफिरा मैं जिसको
सो वस्तु घट भीतर पाई ॥ १ ॥ भाग्य०
सकल जुन जीवनके मांही

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

पूरण ब्रह्म जोत दरसाई ॥ २ ॥ भाग्य०
जनम जनमके बंधन काटे
चौरासी लाख त्रास मिटाई ॥ ३ ॥ भाग्य
ब्रह्मानंद चरण बलिहारी
गुरुमहिमा हरिसे अधिकाई ॥ ४ ॥ भाग्य०

(जंगला ताल ३)

आज सखी सतगुरु घर आये
मेरे मन आनन्द भयो री ॥ टेक ॥
दर्शनसे सब पाप विनाशे
दुख दरिद्र सब दूर गयो री ॥ १ ॥ आज०
अमृत बचन सुनत तम नाश्यो
घट भीतर प्रभु पाय लयो री ॥ २ ॥ आज०
जन्मजन्मके संशय टूटे
भवभय ताप मिटाय दयो री ॥ ३ ॥ आज०
ब्रह्मानंद दास दासनको
चरणकमल लिपटाय रह्यो री ॥ ४ ॥ आज०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग जंगला ताल ३)

बरज रही मैं इन विषयनसे
मान कही मन मूरख मेरी ॥ टेक ॥
जनम जनमके वरी तेरे
चौरासी लाख फेरत फेरी ॥ १ ॥ बरज०
यह मीठे फल जहर भरे हैं
सुख थोड़ा अरु विपत घनेरी ॥ २ ॥ बरज०
मृततृष्णाजल देख लुभायो
प्यास मिटे कबहूँ नहिं तेरी ॥ ३ ॥ बरज०
ब्रह्मानंद संग तज इनको
पावे मोक्ष लगे नहिं देरी ॥ ४ ॥ बरज०

(रागजंगला ताल ३)

चेतन देवकी सेव करो नर
जन्म सफल हो जाय तुमारो ॥ टेक ॥
घटघट पूरण एक निरंजन
द्वैतभाव सब दूर निबारो ॥ १ ॥ चेतन०
हिरदे अन्दर मंदिरमांही

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जगमग जोत जगे उजियारो ॥ २ ॥ चेतन०
प्रेमपुष्पसें पूजन कीजे
मनदीपक धर ध्यान विचारो ॥ ३ ॥ चेतन०
ब्रह्मानंद उलट सुरतीको
कर दर्शन भवबंधन टारो ॥ ४ ॥ चेतन०

(राग जंगला ताल ३)

क्या पानीमें मल मल न्हावे
मनकी मैल उतार पियारे ॥ टेक ॥
हाड मास की देह बनी है
झरे सदा नवद्वार पियारे ॥ १ ॥ क्या पानी०
पाप कर्म तनके नहिं छोड़े
कैसे होय सुधार पियारे ॥ २ ॥ क्या पानी०
सूतसंगत तीरथ जल निर्मल
नित उठगोता मार पियारे ॥ ३ ॥ क्या पानी०
ब्रह्मानंद भजन कर हरिका
जो चाहे निस्तार पियारे ॥ ४ ॥ क्या पानी०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग जंगला ताल ३)

जीवनको मत मार छुरीसे
मारन हार खड़ा सिर तेरे ॥ टेक ॥
जीव मार कर अमर न होवे
क्यों करता फिर पाप घनेरे ॥ १ ॥ जीवन०
मांस खाय तन मांस बढ़ावे
सो तन अंत न संग चलेरे ॥ २ ॥ जीवन०
ईश्वर के सब पुत्र बराबर
नीच ऊँच नैनन मत हेरे ॥ ३ ॥ जीवन०
ब्रह्मानंद दया धर मनमें
जानन हार जान प्रभु तेरे ॥ ४ ॥ जीवन०

(राग जंगला ताल ३)

जीवनकी प्रतिपाल करो नर
मानुष जन्म सफल हो जाई ॥ टेक ॥
जप तप योग यज्ञ बहुतेरे
जीव दया सब धर्म न भाई ॥ १ ॥ जीवन०
तन मन धन कर सुख उपजावो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्रभाव मनसे बिसराई ॥ २ ॥ जीव०
छैमो तेरा छोड़ भरमना
ईश्वर अंश जान सबमाही ॥ ३ ॥ जीव०
ब्रह्मानंद तजो निज स्वारथ
परउपकार परम सुखदाई ॥ ४ ॥ जीव०

(राग जगला ताल ३)

काहे शोच करे नर मनमें
कर्म लिखा सोई होवत प्यारे ॥ टेक ॥
होवनहार मिटे नहिं कबहुँ
कोटि जतनकर कर सब हारे ॥ १ ॥ काहे०
हरिश्चन्द्र नल राम युधिष्ठिर
राज्य छोड़ वनवास सिधारे ॥ २ ॥ काहे०
अपनी करणी निश्चय भरणी
दुश्मन मित्र न कोई तुमारे ॥ ३ ॥ काहे०
ब्रह्मानंद सुमर जगदीश्वर
सब दुख संकट दूर सिधारे॥ ४ ॥ काहे०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग जंगला ताल ३)

कर्म कर्म क्या गावे मूरख
पुरुषारथ कर होय सुखारी ॥ टेक ॥
परमेश्वरकी वस्तुनमांही
सबका है सम भाग तुमारो ॥ १ ॥ कर्म०
इक भोगे इक तरसे मनमें
पुरुषारथ बिन जीव दुखारो ॥ २ ॥ कर्म०
आलस से निर्धन जन होवे
कर्मनका नहिं दोष विचारो ॥ ३ ॥ कर्म०
ब्रह्मानंद करो पुरुषारथ
लेकर के जगदीश सहारो ॥ ४ ॥ कर्म०

(जंगला ताल ३)

बाहिर ढूँडन जा मत सजनी
पिया घर बीच विराज रहे री ॥ टेक ॥
गगन महल में सेज बिछी है
अनहद वाजे बाज रहे री ॥ १ ॥ बाहिर०
अमृत बरसे बिजली चमके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

घुमट घुमट घन गाज रहे री ॥ २ ॥ बाहिर०
परम मनोहर तेज पियाको
रवि शशि मंडल लाज रहे री ॥ ३ ॥ बाहिर०
ब्रह्मानंद निरख छवि सुन्दर
आनंद मंगल छाज रहे री ॥ ४ ॥ बाहिर०

(जगला ताल ३)

आज सखी स्वपने में आये
नारायण वैकुण्ठविलासी ॥ टेक ॥
मदनअनेक वदनकी शोभा
रवि शशि कोटि तेज परकाशी ॥ १ ॥ आज०
शीश किरीट गले बनमाला
कुण्डल श्रवण मधुर मुख हासी ॥ २ ॥ आज०
चतुर्भुजा पीताम्बर राजे
शंख चक्र कर कमल विकाशी ॥ ३ ॥ आज०
ब्रह्मानंद रमा संग सोहे
गरुड़ सवार परम सुखराशी ॥ ४ ॥ आज०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

राग बरहंस ताल धमाल तर्ज (नाथ फंसे गजको फंद)

नाथ तेरी माया जाल बिछाया
जामें सब जग फिरत भुलाया ॥ टेक ॥ नाथ०
कर निवास नौमास गर्भ मैं फिर भूतलमें आया
खान पान विषया रसभोगन
मात पिता सिखलाया ॥ १ ॥ नाथ०
घरमें सुन्दर नारी मनोहर देख देख ललचाया
सुन सुन मीठी बात सुतनकी
मोहपाशमें फँसाया ॥ २ ॥ नाथ०
गृह काजनमें निशदिन फिरते सकलो जन्म बिताया
आशा प्रबल भई मन भीतर
निर्बल हो गई काया ॥ ३ ॥ नाथ०
पापपुण्यसंचय कर पुनपुन स्वर्ग नरक भटकाया
ब्रह्मानंद कृपा बिन तुमरी
मोक्ष नहीं कोई पाया ॥ ४ ॥ नाथ०

(बरहंस ताल धमाल)

आज मेरी सुनिये अरज गिरधारी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मैं तो आया हूँ शरण तुमारी ॥ टेक ॥ आज०
बालापन सब खेल गवायो तरुणकियो वशनारी
गृह कुटुम्बके पोषण कारण परघर होय भिखारी
मैं जानत यह बांधव मेरे स्वारथकी सब यारी
धनसे हीन भयो मैं जबही सबको लाग्यो खारी
आया था जिसकाम करनको उसकी याद विसारी
आकर मायाजालमें फँसिया निकलनकी नहिंवारी
भवसागरमें डूबत हूँ अब लीजिये वेग उवारी
ब्रह्मानंद करो करुणा प्रभु तुमविनको हितकारी

(बरहंस ताल घमाल)

राम तेरी रचना अचरज भारी
जाको वर्णन कर सब हारी ॥ टेक ॥ राम०
जलकी बून्दसे देह बनाई तामें नर अरु नारी
हाथ पांव सब अंग मनोहर भीतर प्राण संचारी
नभमें नभचर जीव बनाये जलमें रचे जलचारी
वृक्षलता वन पर्वत सुन्दर सागरकी छबि न्यारी
चाँदसूरजदोऊ दीपककीने रातदिवस उजियारी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

तारागण सब फिरत निरंतर चहुँदिशपवनसवारी
ऋषि मुनि निशदिन ध्यान लगावें
लख न सकें गति सारी।
ब्रह्मानंद अनंत महाबल ईश्वर शक्ति तुमारी ॥

बरहंस ताल धमाल

नाथ कैसे नरसिंह रूप बनाया
तासे भक्त प्रह्लाद बचाया ॥ टेक ॥ नाथ०
नाकोई तुमारा पिता कहावे नाकोई जननीजाया
खंभ फोड़कर प्रगटभयेहरि यह अचरज तेरीमाया
आधारूप धरा प्रभु नरका आधा सिंह सुहाया
हिरणकशिपको पकड़धरणमें नखसें फाड़ गिराया
गर्जन सुनकर देवलोकमें ब्रह्मादिक सब आया
हाथ जोड़कर विनती कीनी शांतस्वरूप कराया
अन्तर्यामी सर्व व्यापक ईश्वर वेद बताया ॥
ब्रह्मानंद सत्यकर सबको यह परमाण दिखाया

(बरहंस ताल धमाल)

नाथ कैसे द्रुपदीके चीर बढ़ाये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जांको देख सभी विसमाये ॥ टेक ॥ नाथ०
कौरव पांडव मिल आपसमें जूवा खेल रचाये
हार कपटका पासा शकुनी पांडव राज्य हराये
द्रुपदसुताकी बीच सभाके नगनकरणको लाये
द्वारकानाथ लाज रख मेरी तुमबिन कौन सहाये
दुःशासने पकड़ केशसे चीर बदनसे हटाये
खेचत खेंचत अंत न आयो अंबर ढेर लगाये
भीष्म द्रोण कर्ण दुर्योधन सब मनमें शरमाये
ब्रह्मानंद जिनके हरि पालक तिनको कौन दुखाये

बरहस ताल धमाल)

हरि तेरे चरणनकी हुँ मैं दासी
मेरो काटो जनमकेरी फांसी ॥ टेक ॥ हरि०
नाजाऊँ मथुरा नाजाऊँ गोकुल नाजाऊँ मैं काशी
मोहे भरोसो एक तुमारो दीनबंधु अविनाशी
कोई बरत कोई नेम करत है कोई रहे बनवासी
मैं चरणनको ध्यान लगाऊँ सबसे होय उदासी
नहिं विद्या बलरूप न मेरेनहिं संचय धनराशी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh.

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

शरणागत मोहे जान दयानिधि
राखिये चरणन पासी ॥ ३ ॥ हरि०
नहिं मैं राजपाट कछु मांगु नहिंसुखभोग विलासी
ब्रह्मानंद शरणमें तुमरी केवल दरस पियासी

(बरहस ताल धमाल)

हरि तुम भक्तनके हितकारी
अब राखिये लाज हमारी ॥ टेक ॥ हरि०
प्रह्लादभक्तको हिरणकसपने कष्टदिया जबभारी
नरसिंहरूप बनाय असुरकी नख से देह विदारी
ध्रुवने बनमें करी तपस्या मातबचनहिये धारी
दरस दिखाय अमरपद दीनो जन्ममरण दुखटारी
जब गजराज ग्राहवशकीनो तब हरिनाम पुकारी
गजके फंद छुड़ावन कारण धाये गरुड़ सवारी
द्रुपदीने जब सुमरण कीनो बढगये चीर हजारी
ब्रह्मानंद शरणमें आयो कीजिये भवजल पारी

(बरहस ताल धमाल)

हरि कैसे बलि घर याचन आये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सब जगतके साथ कहाये ॥ टेक ॥ हरि०
बलिराजा रणधीर महाबल इंद्रादिक डर पाये
तीन लोक अपने वश कीने निर्भय राज्य चलाये
वामनरूप धारकर सुन्दर बलिके यज्ञ सिधाये
तीन चरण पृथिवी दे राजन् लेवुं कुटिया बनाये
बलिनेदान दिया जिस क्षणमें अचरज रूप बढाये
तीन लोक में पांव पसारे बलि पाताल पठाये
चरणकमलसे गंगा निकली देव पुष्प बरसाये
ब्रह्मानंद भक्त हितकारी दानववर्ग गिराये

(बरहस ताल धमाल).

ऊधो तुझे ज्ञान सार समझावुं
तेरे मनका भरम मिटावुं ॥टेक ॥ ऊधो०
मैं निर्गुण व्यापक सब जगमें पूरण ब्रह्म कहावुं
धर्म हेतु नररूप धार कर धरणी भार नसावुं
संतजनोंकी करूँ पालना दुष्टन मार गिरावुं
निज भक्तनके प्रेमभाववश अचरज खेल करावुं
योगी जन नित ध्यान लगावें सुन्दररूप बनावुं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सकल जगतके पाप हरणको यश अपना फैलावुं
मेरो रूप सगुण जो ध्यावे निर्गुण पद पहुँचावुं
ब्रह्मानंद नाम जो सुमरे सब भवबंध छुड़ावुं

(बरहस ताल धमाल)

ऊधो मुझे संत सदा अति प्यारे
जाकी महीमा वेद उचारे ॥ टेक ॥ टेक ॥ ऊधो०
मेरे कारण छोड़ जगतके भोग पदारथ सारे
निशदिन ध्यान धरै हिरदेमें सब घरकाजविसारे
मैं संतनके पीछे जावुं जहां जहाँ संत सिधारे
चरणन रज निज अंग लगावुं शोवुं गात हमारे
संत मिलें तब मैं मिल जावुं संत न मुझसे न्यारे
बिना सतसंग मुझे नहिं पावे कोटिज तनक रडारे
जो संतनके सेवक जगमें सो मुझ सेवक भारे
ब्रह्मानंद संतजन पलमें सब भवबंधन टारे

(बरहस ताल धमाल)

प्रभु मेरी नैया को पार उतारो
मैं तो डूबत हुं मझधारो ॥ टेक ॥ प्रभु०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भवसागर जल दुस्तर भारी सूझतनांहिकिनारो
बीच समुन्दर गोते खावे बिन खेवट भयमारो
लंबी लहर उठे पलपल में नहिं जलथलआधारो
परबलपवन चलेनिशवासर चहुँदिश घोर अंधारो
ग्राह भयंकर फाड़फाड़ मुख सन्मुखहोतहजारो
घेर घुमेर पढ़ें बहु भारी कैसे हो निस्तारो
हाथ पैरमें जोर न मेरे नहिं कोई संग सहारो
ब्रह्मानंद भरोसो तेरो अब नहिं देर विचारो

(बरहस ताल धमाल)

प्रभु तैने कैसो खेल रचायो
मैं तो देख देख विसमायो ॥ टेक ॥ प्रभु०
देव रूप हो स्वर्गललोकमें अमृतपान करायो
सुन्दर सुन्दर अपसर गायन सुनसुन मन हरखायो
मनुजशरी धार धरणीपर अन्नशाक फल खायो
पशु पक्षी मृगरूप बनाकर बन जंगल विचरायो
जलचर होकर नदियांसागर सरवर सैल करयो
दानव नाग पाताललोकमें रमणकियो मनभायो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

आपहिं नाना भोजनबनकर आपहिभोगलगायो
ब्रह्मानंद सकल जगमाहीं घटघट बीच समायो
(बरहस ताल धमाल)
रे मनुवा अब तो समझ मेरे भाई
तेरो अवसर बीतो जाई ॥ टेक ॥
लाख करोड़ी माया जोड़ी करकर कपट कमाई
ऊँचे ऊँचे महल बनाये सोयो राज बिछाई
सुन्दर सुन्दर वस्तर पहरे भूषण देह सजाई
नयेनये नित भोजन खाये षटरस स्वाद बनाई
जोवन भरिया सुन्दर नारी भोगी कंठ लगाई
गजरथबाजी करी सवारी सैल किये मन भाई
बालपणी जोवन पुन बीतो वृद्ध अवस्था आई
ब्रह्मानंद छोड़कर तृष्णा शांति पकड़ मनमाही
(राग बनजारा ताल ३ तर्ज—'सखि पनियाभरन')
मुनि राम कहत बसिष्ठ विचारी
सुन राम बचन हितकारी ॥ टेक ॥ मुनि०
यह झूठा सकल पसारा । जिम मृगतृष्णा जल-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

धाराजी। विनज्ञानहोयदुखभारी ॥ १ ॥ सुन०
स्वपनमें जीव अकेला। जिम देखे जगतका
मेलाजी। तिम जान यह रचना सारी ॥ सुन०
परब्रह्म एक परकाशे। सब नाम रूप भ्रम
भाजेसी। जिस सीपमें रतन निहारी ॥ सुन०
विषयों में सुख कछु नाहीं। ब्रह्मानंद तेरे घट
मांहीजी। कर ध्यान देख गिरधारी ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

श्रीकृष्ण कहे निरधारा
सुन अर्जुन बचन हमारा ॥ टेक ॥ श्रीकृष्ण
यह जीव सदा अविनाशी। सुखरूप स्वयं
परकाशीजी। जड़ देहको चेतनहारा ॥ सुन०
जिमि वस्त्र पुराण उतारी। पहरे नवीन नर
नारीजी। तिम जीन शरीर दुबारा ॥ सुन०
मणिका तिम डोर अधारें। तिम सब जग मोर
सहारेजी। मम अंश जीव है सारा ॥ सुन०
यह नश्वर तन थिर नाहीं। क्या सोच करे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मनमांहीजी । ब्रह्मानंद हैं रूप तुमारा ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

मुनि कपिल कहे सुन भाई
अब सांख्य ज्ञान मन लाई ॥ टेक ॥ सुन०
सतरजतमत्रिगुण समाना । सब मिलकर प्रकृति बखानाजी । नित जड़परिमाण धराई ॥ अब०
चेतन सम रूप निराला । जांका सब घटमें उजियालाजी । सोईपुरुषजानतनाहीं ॥ अब०
यहप्रकृतिपुरुषमिलदोई । सब जगत की रचना होईजी । बिन तिनके अवर कछु नाहीं ॥ अब०
जब पुरुष जुदा कर जाना । तब छूटे आवन जानाजी । ब्रह्मानंद स्वरूप समाई ॥ अब०

(बनजारा ताल ३)

शुकदेव कहे मुनिज्ञानी
सुन भूप भागवत बानी ॥ टेक ॥ शुक०
सुखदुख अरु जीवन मरणा । सब अपना करना भरणाजी । कोई करना न किसकी हानी ॥ सुन०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

यह दुस्तर भवजल धारा। बिन भजन न हो
निस्ताराजी। हरिनाम सुमर सुखखानी ॥ सुन०
सुन नर पशु जीव जहाना। नहि भेद कल्पना
नानाजी। सब एक ब्रह्ममय जानी ॥ सुन०
यह जीव अमर सुखराशी। क्षणभंगुर देह
विनाशीजी। ब्रह्मानंद छोड़अभिमानी ॥ सुन०

(बनजारा ताल ३)

शुकदेव समझ मनमांही
मैं स्वर्गलोक से आई ॥ टेक ॥ शुक०
रंभा है नाम हमारा। अब परियों की सर-
दाराजी। कंचन सम देह सुहाई ॥ मैं स्वर्ग०
सब जगतबीच सुखकारी। नहिं मुझसी सुन्दर
नारजी। मुखचंद सुगंध भराई ॥ मैं स्वर्ग०
ईश्वरने जगत बनाया। नरनारी जोग मिलाया
जी। तुम भोगो अति सुखदाई ॥ मैं स्वर्ग०
तन कोमल उमर कुमारा। क्या वृथा कठिन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

तपधाराजी ब्रह्मानंद तजो हठताई ॥ मैं स्वर्ग०

(बनजारा ताल ३)

शुकदेव कहे पधारी
सुन रंभा बात हमारी ॥ टेक ॥ शु०
तुम सुन्दर रूप बनाया । सब हारसिंहार सजायारी । क्या मायाजाल पसारी ॥ सुन०
क्षणभंगुर विषयविकारा । नहीं मन ललचाया हमारारी हरिनाम परम सुखकारी सुन०
सब जीव जूनके मांही । नारी सुख दुर्लभ नांहीरी । मानुषतन मोक्ष दुवारी ॥ सुन०
नहि विषयानंद सुहावे । ब्रह्मानंद मेरे मन भावेरी । अपने घर जावो प्यारी । सुन०

(बनजारा ताल ३)

महादेव कहे निर्बानी
सुन गिरजा अमर कहानी ॥ टेक ॥ महा०
जब प्राण अपान मिलावे । तब कुण्डलनी उठ जावेजी । चढ़े सुन शिखरमें प्राणी ॥ सुन०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जहां भ्रमर गुफा सुखदाई। योगीजन ध्यान लगाईजी। सब काया सुध विसरानी॥ सुन०
नहीं जीव कलेवर मांही। तब काल आय फिर जाइजी। कर सके नही कछु हानी॥ सुन०
तब योगी प्राण उतारे। ब्रह्मानन्द अमर तन धारेजी। मम बचन सत्यकर मानी॥ सुन०

(राग वनजारा ताल ३)

श्रीराम कहे समभाई
सुन लछमन प्यारे भाई॥ टेक॥ श्री०
वनवास पिताने दीना। मैंने बचन शीशधर लीनाजी। संग जनकसुता सुखदाई॥ सुन०
नही दोष केकई माता। यह लिखया लेख विधाताजी। मेरे मनसे शोककछुनाहीं॥ सुन०
सखदुख सब दैव अधीना। नहि कोई किसीका यह कर्मगती बलवाना। भोगे विन होय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

न होना। ब्रह्मानन्द न मन घवराई ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल)

श्री राम अहे सुखकारी
सुन शवरी वात हमारी ॥ टेक ॥ श्री०
जप तप व्रत योग विधाना। बहु वेद पुराण
बखानारी। सबसे मम भक्ति सुखारी ॥ सुन०
कोई छाप तिलक तन धारे। कोई जटाविभूति
रमावेरी। मुझे प्रेम भक्ति इक प्यारी ॥ सुन०
नहि कुल जाती मैं जानुं। निजभक्त ऊंच कर
मानुंरी। यह बचन सत्य निर्धारी ॥ सुन०
तुझ प्रेम हेत हम आये। तेरे हाथ वेरफल
खायेरीं। ब्रह्मानन्द हो मोक्ष तुमारी ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

श्रीराम कहे विलपाई
अब जाग पियारे भाई ॥ टेक ॥ श्री०
वो मेघनाद हत्यारा। जिन शक्तिवान कस
माराजी। सब तनकी सुध बिसराई ॥ अब०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

यह काम बुरा मैं कीन। वनवास संग तुम लीनाजी। मुझ अवगुण चित न धराई॥ अब०
इक सीता गई चुराई। अब पड़े धरणि तुम शायीजी। किस धीरज मुझको आई॥ अब०
तुम बिन कैसे घर आवुं। क्या अपना मुख दिखलावुंजी। ब्रह्मानंद उठो सुखदाई॥ अब

(राग वनजारा ताल)

श्रीराम कहे हनुमाना
सुन वचन कहूँ परमाना॥ टेक॥ श्री०
तुम सीता खबर सुनाई। मेरे मनकी सोच मिटाईजी। तर आयो वारिनिधाना॥ सुन०
सागरमें सेतु बनाया। सब लशकर पार लंघायाजी। किया लंकपुरी में ठाना॥ सुन०
लछमन की जान बचाई। सब राक्षस सेन गिराईजी। रावण दश शीश उड़ाना॥ सुन०
मम काम किया बड़भारी। तुम जीवो वर्ष हजारीजी। ब्रह्मानंद भोग सुख नाना॥ सुन०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग वनजारा ताल ३)

श्रीकृष्ण लाज रख मेरी
मैं शरण पड़ी हूँ तेरी ॥ टेक ॥ श्री०
दुर्योधन कपट चलाया। सब पांडव राज्य हरायाजी। मुझे वीच सभा के घेरी ॥ मैं शर०
दुःशासन हाथ पसारे। मेरे तनसें चीर उतारेजी। सब लोक खड़े चहुँ फेरी ॥ मैं शर०
अब सकल जगतके मांह। मेरा कोई सहायक नाहींजी मुझे एक आश तुझ केरी ॥ मैं शर०
तुम भक्तनके सुखदाई। अब वेग खवर लो आईजी। ब्रह्मानंद चरणकी चेरी ॥ मैं शर०

(राग वनजारा ताल ३)

कहे कृष्ण मोरध्वज राजा
तुम सब भक्तन सिर ताजा ॥ टेक ॥ कहे०
साधुनका वेष वनाये हम द्वार तुम्हारे आये जी। संगमें वन सिंध विराजा ॥ तुम सब०
हम भोजनमें हठ कीना। सुत वदन काट तुम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

दीनाजी । निज धर्म वचन के काजा ॥ तुम०
सब रुदन करें नरनारी । तुम धीरज मनमें धारीजी । सब तजी जगत की लाजा ॥ तुम०
यह देख भक्ति व्रत तेरा । अतिहर्ष भया मनों मेराजी । ब्रह्मानंद सबी दुख भाजा ॥ तुम०

(राग वनजारा ताल ३)

कहे पांडव कृष्ण मुरारी
अब रखिये लाज हमारी ॥ टेक ॥ कहे०
दुर्वाषा मुनि चल आया । संग शिष्य हजार लायाजी । अति उग्र तपोबलधारी ॥ अब०
घरमें नहिं खाजनत्यारा । किस भांत होय सतकाराजी । यह आयो संकट भारी ॥ अब०
दुर्योधन कपट विचारा । मुनिराज शाप निर्धाराजी । वो नाश करे कल सारी ॥ अब०
अब वेग दया कर आवो । मुनिकोप अगनसे बचावोजी । ब्रह्मानंद भगत हितकारी ॥ अब०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(रा गवनजारा ताल ३)

यम राज कहें दंडधारी
सुन जीव तु बात हमारी ॥ टेक ॥ यम०
मानुष तन तुझने पाया । क्यों हरिका नाम भुलायाजी । पड़ा नरकबीच दुखभारी ॥ सुन०
है भरतखंड जगमांही शुभ कर्मधूमि सुखदाईजी । तहाँ किये पाप मत मारी ॥ सुन०
बिषयों में मन धरलीना । पलभर सतसंग न कीनाजी । पशुओं सम उमर गुजारी ॥ सुन०
अब क्या पीछे पछतावे । तुझे जरा शर्म नहिं आवेगी । ब्रह्मानंद है भूल तुमारी ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

मैनावती वचन उचारा
सुन गोपीचंद पियारा ॥ टेक ॥ मैना०
जिनकी कंचनसी काया । धन जोबन रूप सबायाजी । सब होगये काल अहारा ॥ सुन०
यह राज्य संपदा भारी । मद होय पलक में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

न्यारीजी । तन माया मोह पसारा ॥ सुन०
सतगुरुकी शरण सिधारो । कर योग अमर
तनधारोजी । मिटे जन्ममरण संसारा ॥ सुन०
वो नाथ जलंधर योगी । नित ब्रह्मानंद रस
भोगीजी । कर सेवा हो निस्तारा ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

गोपीचंद बाल तुमारा
गुरुनाथ करो निस्तारा ॥ टेक ॥ गोपी०
मुझे माता ज्ञान बताया । तज राज्य शरणमें
आया जी । सब झूठा जगत पसारा ॥ गुरु०
सुन्दर तन भूपति भारे । सब काल नाश कर
डारेजी । मुझे लगे मौत डर भारा ॥ गुरु०
मैं सुना योग बलभारी । सब कालपाश भय-
हारीजी । भवबंधन मेटनहारा ॥ गुरु०
मुझे साधन योग बतावो । करुणाकर शिष्य
बनावोजी । ब्रह्मानंद चरण सिरधारा ॥ गुरु०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग बनजारा ताल ३)

कहे नाथ जलंधर ध्यानी
सुन गोपीचंद सुनानी ॥ टेक ॥ कहे०
जब मूलबंध दृढ़ लावे । तब उलट पवन चढ़ जावेजी सब दशमें द्वार समानी ॥ सुन०
दिनदिन जब योग वधारा । तब शुष्क होय तन साराजी । भूमी जल तत्त्व सुकानी ॥ सुन०
फिर चंद्रकला रस भीना । सब होय शरीर नवीनाजी । अजरामर सिद्धि निवासी सुन०
मरकरके फिर जो आवे । सोई प्रेम रसायन पीवेजी । ब्रह्मानंद परम सुखखानी ॥ सुन

(राग बनजारा ताल ३)

सब तज कर राज्य समाजा
धन चले भरतरी राजा ॥ टेक ॥ सब०
इक विप्र अमर फल लाया । नृप रानी हेत पठायाजी । तन अमर होनेके काजा ॥ बन०
रानी निज प्रीतम दीना । तिन वेश्या अर्पण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कीनाजी । फिर भूपति भेट विराजा ॥ वन०
जिससे मम प्रेम सवाया । सो सेवे पुरुष
परायाजी । सब मेटी कुल की लाजा ॥ वन
मैं मूरख नार अधीना । नहि भजन ईशका
कीनाजी । ब्रह्मानंद वृथा सब साजा ॥ वन०

(राग बनजारा ताल ३)

जगदीश जगतपति प्यारा
कर भवदुख दूर हमारा ॥ टेक ॥ जग०
तुम सब जीवनके स्वामी । घटघटके अंतर-
यामीजी । व्यापक सबसे न्यारा ॥ कर०
भूमि जल अम्बर भारी । सब रचना विश्व
तुमारीजी । अचरज यह खेल पसारा ॥ कर०
ब्रह्मा शिव ऋषि मुनिदेवा । नित करता तुमारी
सेवाजी । सबका तुम पालनहारा । कर०
करुणानिधि दीनदायाला । शरणागत जनप्रति
पालाजी । ब्रह्मानंद मैं दास तुमारा ॥ कर०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग बनजारा ताल ३)

जगदीश मैं शरण तुमारी
प्रभु सुनिये बिनती हमारी ॥ टेक ॥ जग०
यह पाँच विषयकी धारा । सब बह्या जात संसाराजी । करुणा कर पर उतारी ॥ प्रभु०
पंछी जिम जाल अधीना । तिम जीव कर्मवश कीनाजी । मोहे लीजिये वेग उबारी ॥ प्रभु०
तन धन सुत बाँधव नारी । सब झूठ जगतकी यारीजी । तुमबिन नहि को हितकारी ॥ प्रभु०
यह प्रबल तुमारी माया । जामें जीव फिरे भरमायाजी । ब्रह्मानंद करो प्रभु न्यारो ॥ प्रभु०

(राग बणजारा ताल ३)

सुन नाथ अरज अब मेरी
मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी ॥ टेक ॥ सुन०
तुम मानुष तव मोहे दीना । नहिं भजन तुमारी कीनाजी । विषयों में लई मति घेरी ॥ मैं श०
सुत दारादिक परिवारा । सब स्वारथक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

संसाराजी। जिन हेत पाप किये ढेरी ॥ मैं०
मायामें जीव भुलाना। नहिं रूप तुमारो
जानाजी पड़ा जन्म मरण की फेरी ॥ मैं०
भवसागर नीर अपारा। कर कृपा करो प्रभु
पाराजी। ब्रह्मानन्द करो नहिं देरी ॥ मैं ॥०

(राग बनजारा ताल ३)

कहे मारकंड मुनिराया
हरि धन्य तुमारी माया ॥ टेक ॥ कहे०
मैं मन में सुमरण कीना। सब जलधारा जग
भीनाजी। कुटिया संग फिरा बहाया ॥ हरि०
इक बालक बटतरुशाई। मुझे लिया उदरमें
पाईजी। तहां सब जग फिर दरसाया ॥ हरि०
मुखसे जब बाहिर डारा। निजआश्रम आय
निहाराजी। पलमें बहु वर्ष बिताया। हरि०
तुम पूरण ब्रह्म अपारा। मुझे लीजिये वेग
उबाराजी ब्रह्मानन्द शरणमें आया ॥ हरि०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग बनजारा ताल ३)

कहे लछमन कोमल बानी
सुन परशुराम अभिमानी ॥ टेक ॥ कहे०
हम बालकपणमें भारे । कई धनुष तोड़कर डारेजी । क्या शंकर चाप कहानी ॥ सुन०
कुल क्षत्रिय नाश कराई । तुम फूल गये मन मांहीजी । कोई मिला न वीर सुजानी ॥ सुन०
मैं विप्रजान शरमाउं । नहिं यम घर आज पठाउंजी । क्या झूठी हट तुम ठानी ॥ सुन०
यह रामचन्द्र भगवाना । जिन तोड़ा धनुष पुराणाजी । ब्रह्मानन्द समझ मुनि ज्ञानी ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

सुनो सुनो वचन नरनारी
हरिभजन करो सुखकारी ॥ टेक ॥ सुनो०
जिन रचा शरीर तुमारा । उसका क्यों नाम बिसाराजी । कृतघन शठ मूढ़ अनारी ॥ हरि०
खानापीना सोजाना । सब काम है पशुसमा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

नाजी । क्यों देह मनुजकी धारी ॥ हरि०
क्या गर्व करे मनमांही तुझे काल पकड़ ले
जाईजी । पलछिन की लगे नहिं वारी ॥ हरि०
विषयोंसे मनको मोड़ो । हरिचरणकमलमें
जोड़ीजी ब्रह्मानन्द मिटे भय भारी ॥ हरि०

(राग बनजारा ताल ३)

सुनो सुनो ध्यानसें प्यारा
वो वाजत कूच नगारा ॥ टेक ॥ सुनो०
केई राजा सुन्दर रानी । केई योगी पंडित
ज्ञानीजी । केई चले गये सरदार ॥ वो वा०
केई वैद्य ज्योतिषी स्याने । केई पीर पगंबर
दानेजी । कोई रहे न थिर अवतारा । वो० वा०
केई हाथी तुरंग सवारी । केई महल खजानें
भारीजी । केई उठ गये हाट बजारा । वो० वा०
क्या गाफिल टांग पसारी । अब उठकर करो
तयारीजी । ब्रह्मानन्द चलनकी वारा ॥ वो वा०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सुनो सुनो सखी मुझ प्यारी
कर पियाके मिलनकी त्यारी ॥ टेक ॥ सुनो०
दो दिनका पियर ठिकाना । फिर अंत ससुर
घर जानारी । क्या झूठी मोह पसारी कर०
सब मैल उतार बदनसे । कर हार सिंगार
जतनसेरी । नख शिख ले देह सुधारी ॥ कर०
तुझसे गुण रूप सवाई । केई पियाके चरण
लिपटाईरी । मत हो जोबन मतवारी ॥ कर०
पिया बिन न कभी सुख पावे । क्या बिरथा जन्म
गमावेरी । ब्रह्मानन्द रहो मत न्यारी ॥ कर०

(राग बनजारा ताल ३)

चलो चलो सखी अब जाना
पिया भेज दिया परवाना ॥ टेक ॥ चलो०
इक दूत जंवर चल आया । सब लशकर संग
सजायारी । किया बीच नगर के ठाना । पि०
गढ़ कोट किले गिरवाये । सब द्वार बन्द कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

वायेरी । अब किसविधि होय रहाना ॥ पिया॰
जब दूत महलमें आवे । तुझे तुरत पकड़ ले
जावेरी । तेरा चले न एक बहाना । पिया॰
मग पंथ कठिन है भारी । कर संग समान
तयारीरी । ब्रह्मानंद फेर नहि आना ॥ पिया॰

(राग बनजारा ताल ३)

दो दिनका जगतमें मेला
सब चलाचलीका खेला ॥ टेक ॥ दो दि॰
कोई चला गया कोई जावे । कोई गठड़ी बांध
सिधावेजी । को खड़ा तियार अकेला ॥ सब॰
कर पाप कपट छल माया । धन लाख करोड़
कमायाजी । संग चले न एक अधेला ॥ सब॰
सुत नार मात पितु भाई । कोई अंत सहायक
नाहींजी । क्यों भरे पापका ठेला ॥ सब॰
यह नश्वर सब संसारा । कर भजन ईशका
प्याराजी । ब्रह्मानंद कहे सुन चेला ॥ सब॰

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल चलतताल दादरा)

बिना हरिके भजन मुफत जन्म गमाया
दुनियांकी मौज में फिर सदाही भुलाया ॥टेक॥
यह वारवार देह मनुजका न मिलेगा
डालीसे टूटा फूल वो फरिके न खिलेगा
दिन चार पाँचके लिये क्या ढंग जमाना ॥१॥
जिनको तुं मानता है मेरे हैं यह पियारे
वो छोड़कर तुझे जंगलमें घरको सिधारे
परलोकमें न तेरा कोई होत सहाया ॥२॥
मोहकी मदिराको पीके मरण भुलाया
चूस चूस विषया रसकूं फिरत फुलाया
जबतक न चूहेको बिल्लीने मुखमें उठाया ॥३॥
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद लीजिये
सदा हरिका भजन दिल लगाके कीजिये
जिसने किया सो फिर न गर्भवासमें आया ॥४॥

(गजल चलतताल दादरा)

अये दीनबंधु आज मेरी अरज स न जरी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

दयानिधान जान आन शरणमें पड़ी ॥ टेक ॥
काम क्रोध लोभ मोह चोर धन हरे
तेरे बिना दयाल कौन पालना करे
बड़े हैं जोरदार हार खायके डरी ॥ १ ॥
अज्ञानका पड़दा मेरे दिलसे उठाइये
विषयों के जालसे प्रभु मुझको बचाइये
भवसिंधुको तार सोई जिसपे दया करी ॥ २ ॥
जन्ममरणका रोग मेरा नाश कीजिये
चरणकमलकी भक्ति दास जान दीजिये
मिटेंगे दुख सबी जबी तेरी नजर हरी ॥ ३ ॥
गुणहीन जानकर मुझे दिलसे न टारिये
जनम जनमका दास जानकर सभारये

(गजल ताल दादरा)

मान मान मान कहा मान ले मेरा
जान जान जान रूप जान ले तेरका ॥ टेक ॥
जाने बिना स्वरूपके मिटे न दुख कबी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कहते हैं वेद बार बार बात यह सची
सतसंगमें मन जोड़ तोड़ मोहका घेरा ॥ १ ॥
जाता है देखने जिसे काशी दुवारका
मुकाम है बदनमें तेरे उसकी यारका
लेकिनबिना विचारके किसने नहिं हेरा ॥ २ ॥
जो नैनकाभी नैन बैनकाभी बैन है
पिछान ले वही तेरा स्वरूप है तेरा ॥ ३ ॥
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद तू सही
बात यह पुराण वेद ग्रंथमें कही
विचार देख मिटे जन्ममरण का फेरा ॥ ४ ॥

(गजल ताल दादरा)

नाम नाम नाम जपो नाम रामका
काम काम काम तजो काम धामका ॥ टेक ॥
बिना हरिके नाम कबी सुख न पायगा
मरकरके अंतकालमें तु नरक जायगा
मिलेगा बारबार तुझे तन गुलामका ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

करता है क्या गुमान तुं जोबन वा माल का
महमान है यह पास तेरे आजकाल का
पुतला बिखर जायगा तेरा हाड़चामका ॥२॥
तप योग यज्ञ दान कर्म हैं बड़े सही
कलियुगमें नामके समान दूसरा नहीं
मिलता है यतनसे बिना बिनही दामका
पाकर मनुजका तन जो हरिनाम ना लिया
चिंतामणीको मूढ़ कचसे बदल दिया
ब्रह्मानंद भजनके बिना जीना न काम का ॥४॥

(गजल ताल दादरा)

जाग जाग जाग मोह नींद से जरा
भाग भाग भाग भोग जालसे परा ॥टेक॥
विषयोंके जालमें फसा छुटे नहीं कवी
जन भजनममें विषय संग होते हैं सवी
विना विरागके भवसिंधुको तरा ॥१॥
वर्ष गया मास गया दिन गई घड़ी
दुनियांके कारबारमें खवर नहीं पड़ी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

नजदीक काल आयगा मनमें नहीं डरा ॥२॥
संगत में देहकी स्वरूपको बिसारिया
जगतको सत्य मानके मनको पसारिया
दिनरात करे सोच राग द्वेषसे भरा ॥३॥
अपने स्वरूपको विचार देखले सही
ईश्वर है तेरे पास वो तुझसे जुदा नहीं
ब्रह्मानंद येही वेदका सुनले बचन खरा ॥

(गजल ताल दादरा)

सोहं सोहं सोहं सदा बोल रे तोता
नहीं तो भवसिंधु में तुं खायगा गोता ॥टेक॥
जगत बगीचे बीच फल चूसता फिरे
आतमस्वरूपकी तरफ नजर नहीं धरे
खायेगा यम गुलेल जबी फिरेगा रोता ॥१॥
लालचको देख मूढ पींजरेमें फस गया
सदाही खान पान मान हेत वश भया
तुं छोड़कर इसे कभी जुदा नहीं होता ॥२॥
इकदिनमें पिंजराभी तेरा टूट जायगा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

स्वजन मकान माल सबी छूट जायगा
जिन के तुं वासते मुफत उमर फिरे खोता ॥३॥
कहता है ब्रह्मानंद सुनो मूवारे चपल
इस पिंजरेको छोड़ सदा हो रही अचल
तुं जाग मोहनींदसे फिरे कहां सोता ॥४॥

(गजल ताल दादरा)

सोहं सोहं सोहं सदा बोलरी मैना
होता है अष्टपहर येही वेदका कहना ॥ टेक ॥
तुं बैठ वृक्षडार शब्द बोलती रहे
अपने मुकाम में कबी विश्राम ना लहे
लगेगी बाजकी झपट खुलेंगे तो नैना ॥१॥
जिसको तूं ढूंढने जंगलमें जाती है सदा
वही है तेरे पास नहीं होता कबी जुदा
बतावते हैं संत येही समझ ले सैना ॥२॥
इस पिंजरेमें बैठ भूल आपको गई
विषयोंकी लालसामें सदा कैद हो रही
तुं छोड़ विषयसंग तबी पायेगी चैना ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection; Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

यह पिंजरा पुराणा तेरा होत जात है
दिन चार पांच वा घड़ी वा पल की बात है
ब्रह्मानंद तेरे संग यह सदा नहीं रहना ॥४॥

(गजल ताल दादरा)

गाफिल तुं जाग देख क्या तेरा स्वरूप है
किस वासते पड़ा जन्ममरणके कूप है ॥टेक॥
यह देह गेह नाशवान है नहीं तेरा
वृथाविभान जालमें फिरे कहां घेरा
तुं तो विनाशसे परे सदा अनूप है ॥ १ ॥
भेद दृष्टि कीन जबी दीन होगया
स्वभाव अपनेसे आप हीन होगया
विचार देख एक तुं भूपनका भूप है ॥ २ ॥
तेरे प्रकाश से शरीर चित्त चेतता
तुं देह तीन दृश्यको सदा है देखता
द्रष्टा नहि होता है कबी दृश्य रूप है ॥ ३ ॥
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद पाइये
इस बातको विचार सदा दिलमें लाइये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तुं देख जुदा करके जैसे छाय धूप है ॥ ४ ॥

(गजल ताल दादरा)

अपनेको आप भूलके हैरान होगया
मायाके जाल में फसा बिरान होगया ॥ टेक ॥
जड़देहको अपना स्वरूप मान मन लिया
दिनरात खान पान कामकाज दिल दिया
पानीमें मिलके दूध एकजान होगया ॥ १ ॥
विषयोंको देखदेखके लालचमें आरहा
दीपकमें ज्यों पतंग जायके समारहा
बिना विचारके सदा नादान हो गया ॥ २ ॥
कर पुण्य पाप स्वर्ग नरग भोगता फिरे
तृष्णा की डोर बंधा सदा जनम धरे
पीकरके मोहकी सुरा बेभान हो गया ॥ ३ ॥
सतसंगमें जाकर सदा दिलमें विचारले
बदनमें अपने आप रूप को निहारले
ब्रह्मानंद मिले मोक्ष जबी ज्ञान हो गया ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

(गजल ताल धमाल तर्ज—अगर है शौक मिलनेका)

अगर है मोक्षकी बांछा
छोड़ दुनियांकी यारी है ॥ टेक ॥ अगर०
कोई तेरा न तु किसीका सभी मतलब के हैं साथी
फसा क्यों जाल मायाके कालसिरपे सवारी है ॥
बैठ संगतमें संतन की रूप अपने को पहचानो
तजो मदलोभ हंकारा करो भगती पियारी है ।
बसो एकांतमें जाकर धरो नित ध्यान ईश्वरका
रोक मनकी चपलताई देख घटमें उजारी है ॥
जलाकर कर्मकी ढेरी तोड़ मायाके बंधनको
ब्रह्मानंदमें मिलोजाकर सदा जो निर्विकारी है ॥

(गजल ताल धमाल)

अगर हैप्रेमदर्शनका भजनसेप्रीतकरप्यारा ॥टेक॥
छोड़कर काम दुनियांके रोकविषयोंसे मनअपना
जीतकर नींद आलसको रहो एकांतमें न्यारा ॥
बैठ आसन जमाकरके त्याग मनके विचारोंको
देख भृकुटीमें अन्दरसे चमकता है अजब तारा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

कबी बिजली कबी चंदा कबी सूरज नजर आवे
कबी फिरध्यानमें भासे ब्रह्मजोतीका चमकारा ॥
मिटें सब पाप जन्मोंके कटें सब कर्म के बंधन
वो ब्रह्मानंदमें होवे लीन मन छोड़ संसारा ॥

(गजल ताल धमाल)

अगर है प्रेममिल ने का तो दुनियां से क्युं शरमावे
पिता प्रह्लादको मारा नाम हरिका न छोड़ा है
प्रभु रक्षा करे जिनकी तो मन में कौन डरपावे ॥
चलावन में तपस्या को मना ध्रुवको किया राजा
लगन जिसकोलगीपूरण उसे फिरकौन अटकावे ॥
सभा के बीच द्रौपदीने पुकारा नाम माधव का
भरोसा है जिसे हरिका क्यों दूजेकी शरण जावे ॥
सदा सतसंगमें जाकर करो हरिका भजन प्यारे
वो ब्रह्मानंद जाता है वकत फिर हाथ न पावे ।

(गजल ताल धमाल)

कृष्ण घर नंद के आये सितारा हो तो ऐसा हो
करें सब प्रेम से दर्शन दुलारा हो तो ऐसा हो ॥टेक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

बकासुरको मसल डारा पूतना जानसे मारी
कंसकोकेशसे खेंचा खिलारा हो तो ऐसा हो ॥
कूद पानी के अन्दरसे नागको नाथ कर लाये
चरणफणफणपेधरकरके नचारा हो तो ऐसा हो ॥
तीर जमुनाके जाकरके बजाई बंसरी मोहन
चलीघरछोड़ब्रजनारी पियारी हो तो ऐसी हो ॥
रचाई रास कुञ्जन में मनोहर रूप बन कर के
देवदर्शन को चल आये दिदारा हो तो ऐसा हो ॥
गये जब छोड़ गोकुलको नहीं फिर लौटकर आये
सखी रोती रही बनमें किनारा हो तो ऐसा हो ॥
पुरी द्वारावती जाकर महल सोनेके बनवाये
हजारों रानियाँ ब्याहीं पसारा हो तो ऐसा हो ॥
कुरु पांडव लड़े रणमें जीत अर्जुन की करवाई
बचाई लाज द्रुपदीकी सहारा हो तो ऐसा हो ॥
उतारा भार भूमीका सिधाये धाम अपने को
वो ब्रह्मानंद दुनियांसे नियारा हो तो ऐसा हो ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(गजल ताल धमाल)

रामदशरथके घर जन्मे घराना हो तो ऐसा हो ॥
लोकदर्शनको चलआयेसुहानाहोतोऐसा ॥ टेक ॥
यज्ञके काम करनेको मुनीश्वर ले गया बनमें
उड़ाये शीश दैत्यनके निशाना हो तो ऐसा हो॥
धनुषको जायकर तोड़ा जानककी राजधानीमें
भूपसब मनमें शरमाये लजाना हो तो ऐसा हो ॥
पिताकी मानके आज्ञाराम बन को चले जबही
नछोड़ा संग सीताने जनाना हो तो ऐसा हो ॥
सियाको लेगया रावण बनाकर वेष जोगीका
कराया नाशसब अपना दिवाना हो तो ऐसा हो॥
प्रीत सुग्रीवसे करके गिराया बाण से बाली
दिलाई नार फिर उसकी घराना हो तो ऐसा हो ॥
गया हनुमान सीताकी खबर लेनेको लंकामें
जलाकरके नगर आया सियाना हो तो ऐसा हो ॥
बांध सेतु समुन्दरमें उतारा पार सेनाको
मिटाया वंश रावणका ठगाना हो तो ऐसा हो ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

राज्यदेकर विभीषणको अयोध्या लौट कर आये
वो ब्रह्मानन्दबलअपना दिखाना हो तो ऐसा हो ॥

(गजल ताल धमाल)

सदाशिव सर्व वरदाता दिगंबर होतो ऐसा हो॥
हरेसबदुःखभक्तनके दयाकरहोतो ऐसा हो ॥टेक
शिखर कैलाशके ऊपर कल्पतरुवोंकी छायामें
रमेनितसंगगिरिजाके रमणधर हो तो ऐसाहो ॥
शीशपर गंगकी धारा सुहावे भालमें लोचन
कला मस्तकमें चंदरकी मनोहर होतो ऐसा हो॥
भयंकरजहर जब निकला क्षीरसागरके मंथनसे
धरा सब कंठमें पीकर विषधर होतो ऐसा हो ॥
सिरोंको काटकर अपने कियाजबहोमरावणने
दियासबराज्यदुनियांका दिलावरहोतोऐसाहो
किया नंदीने जा बनमें कठिन तप कालकेडरसे
बनाया खासगणअपना अमर करहोतोऐसाहो॥
बनाये बीच सागरमें तीन पुर दैत्य सेनाने
उड़ाये एकही शरसें त्रिपुरहर होतो ऐसा हो ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

दक्षके यज्ञ जाकर तजी जब देह गिरिजाने
किया सबध्वंसपलभरमें भयंकर होतो ऐसा हो ॥
देव नर दैत्य गण सारे जपें नित नाम शंकरका
वो ब्रह्मानंद दुनियामें उजागर हो तो ऐसा हो

(गजल ताल धमाल)

प्रभु सबमें समाया है समाना होतो ऐसा हो
करीसर्वविश्वकीरचना रचना होतो ऐसाहो ॥टेक
बिना सामान बाहिरके बिना हथियारके कोई
बनाये हैं भुवन सारे बनाना होतो ऐसा हो ॥
बीजमें वृक्षकी पैदा वृक्षसे बीजका होना
चलाया चक्र दुनियाका चलाना होतो ऐसा हो॥
कोई पातालके नीचे बसाये जीव भूतलमें
कोई आकाशके ऊपर बसाना हो तो ऐसा हो ॥
चांद सूरज वा तारोंके फिरें आकाशमें मंडल
बिना आधारके कोई फिराना होतो ऐसा हो ॥
बनाई देह मानुषकी दिये सब भोगके साधन
बिनाउपकारके करुणा निधाना होतोऐसा हो ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

चराचर सर्व जीवनकी करे नित पालना पोषण
सकल संसारका मालिक कहाना होतो ऐसा हो॥
जगत आदिसे पहले रहे मौजूद आखिरमें
पिता संसार सारेका पुराणा हो तो ऐसा हो।
शरणमें जीव जो आवे मिटें सब जाल मायाके
वो ब्रह्मानंद बंधनसे छुड़ाना होतो ऐसा हो॥

(गजल ताल कवाल)

सुनोजगदीश दिलके अरजअबतोहमारीहै ॥टेक
जुदा जबसे हुआ तुमसे फसा मायाके चक्करमें
निकलनाहै कठिनभारी नजरआवे नथारी है॥
आया था एकला तुमरे भजन करनेको दुनियांमें
कुटुम्बपरिवार सुत दारा जाल झूठी पसारी है॥
कर्मकी डोरसे बांधा पड़ा कायाके पिंजरेमें
फिराविषयोंकीलालचमें उमरसारी गुजारी है॥
माफकर दोष सब मेरे दास अपना बनालीजे
वो ब्रह्मानंद चरणोंकी भक्ति दीजे तुमारी है॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(गजल ताल धमाल)

अगरहैज्ञानकोपानातो गुरुको जाशरणभाई ।।टेक
जटा सिरपे रखानेसे भस्म तनमें रमने से
सदा फलमूल खानेसे कबी नहीं मुक्तिको पाई ।।
बने मूरत पुजारी है तीरथ यात्रा पियारी है ।
करे ब्रतनेम भारी है भरम मनका मिटे नाही
कोटिसूरज शशी तारा करे परकाश मिल सारा
बिना गुरु घोर अंधारा न प्रभुका रूप दरसाइ ।।
ईस सम जान गुरु देवा लगा तनमन करो सेवा
ब्रह्मानंद मोक्षपद मेवा मिले भवबंध कटजाई ।।

(गजल ताल धमाल

शरणमें आपड़ातेरी प्रभु मुझकोभुलानाना ।।टेक
तेरा है नाम दुनियांमें पतितपावन सवी जाने
देखकर दोष को मेरे नजर मुझसे हटानाना ।।
कालकी है नदी भारी वहा जाता हूं धारामें
पकड़ले हाथ अब मेरा नाथ देरी लगानाना ।।
भगत तेरे हैं बहुतेरे करें सुमरण सदा मन में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

जाकर दासदासनका मुझे उनसे छुड़ानाना ॥
तेरा है रूप अविनाशी जगतसारेमें है पूरण
वो ब्रह्मानंद नैननसे मेरे कबहुँ छिपानाना ॥

(गजल ताल धमाल)

नजरभर देखले मुझको शरणतेरीमें आयाहूँ ॥टेक
कोई माता पिता बंधु सहायक है नहीं मेरा
कामअरु क्रोधदुश्मनसे बहुतदिनसेसताया हूँ ॥
भुलाकर यादको तेरी पाड़ दुनियांके लालचमें
मायाके जाल में चारों तरफ से मैं फसायाहूँ ॥
कर्म सब नीच हैं मेरे तुमारा नाम है पावन
तार संसारसागरसे गहन जलमें डूबायाहुँ ॥
छुड़ाकर जन्मबंधनसे चरणमें राखले अपने
वो ब्रह्मानंद मैं मनमें येही आशा लगायाहूँ ।

(गजल ताल धमाल)

नजरभर देखलेमुझको शरणमें आपड़ातेरी ॥टेक
तेरा दरबार है ऊंचा कठिन जाना है मंजिलका
हजारों दूत मारगमें खड़े हैं पंथको घेरी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

नहीं है जोर पैरोंमें न दूजा संगमें साथीं
सहारादे मुझे अपना करो नहिं नाथ अब देरी॥
नहीं है भोग की वांछा न दिलमें मोक्ष पानेकी
प्यासदर्शनकी है मनमें सफलकर आशकोमेरी॥
क्षमा कर दोषको मेरे बिरदको देखके अबने
वो ब्रह्मानंद करकरुणा मिटादे जन्मकी फेरी॥

(जंगला ताल धमाल)

सुनोदिलकोलगाप्यारे धुनीअनहदकीहोतीहै ॥टेक
बजे है बंसरी बीणा शंख घड़ियाल मिरदंगा
गरज बादलकीहै भारी कर्मकी मैल धोनी है॥
उठो धुनके सहारेसे बदन सारेमें गुन्जारा
अमृतकी धार तालुमें सदा मुखमें निचोती है॥
लगे मन नादके अंदर भुले तनकी खबर सारी
हिरदेके बीचमें सुन्दर प्रगटहो दिव्यजोती है॥
खुले जब दृष्टिके पड़दे नजर आवें भुवन सारे
वो ब्रह्मानंदकी लहरी प्रेमरसमें भिगोती है॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

(गजल ताल धमाल)

ऊधोबोसांवरीसूरतहमें. दिलजानसेभातीहै ॥ टेक
वो काले बाल माथेपे मुकुट मोरनके पांखोंकी
मकरकुन्डलकी कानोंमें झलकवो यादआती है ॥
गले वनमालकी शोभा पीतांवरकी छटातनपे
वो वंसीकी मधुरबोली हमें तनमन भुलाती है ॥
कटीमें मेखला सुन्दरसजी मोतिनकी लड़ियोंकी
वो नूपुरकी धुनी पगमें हमारा दिल चुराती है
वो ब्रह्मानंदकी बातें सुमरते रैन जाती है ॥

(गजल ताल धमाल)

ऊधोवोसांवरी सूरत हमें फिरकबदिखावोगे ॥टेक
बिरहकी आगने हमारा जलाया है वदन सारा
मोहनके प्रेमपानीसे जलन वो जब बुझावोगे ॥
सुधी खाने वा पीनेकी रही हमको न सोने को
प्यासदर्शनकी है मनमेंकृष्णको कबमिलावोगे ॥
फिरें दिन रैन हम रोती वो वृन्दावनकी कुन्जनमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मनोहर वंसरीकी धुन हमें फिरकब सुनावोगे ॥
न हमको यं गसे मतलब न मुक्ति की हमें वांछा
वो ब्रह्मानंद सुन्दरसें हमारा दिल लगावोगे ॥

गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरी सूरत हमारे दिल समाई है ॥टेक
न दिनको चैन नैनन में नींद नहिं रातको आवे
खबर घरबारतनमनकी सभी हमको भुलाई है ॥
बांधकर प्रेमबंधनसे छोड़ हमको गये मोहन
सही जाती नहीं हमसे श्यामकी अब जुदाई है ॥
छोड़कर काम हम घरके बनाकर वेश जोगनका
करेंगी खोज बनबन मिले कैसे कन्हाई है ॥
चरणका ध्यान योगीजन सदाजिनका करेंमनमें
वो ब्रह्मानंद दर्शनकी लगन हमको लगाई है ॥

(गजल ताल धमाल)

ऊधोवो सांवरीसूरतलगे हमको पियारी है ॥टेक
धर्मकी पालना करने लिया अवतार नारायण
हमारे भाग्य थे जागे मिले हमको मुरारी हैं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

करें तपयोग बहुतेरे मिले दर्शन नहीं जिनका
वो हमारे साथ कुन्जनमें फिरे बनबन बिहारी है॥
ज्ञान अरु योग की चर्चा हमारे मन नहीं भावे
पिया रस प्रेमभक्तीका और सब बात खारी है॥
नहीं देखा है निर्गुणको न हमारे ध्यान में आवे
वो ब्रह्मानंद मोहनकी छबि दिलबीच धारी है॥

(गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरीसूरत ने हमारा दिल चुराया है॥टेक
बजाकर बंसरी सुन्दर सुनाकर गीत रागनके
रचाकर रास कुन्जनमें प्रेम हमकोलगाया है॥
छोड़ करके हमें रोती बसे वो द्वारका जाकर
खबर लीनी नहीं फिरके हमें दिलसेभुलाया है॥
हमारा हाल जाकरके सुनाना श्याम सुन्दरको
तुमारे दरसके कारण हमें बनबन फिराया है॥
न भावे भंग दुनियांके न बांछा योग करनेकी
वो ब्रह्मानंद माधवका रूप मनमें समाया है॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(गजल ताल धमाल)

ऊधोवोसांवरीसूरत नहींहमको दिखाते हो ।।टेक
जगतहित कारण हरिने धारी है देह मानुषकी
मनोहर मोहनी सूरत नजर में क्यों छिपाते हो ।।
कृष्णचंद्रके चरणों में लगाया ध्यान है हमने
कथा तुम रूपनिर्गुणकी हमें अबक्योंसुनाते हो।।
तरे संसारसागरको जपे जो नाम माधवका
कठिनजोयोगकासाधनहमें फिरक्योंसिखाते हो ।।
लगी दिलबीचमें हमरे लगन दिनरात दर्शनकी
वो ब्रह्मानंद किसकारण अबी देरी लगाते हो।।

(गजल ताल धमाल)

ऊधो वो सांवरीसूरत हमारे नैनका तारा ।।टेक
अगर हम जानती मोहन चले जायेंगे गोकुलसे
लगाती प्रेम ना उनसे छोड़घरकाज हम सारा ।।
तुमारी ज्ञानकी बातें असर करती नहीं दिलमें
बसा है कृष्ण हिरदेमें नहीं होता कबी न्यारा ।।
रहेंगे कंठमें जबतक हमारे प्राण देही में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

न भूलेगा कभी हमको मनोहररूप वो प्यारा ॥
करोतुमहीवोनिगुणकाध्यान अरु योगकासाधन
वो ब्रह्मानंद हमने तो हरि दिल बीचमें धारा ॥

(गजल ताल धमाल)

मिलादो श्यामसेऊधोतेरागुणहमसभी गावेंगी॥टे०
मुकुट सिर मोरपंखनका मकरकुण्डलहै कानों में
मनोहररूप मोहनका देख दिलको रिझावेंगी ॥
हमनको छोड़ गिरधारी गये जबसे नहीं आये
चरणमें शीश धरकरके फेर उनको मनावेंगी ॥
प्रेम हमसे लगा करके बिसारा नंदनंदनने
खता क्याहोगई हमसे अरज अपनी सुनावेंगी ॥
कबी फिर आय गोकुल में हमें दर्शन दिलावेंगे
वो ब्रह्मानंद हम दिलसे नहीं उनको भुलावेंगी ॥

(गजल ताल धमाल)

बिनाहरिनामके सुमरे गतिनहींहोयगीतेरी ॥ टेक
लगाले भस्म इस तनमें करो तप जाके वा बनमें
समझलो खूब यह मन में मिटेनहिंजन्मकी फेरी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

फिरो मथुरा वा काशी है सदा तीरथनिवासी है
रहो सबसे उदासी है छुटे नहिं आश मनकेरी ॥
करो ब्रत नेम अरु दाना फिरो जंगलमें मस्ताना
जो प्रभुका रूपनहिंजाना जलेनहिंकर्मकीढेरी ॥
जपो हरिनाम सुखकारी झूठ दुनियांकी है यारी
ब्रह्मानंद कालवशकारी करो मत भूल करदेरी

(गजल ताल धमाल)

करोहरिकाभजनप्यारे उमरियाबीतजाती है ॥ टेक
पूर्वशुभकर्म कर आया मनुजतन धरणिमें पाया
फिरे विषयों में भरमाया मौतनहिं याद आतीहै ॥
बालापन खेलमें खोया जोबनमें कामवश होया
बुढ़ापे खाट पर सोया आश मनको सताती है ॥
कुटुम्बपरिवार सुतदारा स्वपनसम देखजगसारा
मायाने जाल बिस्तारा नहीं यह संग जाती है ॥
जो हरिकेचरणचितलावे सो भवसागरकोतर जावे
ब्रह्मानंदमोक्षपद पावे वेदवाणी सुनाती है ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल ताल धमाल)

जतनकरआपनाप्यारेकर्मकीआशमतकीजे ॥ टेक
मनुजकी देह गुणकारी अकलपशुनोंसे है न्यारी
ईश्वरकी है दयाभारी फेरक्या मांगकर लीजे ॥
आलससे मूढ दुख पावे कर्मका दोष बतलावे
न गुणको सीखने जावे रातदिन शोचमें छीजे
कर्मके आसरे सोवे नीच उसकी दशा होवे
लोकपरलोकसुखखोवे जतन बिनकौनपरतीजे ॥
कराविधिसे जतन भाई सफल सबकाम हो जाई
बो ब्रह्मानंद सुखपाई धीरज मनको सदादीजे ॥

(गजल ताल धमाल)

लगालेप्रेमईश्वरसेअगरतु मोक्ष चाहता है ॥ टेक
रचा उसने जगत् सारा करे वो पालना सबकी
वहीमालिकहैदुनियाँका पितामाता विधाता है ॥
नहीं पातालके अंदर नहीं आकाशके ऊपर
सदा वो पास है तेरे कहां ढूंढनको जाता है ॥
कराजप नेम तप भारी रहा जाकर सदा बनमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बिनासतगुरुकीसंगत से नहींवोदिल में आता है ॥
पड़ेजी शरणमें उसकी छोड़दुनियांकीलालचको
वो ब्रह्मानंद निश्चयसे परम सुखधामपाता है ॥

(गजल ताल धमाल)

दिलादे नाथ अबदर्शनखड़ाहूँद्वारपे आकर ॥टेक
सुना जग बीचमें तेरा जबीसे नाम भवतारण
फिरा मैं पूछता तेरा खबरको जा बजा जाकर
नहीं लायक हूँ मैं गरचे तेरे दीदार पानेका
क्षमाकर दोष को मेरे दया दिल बीचमें लाकर
न मांगु भोग दुनियांके न वांछा मोक्षकी केवल
तेरे दरबारमें मुझको बनाले चरणका चाकर ॥
न जावुं द्वारका नगरी न मथुरा ढूंढने तुझको
वो ब्रह्मानंद घटघटमें दिखादे रूप करुणाकर ॥

(गजल ताल धमाल)

दिलादे भीखदर्शनकी प्रभुतेरा भिखारी हूँ ॥टेक
चलाकर दूर देशनसे तेरे दरबारमें आया
खड़ा हूं द्वारपे दिलमें तेरी आशाका धारी हूँ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

फिरा संसारचक्रमें भटकता रातदिन विरथा
विना दीदारके तेरे हमेशां मैं दुखारी हूँ ॥
तुंही माता पिता बंधु तुंही मेरा सहायक है ॥
भरा हूँ पाप दोषनसे क्षमा कर भूलको मेरी
वो ब्रह्मानंद सुन बिनती शरणमें मैंतुम्हारी हूँ ॥

(गजल ताल धमाल)

पिलादे प्रेमकाप्याला प्रभुदर्शनपियासी हूँ ॥टेक
छोड़कर भोग दुनियांके योगके पंथमें आई
तेरे दीदारकेकारण फिरूंबन बन उदासी हूँ
न जांनु ध्यानका धरना न करनांज्ञानचरचाका
नहीं तपयोग है केवल तेरे चरणोंकी दासी हूँ ॥
न देखो दोषको मेरे दयाकी फेर दृष्टिको
न दूजा आसरा मुझको तेरेदरकी निवासी हूँ ॥
कोई वैकुण्ठ वतलावे कोई कैलास पर्वतको
वो ब्रह्मानंद घटघटमें रूपकी मैं विलासी हूँ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(गजल ताल धमाल)

बिना सत्संगके मेरे नहीं दिलको करारीहै ॥टेक
जगतके बीचमें आया मनुषकी देहको पाकर
फसाया जाल मायाके याद प्रभुकी बिसारी है ॥
सकल संसारके अंदर नहीं हितकार है कोई
नजद फैलायकर देखा सभी मतलबकी यारी है ॥
किये जप नेम तप पूजन फिरा तीरथके धामोंमें
न जाना रूप ईश्वरका उमर सारी गुजारी है ॥
फटे अज्ञानका पड़दा कटे कर्मके बंधन
वो ब्रह्मानंद संतनका समागम मोक्षकारी है ॥

(गजल ताल धमाल)

मुझे क्या कामदुनियांसेबिरहमें मैं दिवाना हुँ ॥टे०
प्यारेकी खोजमें निशदिन फिरा जंगलपहाड़ों में
पता मुझको नहीं पाया बहुत दिनसे हिरानाहुँ ॥
किये जपनेम तप भारी उसे मिलनेकी लालचसे
मिलादर्शन नहीं मुझको गमीमें मैं समाना हुँ ॥
किसीको योगमनभावे किसीको ज्ञानकीचरचा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्रेमसागरके पानी में हमेशा मैं डुबाना हुँ ॥
वसी दिल बीचमें मेरे छबी दिलदारकी सुन्दर
वो ब्रह्मानंद तनमनकी सुधी सारी भुलानाहुँ ॥
(गजल ताल धमाल)
मुझे है काम ईश्वरसे जगत रूठेतो रूठनदे ॥टे०
कुटुम्बपरिवार सुतदारा मालधन लाजलोकनकी
हरिके भजन करनेमें अगर छूटे तो छूटनदे ॥
बैठ संगतमें संतनकी करूं कल्याण मैं अपना
लोक दुनियांके भोगोंमें मौजलूटें तो लूटनदे ॥
प्रभुके ध्यान करनेकी लगी दिलमें लगन मेरे
प्रीत संसार विषयोंसे अगर टूटे तो टूटनदे ॥
धरी सिर पापकी मटकी मेरे गुरुदेवने झटकी
वो ब्रह्मानंदने पटकी अगरु फूटे तो फूटनदे ॥
(गजल ताल धमाल)
बतादे मोक्षका मारग गुरु मैं शरणमें तेरी ॥टेक
जगतके बीचमें नाना किसमके पंथ हैं भारे
सुनाते हैं कथा अपनी भटकते हो गई देरी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

कोई मूरतके पूजनको बतावें होम करनेको
कोई तीरथके दर्शनको फिराते हैं सदा फेरी ॥
किताबें धर्मचर्चा की हजारों बांचकर देखीं
मिटा संशय नही मनका अकल जंजालमें घेरी ॥
सकल दुनियां में है पूरण सुना मैं रूप ईश्वरका
बो ब्रह्मानंद बिन देखे मिटे नही भरमना भेरी

(गजल ताल धमाल)

समझकरदेखलो प्यारे मोक्षकापंथहै न्यारा ॥टेक
यज्ञ तप दान करनेसे स्वर्गके धामको पावे
भोगकरभोग देवनके जमीपर होय अवतारा ॥
कर्मकी डोरसे बांधा कभी नीचे कभी ऊपर
भटकता जीव जूनोंमें फिरे नहिं होय निस्तारा ॥
करे पूजा फिरे तीरथ अगनमें रोम नित कीजे
बरत उपवास बहुतेरे नही हो ज्ञान उजियारा ॥
बैठ कर संत संगतमें विचारे रूप ईश्वरका
बो ब्रह्मानंदको पावे मिटे भवजाल संसारा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल ताल धमाल)

दिखादे रूपईश्वरका मुझेगुरुदेवकरुणाकर ॥टेक
कोई बैकुण्ठके ऊपर कोई कैलाशपर्वतमें
कोई सागरके अंदरमें बतावें शेषशय्यापर ॥
कोई दुर्गा गजाननको कहे जगदीश सूरजको
कोई सब सृष्टिका कर्ताचतुर्मुखदेव परमेश्वर ॥
धरें नित ध्यान योगीजन कोईनिर्गुणनिरंजनका
कोई मूरत पुजारी हैं कोई अगनीके हैं चाकर ॥
सकल संसारमें पूरण कहें वेदांतके वादी
वो ब्रह्मानंदसंशयको मिटाकर तार भवसागर ॥

(गजल ताल धमाल)

सुनोदिलकोलगाप्यारेरूपईश्वरकाअविनाशी ॥टे०
चलें जिसके सहारेसे सकल संसारके कारज
वो चेतन रूप ईश्वरका समझले विश्वपरकाशी
वही वैकुण्ठके ऊपर वही कैलाश पर्वतमें
वही सागरके अन्दरमें सदा पातालकावासी ॥
उसीका तेज सूरजमें चांदतारोंमें बिजलीमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वही सब देवतारूपी सदा निर्गुणनिराभासी ॥
बदनके बीचमें तेरे निरंतर जोत है उनकी
वो ब्रह्मानंद सुरतीको उलटकरदेखसुखराशी ॥

(गजल ताल धमाल)

दिखादेयारअब मुखड़ाघुंगटमें क्योंछिपाया है ॥टे.
हुसन तेरेका है सानी न दूजा बीच दुनियां के
करुं क्या मैं सिफततेरी चांद मनमें लजाया हैं ॥
नजारा प्रेमका भरके लगाया हैं जिगर मेरे
जुदाई का अभी पढ़दा बीचमें क्यों गिराया है ॥
तेरे मिलने की खातिरको हजारों लोक तरसावें
खुलेकिस्मत बड़ी जिसकी वही दीदारपाया है ॥
नहीं है आशइसतनकी न धनकी लालसामुझको
वो ब्रह्मानंद दे दर्शन येही दिलमें समाया है ॥

(गजल ताल धमाल)

भरोसा है मुझे तेरा तुंही मेरा सहायक है ॥टेक
सकल दुनियांके अन्दर में अखंडित राज्य हैतेरा
चराचर विश्वका मालिक तुंही सबगुणकेलायक है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जगत में जीव हैं जेते तेरे आधीनमें सारे
सबी नरदेवदैत्यनका तुंही सिरताजनायक है ॥
धार विश्वासको दिलमें शरणमें जो पड़े तेरी
करे सब कामनापूरण भोगअरुमोक्षदायक है ॥
नहीं है शानका तेरी जगतमें दूसरा कोई
वो ब्रह्मानंद सबजगका तुंहीकारणविधायक है ॥

(गजल ताल धमाल

मुसाफिर जगते रहना नगरमेंचोर आते हैं ॥टेक
संभालो माल अपनेको बाँधकर धर सिराने में
जरासी नींद गफलता में झपटगठड़ी उठाते हैं ॥
कपटका है यहाँ चलना सबी व्यापार दिनराती
दिखाकर सूरत सुन्दर जालमें वो फँसाते हैं ॥
कबी किसकानहींकरना भरोसा इसजगादिलमें
लगाकर प्रीत मतलबसे फेर पलमें हटाते हैं ॥
ठिकाना है नही कायम किसीका इसजगादिलमें
वो ब्रह्मानंद दिनदिन में सबीचलचलके जाते हैं॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(गजल ताल धमाल)

फकीरीमेंमजाजिसकोअमीरीक्याविचारी है ॥टेक
तजे सब काम दुनियांके फिकर घरबारके छूटे
सदा एकांतमें वासा याद प्रभुकी पियारी है।
नहीं नौकर किसीजनके न दिलमें लालसाधनकी
सबूरी धारकर मनमें फिरे जंगल बिहारी है ॥
मिला सत्संग संतनका चले नित ज्ञानकी चरचा
बिछाना रूप अपनेको द्वैत सब दूर टारी है ॥
सबी जग जीनसे प्रीति बराबर मान अपमाना
वो ब्रह्मानंद पूरणमें मगन दिनरैन सारी है।

(गजल ताल धमाल)

नवीजयांवैद्यक्यादेखेतुझेदिलकी बिमारी है ।ठेक
कबी कफरोग बतलावे कबी तासीर गरमीकी
जिगरका हाल तु मेरा नही जाने अनारी है ॥
सनम की मोहनी सूरत बसी दिल बीचमें मेरे
न मननें चैन है तनकी खबर सारी बिसारी है ॥
असर करती नही कोई दवाई कीमिया तेरी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

बिना दीदार दारूके मिटे नही बेकारी है।
अगर दिलदार को मेरे मिलावे तुं कवी मुझसे
वो ब्रह्मानंद गुण तेरा करुं मैं यादगारी है ॥

(गजल ताल धमाल)

संदेसा आ गया यमका
चलनकी कर तियारी है ॥ टेक ॥
बाल सिरके हुये धोले सफेदी आँख पर छाई
श्रवणसे सुन पड़े ऊंचा दांतहिलान' भी जारीहै१
कमर सब होगई कुबड़ी चले लकड़ी सहारे से
गई सब देहकी ताकत लगी तनमें बिमारी है ॥२
छुटी सब प्रीत तिरियाकी पुत्र सब होगये न्यारे
बने सब मित्र मतलबकेझूठ लोकनकी यारी है॥३
करो जगदीशका सुमरण भरोसा राखके मनमें
वो ब्रह्मानंद है तेरा एकही सहायकारी है ॥४॥

(गजल ताल ३ तर्ज—तिलदार यार मेरे)

हरिको सुमर पिआरे उमरा बिहा रही है
दिनदिनघड़ीघड़ीमें छिनछिनमें जा रेही है ॥टेक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

दीपककी जोत आवे नदियोंका नीर धावे
जाती नजर न आवे चंचल समा रही है ॥१॥
पिछली भली कमाई मानुषकी देह पाई
प्रभु हेत नालगाई बिरथा गमा रही है ॥२॥
घर मालमीत नारी दुनियाँकी मौज भारी
होवे पलकमें न्यारी दिलको फसा रही है ॥३॥
क्या नींदमें पड़ा है सिर काल आ खड़ा है
ब्रह्मानंद दिन चढ़ा है रजनी बिता रही है ॥४॥

(गजल ताल ३)

क्या भूलिया दिवाने दुनियांमें सार नाही
दिन चारका तमाशा आखिरकरार नाहीं ॥टेक॥
राजा वजीर रानी पंडित सुधीर ज्ञानी
सब होगये हैं फानी जिनका शुमार नाहीं ॥१॥
सूरज व चांद तारे सागर पहाड़ भारे
होवगे नाश सारे तनका अधार नाहीं ॥२॥
दुनिया से होय न्यारा सतसंग कर पियारा
सुन ज्ञानका विचारा नर जन्म हार नाहीं ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भवसिंधु नीर भारी हरिनाम पार तारी
ब्रह्मानंद मोक्षकारी दिलसे बिसार नाहीं ॥४॥

(गजल ताल ३)

गाफिल तुं सोच मनमें हरिनाम क्यों बिसारा
सुनता नहीं बजेहै सिर काल का नगारा ॥टेक॥
जोवन भरी है नारी दिलको लगे पियारी
जब मौतकी तियारी तुझसे करे किनारा ॥१॥
घर माल धन खजाना संगमें कोई न जाना
क्यों देख के लुभाना सब झूठ है पसारा ॥२॥
सुन्दर है देह तेरी होवे भसमकी ढेरी
पल की लगे न देरी बिरथा करे बिचारा ॥३॥
माया के जालमांही मूरख रहा फसाई
ब्रह्मानंद मोक्षपाई हरिचरणको सहारा ॥४॥

(गजल ताल ३)

ईश्वर मैं दास तेरो मुझको नहीं बिसारो
भवसिंधुमें पड़ा हूँ प्रभु बेग पार तारो ॥टेक॥
तुमरी अपार माया जिन खेल यह रचाया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मनको मेरो भुलाया नहीं ध्यान है तुमारो ॥१॥
मद लोभ मोह यारी दुश्मन बड़े हैं भारी
करते हैं मारमारी प्रभु लीजिये सहारो ॥२॥
अंजलिका नीर जावे उमरा सभी विहावे
फिरके गई न आवे पलका नहीं अधारो ॥३॥
सुत मात तात चेरा कोई नहीं है मेरा
ब्रह्मानंद बाल तेरा करके दया निहारो ॥४॥

(गजल ताल ३)

जगदीश ईश प्यारे सुन बीनती हमारी
तुमरी शरणमें आया प्रभु लीजिये उबारी ॥टेक
तुमने जगत बनाया सब साजसे सजाया
किसने न भेद पाया क्या शक्ति है तुम्हारी ॥१॥
हम जीव सुत तुमारा तुमहो पिता हमारा
सबका तुंही सहारा सुखरूप निर्विकारी ॥२॥
सब पाप दोष टारो हमरी मती सुधारो
सुखशांतिको वधारो हमपे दयाबिचारी ॥३॥
हमरे कसूर भारे दिलसे विसार सारे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ब्रह्मानंद दे हमारे भवबन्धको निवारी ॥४॥

(गजल ताल ३)

जगदीश ईश प्यारे हिरदेमें मेरे आजा
तेरा स्वरूप पूरण मुझको प्रभु दिखाजा ॥टेक॥
तुझ नाम निर्विकारी सब पाप दोषहारी
तुमरी छवी पियारी दिलमें मेरे विठा जा ॥१॥
हमरे कसूर भारे दिलसे बिसार सारे
तुं है दयानिधान सब विश्वमें समाना
नित वेदगुण बखाना दर्शन मुझे दिखाजा ॥२॥
गुणहीन दीन भारी प्रभु मैं शरण तुम्हारी
मुझे लीजिये उवारी भवजालसे छुड़ाजा ॥३॥
करके दया निहारो प्रभु दास हुँ तुमारो
ब्रह्मानंद बंध टारो निजरूपमें मिला जा ॥४॥

(गजल ताल ३)

जगदीश मैं तुमारी कैसे करूं बड़ाई
तेरी अपार माया किससे लखी न जाई ॥टेक॥
सब वेद ग्रंथ भारे मुनिराज सिद्ध सारे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

करकर विचार हारे आजहुँ न पार पाई ॥१॥
चौदह भुवन रचनार सब साजसे सजाकर
फिर जीवगण बसाकर लीला अजब बनाई ॥२
तुझ रूप है अनाशी चेतन आनंदराशी
सब विश्वमें प्रकाशी सब जां रहा समाई ॥३॥
तुझको जो जीव ध्यावे सब पाप दोष जावे
ब्रह्मानंद मोक्ष पावे भवबंधको मिटाई ॥४॥

(गजल ताल ३)

ईश्वर तेरी बड़ाई मुझसे कही न जावे
लीला अनंत भारी प्रभु कौन पार पावे ॥टेक
गुणसिंधु तुं अपारा सब विश्वका अधारा
सबमें सबीसे न्यारा नित वेदवाक्य गावे ॥१॥
भूमि अकाश पानी नर देव दैत्य प्राणी
रचना तेरी सुहानी तुझ शक्तिको जनावे ॥२॥
जग पाप पुण्य दोई तुझसे छिपा न कोइ
पावे है मोक्ष सोई तुझ शरणमें जो आवे ॥३॥
सब झूठ जग पसारा तुम नाम सत्य प्यारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ब्रह्मानंद बारबारा दिलसे नहीं भुलावे ॥४॥

(गजल ताल ३)

ईश्वर तुं है दयालु दुख दूर कर हमारा
तेरी शरण में आया प्रभु लीजिये सहारा ॥टेक
तुं है पिता वा माता सब विश्वका विधाता
तुझसा नहीं है दाता तेरा सभी पसारा ॥१॥
भूमि आकाश तारे रवि चंद सिंधुभारे
तेरे हुकममें सारे सबका तुंही अधारा ॥२॥
जगचक्रमें चढा हुं भवसिंधुमें पड़ा हुं
दर पे तेरे खड़ा हुं अब दे मुझे दिदारा ॥३॥
अपनी शरण में लीजे सब दोष दूर कीजे
ब्रह्मानंद दान दीजे तुझ नाम निर्विकारा ॥४॥

(गजल ताल ३)

ईश्वर तुं दीनबंधु हम दास हैं तुमारे
अपनी दया नजरसे सब दोष हर हमारे ॥टेक
हम बाल हैं अजाने तुझ रूपको न जाने
पूरण सबी ठिकाने कहते हैं बेद सारे ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तुं है चरा अचरमें जंगल गिरि नगरमें
सब जीव नारनरमें तुमरे सबी सहारे ॥२॥
भवसिंधु है अपारा बहता हुं बीच धारा
नहीं दूसरा सहारा प्रभु कीजिये किनारे ॥३॥
मायाके जालमांही हम तो रहे फसाई
ब्रह्मानंद ले छुड़ाई करुणानिधान प्यारे ॥४॥

(गजल ताल ३)

ईश्वर को जान बंदे मालिक तेरा वही है
करके तुं याद दिलसे दरजांयें बो सहीहै ॥टेक
भूमी अगन पवनमें सागर पहाड़ बनमें
उसकी सबी भुवनमें छाया समारही है ॥१॥
उसने तुझे बनाया जग खेल है दिखाया
तुं क्यों फिर भुलाया उमरा बिता रही है ॥२॥
विषयोंकी छोड़ आशा सब झूठ है तमाशा
दिनचारका दिलासा माया फसा रही है ॥३॥
दुनियांसे दिल हटाले प्रभु ध्यानमें लगाले
ब्रह्मानंद मोक्ष पाले तनका पता नहीं है ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल ताल ३)

नजरों से देख प्यारे ईश्वर है पास तेरे
क्या ढूँढता है बनमें तनमें कभी न हारे ॥टेक
पूरबको कोई जावे पश्चिम दिशाको धावे
प्रभुका न भेद पावे बिरथा फिरे है फेरे ॥१॥
भूतल आकाशमांही उनका मुकाम नाही
दुनियां रहीं भुलाई जाने नहीं है मेरे ॥२॥
वो हैं सभी ठिकाने घटघटकी बात जाने
उसको जो दूर माने वो मूढ हैं घनेरे ॥३॥
जगमें जगा न कोई ईश्वर जहां न होई
ब्रह्मानंद जानसोई सुन सत्य वाक्य मेरे ॥४॥

(गजल ताल ३)

नजरोंसे देख प्यारे यह क्या दिखा रहा है
सब चीज सब जगामें ईश्वर समारहा है ॥टेक॥
प्रभनें जभी विचारा जगका हुवा पसारा
चौदें भुवन नियारा मनसे बना रहा है ॥१॥
कहीं नर बना है नारी कहीं देव दैत्य भारी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पशु पक्षी रूपधारी बनबनके आरहा है ॥२॥
भूमी वही अगन है पानी वही पवन है
सूरज वही गगन है निर्गुण गुणा रहा है ॥३॥
तज भेदभाव मनमें बनमें वही है तनमें
ब्रह्मानंद क्यों स्वप्नमें रचना रचा रहा है ॥४॥

(गजल ताल ३)

नजरोंसे देख प्यारे क्या रूप है तुमारा
अपनेको भूल तनमें बाहिर फिरे गवारा ॥ टेक
करमें कंगण छिपाव ढूँढनको दूर जावे
फिरके समीप पाव मनमें करो विचारा ॥१॥
मृगनाभिमें सुगंधी सूंघे वो घास गंदी
दुनियां सबी है अंधी समझे नहीं इशारा ॥२॥
तिम दूधके मथनसे मिलता है घी जतनसे
तिम ध्यानकी लगनसे परब्रह्मले निहारा ॥३॥
जड़ जान देह भारी क्षणभंग दुःखकारी
ब्रह्मानंद निर्विकारी चेतन स्वरूपन्यारा ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल ताल ३

ब्रजराज आज प्यारे दर्शन दियो मुरारी
रस प्रेमका लगाके हमरी सुधी बिसारी ॥ टेक
सूरत तेरी कन्हाई नैननमें है समाई
हमसे सहा न जाई तुमरा वियोग भारी ॥१॥
तेरे दरसकी प्यासी बनबन फिरे उदासी
चरणोंकी जानदासी मिलजा हमें बिहारी ॥२॥
बंसीकी धुन सुनादे फिर रास को रचादे
मुखचंदको दिखादे सुन बीनती हमारी ॥३॥
घर माल जान प्यारी तुझपे सबी है वारी
ब्रह्मानंद मनमें धारी मोहन छबी तुमारी ॥३॥

(गजल तल ३)

ब्रजराज आज प्यारे गलियोंमे मेरी आना
तेरी छबी मनोहर मुझको हरि दिखाना ॥ टेक
सिरे मोर मुकुट राजे बनमाल गल बिराजे
नूपुर चरणमें बाजे करमें कंगण सुहाना ॥१॥
कुंडल श्रवण लगाकर बंशी अधर बजाकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तन पीतपट धराकर - कटिमेखला सजाना ॥२॥
मेरी अर्जका प्यारे सुन नंदके दुलारे
इकवार तो हमारे तनकी तपत बुझाना ॥३॥
तेरे दरसकी प्यासा अब ना करो निराशा
ब्रह्मानंद मेरी आशा करके दया पुराना ॥४॥

(गजल ताल ३)

क्या सो रहा मुसाफिर बीती है रैन सारी
अब जागके चलनका करले सभी तियारी ॥ टेक
तुझको है दूर जाना नहिं पास समाना
आगे नहीं ठिकाना होवे बड़ा खुआरी ॥१॥
पूंजी सभी गमाई कुछ ना करी कमाई
क्याले वतनमें जाई करजा किया है भारी ॥२॥
वशमें ठगोंके आया दृढ जालमें फसाया
परदेश दिल रमाया घर की सुधी बिसारी ॥३
उठ चल न देर काजे संगम सभी न लाजे
ब्रह्मानंद कालबाजे मत नींद कर पियारी ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल ताल ३)

मिलना मुझे पियारे क्यों देरियां लगाई
जलवा दिखाके अपना किस जांगयेछिपाई ॥ टेक
खाना नहीं है पानी दिलको बड़ी हैरानी
खाना नहीं पानी दिलको बड़ी हैरानी
फिरती हुँ मैं दिवानी दिन रैन चैन नाहीं ॥१॥
कर प्रेमका इशारा दिल लेलिया हमारा
अब क्यों मुझे बिसारा सूरत नहीं दिखाई ॥२॥
विरहेकी आग भारी तनमन दिया है जारी
तुमरी छवी पियारी मनमें रही समाई ॥३॥
कर माफ भूल मेरी दासनकी दास तेरी
ब्रह्मानंद कर न देरी चरणों में ले लगाई ॥४॥

दिल ले लिया है मेरा वो नंद के दुलारे
पनियां भरन गई थी जमुना नदी किनारे ॥ टेक
सिरपे मुकुट जड़ाया कानों कुण्डल पड़ा था
पनघटनिकट खड़ाथा कर प्रेम के इशारे ॥१॥
गलबीच फूलमाला लोचन परम रसाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

कटिमेखला विशाला तन पीनवसन धारे ॥२॥
वंशी अधर लगाई मधुरी धुनी सुनाई
तनकी खबर भुलाई घर काज सब विसारे ॥३॥
सुन्दर छबी मोहनकी दिलमें बसी सोहनकी
ब्रह्मानंद मेरे मनकी आशा पुरानहारे ॥४॥

(गजल ताल ३)

सुनरी सखी मोहनकी वो वंसरी पियारी
जमुनाके तीर वनमें गायन करे मुरारी ॥टेक॥
जबसे खबर सुनाई तनकी खबर भुलाई
मनमें बसे कन्हाई नहिं चैन रैन सारी ॥१॥
मीठी स्वरोंसे गावे दिलको मेरे सुहावे
कोई आनके मिलावे मोहे सांवरो विहारी ॥२॥
तज काज लाज तनमें गोपी गई हैं वनमें
हम रहगई भवनमें किस्मत बुरी हमारी ॥३॥
मेरे नैनों का तारा वन्सी बजाने हारा
ब्रह्मानंद दे दिदारा दासी हुँ मैं तुमारी ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल ताल ३)

मन क्या भुला रहा है दुनियांकी मौजमांही
करके विचार देखो कछु सार वस्तु नाहीं ॥टेक॥
मायाका जाल भारी पुतली बनी है नारी
मत भूल देख प्यारी सबको रही फसाई ॥१॥
जोबन बहार तनकी महमान चार दिनकी
जिम रोनशी स्वप्नकी सब वेग बीत जाई ॥२॥
धनमाल मीत प्यारे कोई संग ना सिधारे
जब काल आय मारे सबसे करे जुदाई ॥३॥
हरिनामको सुमरले कुछ काम नेक करले
ब्रह्मानंद ध्यान धरले ईश्वर सदा सहाई ॥४॥

(गजल ताल ३)

शंकर तेरी जटा में बहती है गंगधारा
कालीघटा के अंदर जिम दामिनी उजारा ॥टेक॥
गल मुण्डमाल राजे शशि भाल में विराजे
डमरू निदान बाजे करमें त्रिशूल भारा ॥१॥
दृग तीन तेजराशी कटिबंध नागफांसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

गिरिजाहै संग दासी सब विश्वके अधारा ॥२॥
मृगचर्म बसनधारी वृषराजपे सवारी
निजभक्त दुःखहारी कैलाश में विहारा ॥३॥
शिवनाम जो उचारे सब पाप दोष टारे
ब्रह्मानंद ना विसारे भवसिंधु पार तारा ॥४॥

(गजल कवाली तर्ज—'प्रीत का वादा करके सनम')

नाम हरीका लीना नहीं तैंने
मूरख काम निकाम किया ॥ टेक ॥
बालपणो हँस खेलनमें अरु जोवन कामिनी संग
गया । बूढ़े हुये तन छीन भया तव
रोग ने आय मुकाम किया ॥१॥
तेरे लिए परमेश्वरने सब वस्तु रचीं बहु
भांतनकी । याद किया न कबी उसको
तैंने खाय के माल हराम किया ॥२॥
मानुष जन्म मिला तुझको यह मोक्ष दुवार
खुला जगमें । घर बारके कार विहारणमें
तैंने भूलके नाश तमाम किया ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

काल विताय चला सबही अब तो कर सोच
जरा मनमें । ब्रह्मानंद बिना प्रभुके सुमरे
तैंने नाम तेरा बदनाम किया ॥४॥

(गजल कवाली)

नाम लिया हरिका जिसने
तिन औरका नाम लिया न लिया ॥टेक॥
पशु पक्षी सबी जग जीवनको जिसने अपने
सम जान सदा । सबका परिपालन नित्य किया
तिन विप्रन दान दिया न दिया ॥१॥
जिनके घरमें प्रभुकी चर्चा नित होवत है
दिनरात सदा । सतसंगकथा मृत पान किया
तिन तीरथ नीर पिया न पिया ॥२॥
जिन काम किये परमारथके तनसे मनसे
धनसे करके । जग अंदर कीरत छाय रही
दिन चार विशेष जिया न जिया ॥३॥
गुरुके उपदेश समागमसे जिसने अपने
घट भीतर में ब्रह्मानंद स्वरूपको जान लिया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तिन सायन योग किया न किया ॥४॥

(गजल कवाली)

दीनदयाल दया करके
भवसागरसे कर पार मुझे ॥ टेक ॥
नीर अपार न तीर दिसे किम धीर धरुं
जब मैं मनमें । मेरी नाव डुबाय रही मनमें
शरणागत जानके तार मुझे ॥ १ ॥
ग्राह वसे बलवान बड़े जल घेर पड़े
तुंही एक बचावनहार मुझे ॥ २ ॥
छूट गया सब साथ मेरा कुछ हाथ में जोर
रहा भी नहीं । अब नाथ न देर लगाय जरा
निज बांह पसार उबार मुझे ॥ ३ ॥
तेरा नाम जहाज बड़ा जगमें सब वेद पुराण
बतावत हैं । ब्रह्मानंद जपुं दिन रात सदा
प्रभु कीजिये पार किनार मुझे ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल कवाली)

ध्यानका वादा करके सजन तैने
ध्यान लगाना छोड़ दिया ॥ टेक ॥
शीश तले पग ऊपर थे जब मातके पेट में
लेट रहा । तब ईश्वरसे इकरार किया
तैनें भूलके वो सब तोड़ दिया ॥ १ ॥
देख लुभाय गया जगकी रचना सब सुन्दर
साज बनी । उस सर्जनहारकी सार नहीं
तैनें भोगनमें मन जोड़ दिया ॥ २ ॥
घर काजन बीच फसाय रहा दिन रात न
मौतकी याद रही । उमरा सब बीतत जाय
चली तैनें क्यों प्रभुसे मुख मोड़ दिया ॥ ३ ॥
बारहि बार फिरा जग भीतर जीवनकी
सब जूननमें । ब्रह्मानंद भजा भगवंत नहीं
भवसागरमें सिर बोड़ दिया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

विश्वपति जगदीश्वर तुं शरणागत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पालन कारण है ॥ टेक ॥
तेरी रची सब है रचना गिरि सागर
सूरज चांद मही । सब जीव तेरा परिवार
बसा तुंही एक चराचरधारण ॥ १ ॥
सब भीतर बाहिरमें जग में परिपूरण तुं
सुखरूप सदा । नहिं पागरलोक पिछान
सकें तेरा नाम सभी दुःख हारण है ॥ २ ॥
करुणानिधि दीनदयाल सदा प्रतिपाल
करे सब जीवनकी । तुझ ध्यान धरे नर
जो मनमें पलमें भवसागर तारण है ॥ ३ ॥
मुझदोष अपार निहार नहीं निजदास विचार
करो करुणा । ब्रह्मानंद पड़ा तुझ चरणनमें
प्रभु कीजिये बंध निवारण है ॥ ४ ॥

(गजल कव्वाली)

हे री सखी बतलाय मुझे
पियाके मन भावनकी बतियां ॥ १ ॥
गुणहीन मलीन शरीर मेरा कछु हार सिंगार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

किया भी नहीं । नहिं जानुं मैं प्रेमकी बात
कोई मेरी कांपत है डरसे छतियां ॥ १ ॥
पिया अंदर महल बिराज रहे घरकाजनमें
अटकाय रही । नहिं एक घड़ी पल संग
किया बिरथा सब बीत गई रतियां ॥ २ ॥
पिया सोवत ऊंची अटारिनमें जहां जीव
परिंदकी गंम नहीं । किस मारग होयके जाय
मिलुं किसभांत बनाय लिखूं पतियां ॥ ३ ॥
निज स्वारथका संसार सभी किससे अब
प्रीत करूं मनमें । ब्रह्मानंद पियाहितकार
मेरा जग भीतर और नहीं गतियां ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

हे री सखी चल ले चल तुं
अब देश पियाका दिखाय मुझे ॥ टेक ॥
ढूंडत ढूंडत ढूंड फिरी सब जंगल झाड़
पहाड़नमें कोई ऐसा न राह नजीर मिला
पियाके ढिंग देत पुगाय मुझे ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

उस देशपे मैं बलिहार गई जहाँ मोर पिया
नित वास करे । सिर धूल धरुं उसके पगकी
कोई जायके आज पिलाय मुझे ॥२॥
मछली बिन नीर न धीर धरे जिम चातक
मेघ निहारत है । अब तो पिया दर्शन दे
अपना किस काज रहे तरसाय मुझे ॥३॥
पियाकी छबि सुन्दर देख सखी जहां सूरज
चांद लजाय रहे । ब्रह्मानंद मैं दामन गीर
तेरी पिया चरणनमें लिपटाय मुझे ॥४॥

(गजल कवाली)

दे दे पिया दर्शन तो मुझे
मैं तो शरन तुमारी आन पड़ी ॥टेक॥
मात पिता घर बार तजा तेरे काज मेरी सब
लाज गई । मैं तो छोड़के आशा सबी जगकी
तेरे द्वारपे ध्यान लगाय खड़ी ॥१॥
सब जोबनके दिन बीत गये अब मैं मनमें
पछताय रही । करुणा कर अंक लगाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मुझे तेरे बिना नहीं चैन घड़ी ॥२॥
मेरे जैसी अनेक खड़ी दर पे तेरे दर्शनको
तरसाय रही। तेरी जानके दासन दास
मुझे मेरी पूरण कीजिये आश बड़ी ॥३॥
कर माफ कसूर मेरे सबही अब देख दयाकी
नजरसे मुझे। ब्रह्मानंद तेरी सुख धाम छवी
प्रभु नित्य मेरे दिल बीच जड़ी ॥४॥

(गजल कवाली)

आज सखी सतसंगतमें
मिलके हरिके गुणगान करो ॥ टेक ॥
कलिमें हरिनाम समान बड़ो कोई और
उपाय नहीं जगमें। सब पाप निवारण
कारण है भवतारण है मनमें सुमरो ॥१॥
बिन संतसमागम ज्ञान नहीं बिन ज्ञान न
मोक्ष मिले कबही। करले तप तीरथ दान
घने चहुं धामन बीच भले विचरो ॥२॥
विश्वचराचरमें परिपूरण चेतन ब्रह्म स्वरूप

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सदा। घट भीतर ज्ञान पिछान सही मन
बीच निरंतर ध्यान धरो ॥३॥
सब संशय दूर करावत है निजरूप लखावत
है तनमें। ब्रह्मानंद सुनो गुरु ज्ञान सदा
भवसागर दुस्तर पार तरो ॥४॥

(गजल कव्वाली)

ऐसी करी गुरुदेव दया मेरा
मोह का बंधन तोड़ दिया ॥ टेक ॥
दौड़ रहा दिन रात सदा जगके सब कार
बिरहारणमें। स्वप्नें सम विश्व दिखाय मुझे
मेरे चंचल चित्तको मोड़ दिया ॥१॥
कोई शेष गणेश महेश रटे कोई पूजत पीर
पगंबरको। सब पंथ गरथ छुड़ा करके
इक ईश्वरमें मन जोड़ दिया ॥२॥
कोई ढूंढत है मथुरा नगरी कोई जाय
बनारस वास करे। जब व्यापक रूप पिछान
लया सब धर्मका भंडा फोड़ दिया ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कौन करूं गुरु देवकी भेद न वस्तु दिसे
तिहुँ लोकनमें । ब्रह्मानंद समान न होय
कबी धन माणिक लाख करोड़ दिया ॥४॥

(गजल कवाली)

जाग मुसाफिर देख जरा
वो तो कूचकी नौबत बाज रही ॥ टेक॥
सोवत सोवत बीत गई सब रात तुझे
परभात भई । सब संगके साथी तो लाद
गये तेरे नैनन नींद विराज रही ॥१॥
कोई आज गया कोई काल गया कोई जावन
काज तियार खड़ा । नहिं कायम कोई मुकाम
यहां चिरकालसे येहि रिवाज रही ॥२॥
इस देशमें चोर चकोर घने निज माल की
राख संभाल सदा । बहुते हुशियार लुटाय
गये नहीं कोई की साबत लाज रही ॥३॥
अब तो तज आलसको मनसे कर संग
समान तियार सबी । ब्रह्मानन्द न देर लगाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ज़रा बिजली सिर ऊपर गाज रही ॥ ४ ॥

(गजल कव्वाली)

मान कही मन मूरख तुं
अब तो भज नाम निरंजनका ॥ टेक ॥
जून अनेकन में फिरते यह मानुष
देह मिली। करले परमारथ काम कछु
तज लालच तुं धन संचनका ॥ १ ॥
पेटहिमें जब पेट भरा अब पेटके काज
कहां भटके। सब विश्वको नित्य भरे प्रभु
जो सोई पालनहार तेरे तनका ॥ २ ॥
मात पिता सुत दार सहोदर माल मकान
समान सबी। कोई वस्तु नहीं थिर है जगमें
बिरथा ममता मद जोबनका ॥ ३ ॥
काल कराल फिरे सिरपे जिम बाज चिड़ी
पर धावत है। ब्रह्मानंद बिचार निहार जरा
कर ध्यान सदा भय भंजनका ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल कवाली)

देखो सखी विंदरावन में
वो तो बंसरी श्याम बजावत है ॥ टेक ॥
धर्मके पालन कारणसे हरि ने ब्रजमें
अवतार लिया। मिल ग्वालन बालनके
संगमें जमुनातट धेनु चरावत है ॥ १ ॥
सिर मोरके पंखकी टोप धरे मकराकृत
कुंडल काननमें। गलमेंबनमाल बिराज रही
कटिमें पट पीत सुहावत है ॥ २ ॥
बन कुंजनमें हरि रास रची सखियां संगमें
मिल गान करे। भाग्य बड़ेब्रज गोपिनके
हरि हाथ मिलाय न चावत है ॥ ३ ॥
मधुरी मुरलीधुनको सुनके सब देव समाज
जुड़े नभमें। ब्रह्मानंद निहार छबी प्रभुकी
अपने मनमें सुख पावत है ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

प्रीतकी रीत न जाने सखी वो तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

नंदको बालक सांवरिया ॥ टेक ॥
जमुनातट जायके गाय चराय बनायके
बंसरी गावत है। सखियां संग केलि कलोल
करे दधि लूटन खेलत फागरिया ॥ १ ॥
संग लेकर ग्वालन बाल घने मग रोकत
है ब्रजनारिनको। तनसे चुनरी पटको
झटके सिरसे पटके जल गागरिया ॥ २ ॥
विंद्रावनकी घन कुंजनमें मिल गोपिनके
संग रास करे। पगनु पुर की धुन बाज रही
नित नाचत है नट नागरिया ॥ ३ ॥
निज भक्तनके हितकार प्रभु ब्रज मण्डल
बीच विहार करे। ब्रह्मानंद न रूपको जान
सकें बहु बात बनावत बावरिया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

पूरण ब्रह्म सनातन तुं महादेव
सदाशिव शंकर है ॥ टेक ॥
अंग विभूत विराज रहि नित संग बसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

गिरिराज सुता । सिर ऊपर गंग तरंग चखे
गल बीच भुजंग विषंकर है ॥ १ ॥
चंद्रकला शुभमस्तकमें दृग तीन मनोहर
जूट जठा । कटिमें मृगचर्म सुहाय रहा
कर बीच त्रिशुल भयंकर है ॥ २ ॥
कैलासके बीच निवास करे गणयूथ निरंतर
साथ रहें । मुनि ध्यान धरें मन बीच सदा
सुरवृंद सभी पदकिंकर है ॥ ३ ॥
गुणखान विमोक्ष निधान सदा शरणागत
जान दया करके । ब्रह्मानंद करो प्रभु दान
मुझे तेरा नाम अपार सुखाकर है ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

प्रीतम प्रीत लगा तुझसें न भुलाना
मुझे मिल जाना सही ॥ टेक ॥
तेरे लिए सब देश दिगंतर छान विरान
हिरान हुआ । अब जानके दासन दास मुझे
तेरा खास मकान बताना सही ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

घरके सब काम तमाम तजे विन दाम
गुलाम तेरे दरका । बिन तेरे मुझे परतीत
नहीं अब रीतसें प्रीत निभाना सही ॥ २ ॥
तेरी सूरत मोहनी मूरत है क्या जरूरत है
अब देर करी । तेरे दर्शनकी दिल प्यास
बड़ी मेरो आशको आज पुराना सही ॥ ३ ॥
तेरे द्वारपे अर्ज गुजार खड़ा इकवार निहार
जरा मुझको । ब्रह्मानंद सदा सुखकंद तेरा
मुखचंद मुझे दिखलाना सही ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

आशक मस्त फकीर हुआ जब क्या
दिलगीरपणा मनमें ॥ टेक ॥
कोई पूजत फूलन मालनसे सब अंग सुगंध
लगावत हैं । कोई लोक निरादर कार करें
मग धूल उड़ावत हैं तनमें ॥ १ ॥
कोई काल मनोहर थालनमें रसदायक
मिष्ठ पदारथ हैं । किस रोज जला सुकड़ा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

टुकड़ा मिल जाय चबीना भोजनमें ॥ २ ॥
कबी ओढ़त शाल दुशालनको सुख सोवत
महल अटारिनमें । कबी चीर फटी तनकी
गुदड़ी नित लोटत जंगल वा वनमें ॥ ३ ॥
सब द्वैतके भावको दूर किया परब्रह्म सबी
घट पूरण है । ब्रह्मानंद न वैर न प्रीत कही
जगमें विचरे सम दर्शनमें ॥ ४ ॥

(गजल कव्वाली)

पूरण प्रेम लगा दिलमें जब नेमका
बंधन छूट गया ॥ टेक ॥
कोई पंडित लोक बतावत हैं समझावत हैं
जग रीतनको । जब प्रीतमसें दृढ़ प्रीत भई
सब रीत का बंधन छूट गया ॥ १ ॥
कोई तीरथ पर्सन जावत हैं कोई मंदिरमें ॥
निज दर्शनको । घट भीतर देव दिदार हुआ
तब बाहिरसें मन ऊठ गया ॥ २ ॥
कोई जीव कहें कोई ईश कहें कोई गावत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्म निरंजनको । जब अंदर बाहिर एक
हुआ सब द्वैतका पड़दा फूट गया ॥ ३ ॥
सोई एक अनेक स्वरूप बना परिपूर्ण है
जलमें थलमें । ब्रह्मानंद करी गुरुदेव दया
भवसागरका भय ऊठ गया ॥ ४ ॥

(गजल कवाली)

कामिल काम कमाल किया तैने
ख्यालमें खेल बनाय दिया ॥ टेक ॥
नहिं काजल कलम जरूरत है बिन रंग बनी
सब सूरत है । इन सूरतमें इक सूरत है
तैने एक अनेक दिखाय दिया ॥
जब बूंदको लेकर देह रची सुर दानव मानव
जीव जुदा । सबके घट अंदर मंदिरमें
तैने आप मुकाम जमाय दिया ॥ २ ॥
कोई पारनवार अधार बिना सब विश्व
चराचर धार रहा । बिन भूमि मनोहर महल
रचा बिन बीजके बाग लगाय दिया ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सब लोकनके नित संग रहे फिर आप असंग
स्वरूप सदा । ब्रह्मानंद आनंद भयो मनमें
गुरुदेव अलेख लखाय दिया ॥ ४ ॥

(राग प्रभाती ताल दादरा तर्ज-ठुमक चलत रामचंद्र,)

जयजय जगदीश ईश शरण मैं तुमारी ॥ टेक ॥
ब्रह्मा वेद वचन रटत शंभु सदा ध्यान धरत
सुर नर मुनि गान करत महिमा अति भारी ॥१॥
स्वर्ग भू पाताललोक चंद्र सूर यथायोग
नानाविध पानभोग रचिया नरनारी ॥ २ ॥
माया तुमरी पुरंत मोहे सब जीवजंत
जतन करत साधुसंत उतरे कोई पारी ॥ ३ ॥
तुमरी जो शरण आय जनम मरण छूट गया
ब्रह्मानंद धाम पाय निर्मल सुखकारी ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

भजरे नर रामचरण निश दिन सुखदाई ॥टेक॥
नरतन यह बारबार जगमें नहिं मिलनहार
कोई दिनकी बहार पीछे पछताई ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

नारी सुत भ्रात तात चार दिवसकी जमात
कोई नहीं संग जात नरकमें महाई ॥ २ ॥
धनका क्या करत मान पंकज जल लव समान
करले कुछ करसे दान बहत नदी जाई ॥ ३ ॥
बार बार रामनाम भजले तज सकल काम
ब्रह्मानंद परमधाम अंतकाल पाई ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

राम सुमर राम सुरा राम सुमर भाई ॥ टेक ॥
राजा रानी वजीर पंडित ज्ञानी सुधीर
बड़े बड़े शूर वीर धरणि में समाई ॥ १ ॥
ब्रह्मादिक देववृन्द तारागण सूर चंद
सागर पर्वत बुलंद सबन काल खाई ॥ २ ॥
सेना गढ़ राज पाट बाजी गजराज ठाठ
नारी घर बार हाट छूटे पलमांही ॥ ३ ॥
झूठे सब कारबार जगमें हरिनाम सार
ब्रह्मानंद बारबार जपलें मन लाई ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(प्रभाती ताल दादरा)

आज सखी शाम सुन्दर बंसिया बजावे ॥टेक॥
मोरमुकुट सिर चढाय पगमें नूपुर सुहाय
बंशी मुखमें लगाय मधुर मधुर गावे ॥ १ ॥
जमुनाको रुकत नीर पक्षीगण मौन धार
धेनु मुख घास डार धुनिमें मन लावे ॥ २ ॥
ब्रह्मा सुरराज शेष शंकर गौरी गणेश
धार धार मनुज वेष वृन्दावन आवे ॥ ३ ॥
बंसीधुन सुन अपार भूले मुनि मन विचार
ब्रह्मानंद गोप नार तनमन बिसरावे ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

हेरी सखी आज मुझे शामसे मिलायदे ॥टेक॥
मोर मुकुट शीश धरे मकर कुंडल कान पड़े
पीत बसन मंद हसन मधुर मधुर गाय दे ॥१॥
जमुनाको विमल नीर नंदलाल खड़ो तीर
बंसरीकी टेर एक बेर तो सुनाय दे ॥ २ ॥
गहन बिपिन लता पुंज चांद चांदनी निकुंज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

गोप नार संग रंग रास तो रचाय दे ॥ ३ ॥
नाच करत मंद मंद गगन खड़े देववृन्द
ब्रह्मानंद चंद बदन नैन से दिखाय दे ॥ ४ ॥

(प्रभाती ताल दादरा)

वृन्दावन कुंजभवन नाचत गिरधारी ॥ टेक ॥
धरधरधर मुरली अधर भरभर स्वर मधुर मधुर
करकर नटवर स्वरूप सुन्दर सुखकारी ॥ १ ॥
घनघननघन बजत ताल ठुमठुमठुपचलत चाल
चरणन छनछनछनछन नूपुर धुन प्यारी ॥२॥
धिरधिरधिर करत गान फिरफिरफिर देत तान
मिलमिलमिल रचत रास संग गोप नारी ॥३॥
वदवदवद वदनचंद वह सहसह हसनमंद
ब्रह्मानंद नंदनंदनंदन बलिहारी ॥४॥

(प्रभाती ताल दादरा)

देख सखी कृष्णचंद्रकी छवी सुहावनी ॥ टेक ॥
सिरपे मुकुट अलक भाल श्रवणकुंडल दृगरसाल
गलमें माल भुज विशाल पीतपट धरावनी ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बाजुबंद कंगण हाथ कमरमणी तिलक माथ
बंसी अधर मधुर मधुर सरस रोग गावनी ॥२॥
चंदवदन मंद हास सखियन संग करत रास
पगमें छनन छनन नूपुरोंकी धुन बजावनी ॥३॥
सजल मेघ शाम रंग संग राधिका उमंग
ब्रह्मानंद श्रीमुकुंद चरणरनि लगावनी ॥४॥

(प्रभाती ताल दादरा)

आज मेरी लाज हरि आयके बचाइये ॥ टेक ॥
कौरवोंकी सभा बीच जुड़े सबी लोक नीच
खींच रहे केश मेरे वेगसे छुड़ाईये ॥१॥
पति तमारे शूर बीर धर्म हेत धरे धीर
चीर हरण करत दुष्ट देर ना लगाईये ॥२॥
भीष्म द्रोण कर्ण वर्म लोभहेत तजा धर्म
कर्म बुरा करें नाथ हाथ दे रखाईये ॥३॥
सकल तगतके अधार प्रभु मेरी सुन पुकार
ब्रह्मानंद हो सवार गरुड़पे सिधाईये ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज मेरी बेनती दीनबंधु सुन जरा ॥ टेक ॥
सकल जगतके अधार निर्गुण नित निर्विकार
जनममरण तापहार परमधाम सुखकरा ॥१॥
चौदें भुवनमें समान पूरण सब गुण निधान
ऋषिमुनिगण धरतध्यान सकल दुःखभयहार ॥२
महिमा तुमरी अपार वेद रटत बार बार
पावत नहीं परमपार कोई सुरासुरनरा ॥३॥
नाथ मेरी अरज मान दीजे अपनी भक्तिदान
ब्रह्मानंद तेरी जान चरणकमल किंकरा ॥४॥

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज मेरी बेनती दीनबंधु मान ले ॥ टेक ॥
भाई बंधु मीर नार चार दिवसकार सहार
तुमरे चरणका अधार एक मुझे जानले ॥१॥
कोई रटत श्रीगणेश कोई रटत है महेश
मैं तो तेरो हूँ हमेश दास निज पिछान ले ॥२॥
मोह नदी जल अपार डूब रहा बीच धार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अब तो दयाकर निहार बांह पकड़ तार ले ॥३॥
सकल पाप दोष हरण परम धाम मोक्ष करण
ब्रह्मानंद अपनी शरणमें दयानिधान ले ॥४॥

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज मुझे आयके नाथ दरस दीजिये ॥टेक॥
शीश मुकुट तिलक भाल श्रवण कुंडल दृग विशाल
कंठमें वैजंती माल नयन सफल कीजिये ॥१॥
सजल मेघ शाम रंग पीत वसन लसित अंग
रमा बसत सदा संग शरण अपनी लीजिये ॥२॥
शंख चक्र गदा धार कमर मेखला विहार
शंख चक्र गदा धार कमर मेखला विहार
गरुड़ पीठपे सवार सदा जान रीझिये ॥ ३ ॥
चंदबदन मंद हास शेष नाग तन निवास
ब्रह्मानंद मेरी आश दया कर पुरीजिये ॥ ४ ॥

(शाम कल्याण ताल दादरा)

राम नाम सुमर ले उमर बीत जा रही ॥ टेक ॥
अंजली जल न थिर रहाय बूँद बूँद टपक जाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

पलक पलकमें बिहाय चंचला समा रही ॥१॥
अब तो चेतरे गंवार सिरपे काल है सवार
झूठ जगत कारबारमें सबी गमा रही ॥२॥
धन शरीर महल माल बिछड़ जात अंतकाल
माया मोह विषय जाल बीच दृढ फसा रही ॥३
तीरथ बरत पुण्यदान तुलें न नामके समान
ब्रह्मानंद बचन मान क्यों सदा भुलारही ॥४॥

(शाम कल्याण ताल दादरा)

आज सखी कुंजन में रास रचत है हरी ॥टेक॥
जमुनासरित विमल नीर हरित घास पुलीन तीर
चलत मधुर गतिसमीर धीर परम सुखकरी ॥१॥
सिरपे मोरमुकुट धार गलमें परम फूलहार
मुरली अधर धुन विहार चरण युगल नूपुरी ॥२
मिलके ग्वाल बाल संग करत सरस नाच रंग
गोपनार मन उमंग परम प्रेम रस भरी ॥३॥
बजत घन मृदंग ताल गान करत नंदलाल
ब्रह्मानंद पणवपाल ललित छबि मनोहरी ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(राग शाम कल्याण)

दीनबंधु दयाकरि दीजो दरस मोहे हरि ॥टेक॥
शीश रतन मुकुट धार श्रवण कुंडल मकरकार
अखियां परम मोदभरी ॥१॥ दीजो०
तनपे सुंदर पीतवसन मुखसरोज मंद हसन
गलमें विमल माल धरी ॥२॥ दीजो०
चतुर भुजा श्यामवरण शंख चक्र गदा धरण
कमर मोतिन हार लरी ॥३॥ दीजो०
चरणनूपुर धुन विहार मोहनी मूरत निर्विकार
ब्रह्मानंद मनोहरी ॥४॥ दीजो०

(राग शाम कल्याण)

अवतो नाथ दया करो मैं तो तेरी शरण पड़ो ।टेक।
भवसमुद्र जल अपार डूब रहा बीच धार
बाहु पकड़ पार तरो ॥१॥ मैं तो०
काम क्रोध लोभ मोह रात दिवस करत द्रोह
प्रबल वैरि देख डरो ॥२॥ मैं तो०
प्रभु मेरी सुन पुकार बिनती करूं बार बार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जनम मरण दुःख हरी ॥ ३ ॥ मैं तो०
मांगु एक नाम दान दीजिये करुणानिधान
ब्रह्मानंद मनमें धरो ॥ ४ ॥ मैं तो०

(राग शाम कल्याण)

मान मान मेरी कही उमर तेरी बीत रही ॥टेक
मनुष देह फिर न आय पलक पलकमें विहाय
जैसे नदिया जात वही ॥ १ ॥ उमर०
मात तात मीत नार स्वारथ हेत करत प्यार
कोई भी संग चलत नहीं ॥ २ ॥ उमर०
छोड़ विषय भोग राग मोह नींद त्याग जोग
सोवत सोवत देर गई ॥ ३ ॥ उमर०
जपले हरिको नाम सार सकल पाप दोष हार
ब्रह्मानंद वचन सही ॥ ४ ॥ उमर०

(राग शाम कल्याण)

देखोरी आज प्यारी अली
आवत श्याम मोरी गली ॥ टेक ॥
मोर मुकुट सिर धराय पीतवसन तन सजाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

भाल तिलक अलक ढली ॥ १ ॥ आवत०
गलमें माल भुज विशाल चलत मन्द मन्द चाल
संग ग्वाल वाल वली ॥ २ ॥ आवत०
कमर बीच मणि तड़ाग गावत मधुर मधुर राग
वंसी अधर बजत भली ॥ ३ ॥ आवत०
सुन्दर वदन सुखनिधान सुरनरमुनि धरत ध्यान
ब्रह्मानंद दनुज दली ॥ ४ ॥ आवत०

(गजल राग देश)

श्रीकृष्ण नामसार ऊधो कठिन योग है ॥टेक॥
आसन मूलबंध तान प्राण पवन कर समान
कैसे धरे ध्यान सबी तजके भोग है ॥ १ ॥
शीश मुकुट कुंडल कान वंशी अधर मधुर गान
हमसे सहन होय नहीं वो वियोग है ॥ १ ॥
कलिमें केवल हरिका नाम कलिमलन मोक्षधाम
मनमें सदा जपत मुनि सिद्ध लोग है ॥ ३ ॥
धरत नेम यज्ञ दान कोई न नामके समान
ब्रह्मानंद हरणा जन्म मरण रोग है ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल राग देश)

श्रीराम नाम सुमर उमर बीत जात है ॥ टेक ॥
जोबन धन शरीर माल सबका नाश करत काल
जगमें कोई वस्तु नहीं थिर रहात है ॥ १ ॥
भाई बन्धु नार मीत स्वारथ हेत करत प्रीत
मरणकालमें न कोई काम आत है ॥ २ ॥
लोक विभव राज्य पाट गज तुरंग महल हाट
निकल जाय प्राण जबी सब विलात है ॥ ३ ॥
जगत झूठ जान जान धरो प्रभू ध्यान ध्यान
ब्रह्मानंद मान मान हमरी बात है ॥ ४ ॥

(गजल राग देश)

देखो सखी बनको चले आज राम हैं ॥ टेक ॥
दशरथके कुंवर बाल कोमल तन भुज विशाल
जनकसुता संग जात अंग वाम है ॥ १ ॥
जटाजूट सोहे माथ धनुष बाण धरे हाथ
पीत बसन कमर बीज मुंज दाम है ॥ २ ॥
भूपति बर दिया दान धर्म हेत तजे प्राण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

केकई नादान किया कठिन काम है ॥ ३ ॥
भूमिके भार हरण आये सुरकाजकरण
ब्रह्मानंद कंद चरण मोक्ष धाम है ॥ ४ ॥

(गजल राग देश)

जगदीश सकल जगतका तुमही आधार है ॥टेक
भूमि नीर अगन पवन सूरज चांद शैल गगन
तेरा किया चौदँ भुवनका पसार है ॥ १ ॥
सुर नर पशु जीव जंत जल थल चर है अनंत
तेरी रचनाका नहीं अंत पार है ॥ २ ॥
करुणानिधि विश्वभरण शरणागत तापहरण
सत चित सुख रूप सदा निर्विकार है ॥ ३ ॥
निर्गुण सबगुणनिधान निगमागम करत गान
ब्रह्मानंद नमन करत बार बार है ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलू)

सुनो आज जगदीश बिनती हमारी
पड़ा हुं शरण दीन आकर तुम्हारी ॥ टेक ॥
विधाता जगत का तूं है हमारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

माता तुं ही है पिता तुं है निर्विकारी ॥ १ ॥
विषयोंकी लालचमें तुझको बिसारा
क्षमा कर प्रभु मेरे अवगुण हजारी ॥ २ ॥
संसारसागरमें गहरा फसाया
मुझे अब दया करके लीजे उवारी ॥ ३ ॥
तेरे बिना और पालक न मेरा
ब्रह्मानंद पूरण करो आश भारी ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलू)

प्रभु आज चरणोंमें आयो तुमारे
दयाकर सबी दोष हरिये हमारे ॥ टेक ॥
चौदह भुवनमें तुं है एक पूरण
तेरे रचे चांद सूरज सितारे ॥ १ ॥ प्रभु०
नहीं जानुं ज्ञान न ध्यान न पूजन
केवल पड़ा हुं मैं तुमरे सहारे ॥ २ ॥ प्रभु०
बिछा जाल माया का चारों तरफ से
बचाले मुझे दीन बन्धु पियारे ॥ ३ ॥ प्रभु०
नदी कालकी बेगसें जा रही है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ब्रह्मानंद कीजे मुझे अब किनारे ॥ ४ ॥ प्रभु०

(गजल राग पीलु)

दिखा दे नजरसें वो जलवा तुमारा
जुदाईका पड़दा करो दूर प्यारा ॥ टेक ॥
तेरी खुबसूरत है शक्ले किसी पे
तुंही स्वर्ग परियोंका सुन्दर नजारा ॥ १ ॥
करुं क्या बड़ाई मैं तेरे हुसनकी
लजाते हैं सूरज व चंदर सितारा ॥ २ ॥
करे कौन तेरे गुणों का निरूपण
किताबें कवीश्वर मुनीवर भी हारा ॥ ३ ॥
सुनो मेरी विनतीको दिलसे दयाकर
ब्रह्मानंद शरणोंमें दीजे सहारा ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

प्रभु मेरे दिलमें सदा याद आना
दया करके दर्शन तुमारा दिखाना ॥ टेक ॥
सदा जानकर दास अपने चरणोंका
मुझे दीनबंधु न दिलसें भुलाना ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सबी दोष जन्मोंके मेरे हजारों
क्षमा करके अपने चरणमें लगाना ॥ २ ॥
किया काम कोई न तेरी खुशीका
अपना बिरद देख मुझको निभाना ॥ ३ ॥
फसाया हूँ, मायाके चक्करमें गहरा
ब्रह्मानंद बंधनसे मुझको छुड़ाना ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

देखो नजरसें वो जाती उमरिया
कबी हाथमें फिर न आती गुजरिया ॥ टेक ॥
दिन दिन घड़ी पलमें छिन छिनमें जावे
जैसे नदी वेग पानी लहरिया ॥ १ ॥
क्या सो रहा है बेफिकरी से गाफिल
फिरे कालकी तेरे सिरपे चकरिया ॥ २ ॥
मानुषकी देहीको दुनियामें पाकर
विरथा न खोवो रतनकी पिटरिया ॥ ३ ॥
सुमरो सदा नाम दिलमें निरंजन
ब्रह्मानंद सब भवबन्धन हरिया ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(गजल राग पीलुं)

मानुष जन्म फिरके आना नहीं है
बिना ज्ञानके मोक्ष पाना नहीं है ॥ टेक ॥
मिले ज्ञानमारग न कबहूँ जगतमें
अगर संतसंगतमें जाना नहीं है ॥ १ ॥
सबी विश्वमें एक इश्वर समाया
अज्ञान कारण पिछाना नहीं है ॥ २ ॥
स्वपनेकी माया यह रचना है सारी
कोई वस्तु कायम रहाना नहीं है ॥ ३ ॥
संसार विषयोंमें फिरता भुलाया
ब्रह्मानंद निज रूप जाना नहीं है ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

बिना कृष्णदर्शनके शांती नहीं है
ऊधो ज्ञानचरचा सुहाती नहीं है ॥ टेक ॥
क्या तुम सुनाते हो निर्गुण कहानी
हमारी समझ बीच आती नहीं है ॥ १ ॥
बसी दिलके अंदरमें मोहनकी मूरत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

घड़ी पल कवो दूर जाती नहीं है ॥ २ ॥
नहीं योगसाधनकी हमको जरूरत
बिना प्रेमकी बात भाती नहीं है ॥ ३ ॥
जपें नाम माधवका हम तो निरंतर
ब्रह्मानंद दिलमें भुलाती नहीं है ॥ ४ ॥

(गजल राग पीलु)

किधरको बतावुं मैं तेरा मकाना
सबी विश्वमें एक पूरण समाना ॥ टेक ॥
नीचे न ऊपर न चारों दिशामें
मिलता है मुझको अखीरी ठिकाना ॥ १ ॥
जहां देखतां हुँ नजरसें हमेशां
सबीजाँमें जाहिर है तेरा निशाना ॥ २ ॥
कहुँ कौनको नीच ऊंचा जगतमें
बराबर सबी जीवमें तुं बसाना ॥ ३ ॥
मिटा द्वैतका भाव दिलसे हमारे
ब्रह्मानंद व्यापक निरंजन पिछाना ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(गजल राग पीलु)

जाती जिधरको नजरिया हमारी
उधर देखता हुँ मैं सूरत तुमारी ॥ टेक ॥
खिला है यह दुनियाँ का सुन्दर बगीचा
सबी डाल पातोंमें तेरी मुरारी ॥ १ ॥
करें काठकी नाच पुतली हजारों
कला एक तेरीसे फिरती हैं सारी ॥ २ ॥
बदलती है रंगत हमेशां जगतकी
तुंही सबके अंदरमें है निर्विकारी ॥ ३ ॥
तेरी रोशनीसे चमकता है अंबर
ब्रह्मानंद घटघटमें तेरी उजारी ॥ ४ ॥

(भजन राग पीलु चलित)

जय जय जय जगदीश्वर प्यारा
विश्व चराचर सर्जन हारा ॥ टेक ॥
अचरज भारी रचना सारी
भुवन चतुरदश न्यारा न्यारा ॥ १ ॥ जय०
रवि शशि तारे गिरिवर भारे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सरवर सागर नीर अपारा ॥ २ ॥ जय०
सुर नर नारी जल थल चारी
तुम सब जीवनका रखवारा ॥ ३ ॥ जय०
ब्रह्मानंद दयाल दयाकर
कीजिए भवभय दूर हमारा ॥ ४ ॥ जय०

(राग पीलु चलित)

सुन सुन सुन प्रभु बिनती हमरिया
शरण पड़े हम आय तुपरिया ॥ टेक ॥
भवभयहारी सबसुखकारी
ऋषि मुनि गण तुझ नाम सुमरिया ॥ १ ॥
दयानिधाना सब सुखखाना
सकल जगत निशदिन हितकरिया ॥ २ ॥
घट घट गामी अंतरयामी
सुर नर पशु जग जीवन भरिया ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी
जन्म मरण सब संकटहरिया ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(राग पीलु चलित

प्रभु प्रभु प्रभु मैं दास तुमारो
मुझे न अपने दिलसें विसारो ॥ टेक ॥
भवजलधारा दुस्तर पारा
डूब रहा हूँ पार उतारो ॥ १ ॥ प्रभु०
परम कृपाला दीनदयाला
करुणा कर निज नैन निहारो ॥ २ ॥ प्रभु०
क्षमा करीजे दर्शन दीजे
मेरे अवगुण लाख हजारों ॥ ३ ॥ प्रभु०
ब्रह्मानंद चरणको चेरो
दीन जान भवबंध निवारो ॥ ४ ॥ प्रभु

(राग पीलु चलित)

हरि हरि हरि नितनाम सुमरणा
भवसागरजल पार उतरणा ॥ टेक ॥
बिन हरि सुमरे कबहुँ न उबरे
पुन पुन पुन जग जीवनमरणा ॥ १ ॥ हरि०
जो जन ध्यावे परमपद पावे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सुन्दर वदन मनोहर चरणा ॥ २ ॥ हरि०
पलमें सारे पाप निवारे
सकल मनोरथ पूरण करणा ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद दयाके सागर
भक्तजनोंके सबदुखहरणा ॥ ४ ॥ हरि०

(राग पीलु चलित)

चल चल चल सखी देश हमारे
वास करें जहां प्रीतम प्यारे ॥ टेक ॥
बिन घन गाजे अनहद बाजे
घंटा शंख मृदंग नगारे ॥ १ ॥ चल०
बिजली चमके अमृत टपके
पुन पुन झलकत रवि शशि तारे ॥ २ ॥ चल०
बिन जल थलमें गगन महल में
सुन्दर सेज बिछी रतनारे ॥ ३ ॥ चल०
ब्रह्मानंद निरख छवि निर्गुण
तेजपुंजमय परम उजारे ॥ ४ ॥ चल०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग बरहस अथवा अशावरी ताल धमाल)

अहो प्रभो अचरज माया तुमारी
जिसे मोह सकल नरनारी ॥ टेक ॥
ब्रह्मा मोहे शंकर मोहे मोहे इन्द्र बलकारी
सनकादिकनारदमुनि मोहे दुनियां कौनविचारी ॥
योग करते योगी मोहे वनमें मोहे तपधारी
वेद पढ़ते पंडित मोहे भूल गये सुधि सारी ॥
पांचविषयकी जाल बिछाई बंधन रचिया भारी
लालचमें सब जीव फँसाये निकलनकौनबिहारी ॥
जिसपर किरपा होय तुमारी सो जन उतरेपारी
ब्रह्मानंद शरणमें आया लीजिये मोहे उबारी ॥

(राग अशावरी ताल धमाल)

प्रभु इकनाम तेरा सुखकारी
सब दुनियां परम दुखारी ॥ टेक ॥
गर्भत्रासमें उलटे तन से नौदस मास गुजारी
बाहिरआयपड़ा पृथिवी पर माया लिपटी तुमारी ॥
[illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सुखदुख सबहीव्यापत तन में वचनसकेनउचारी ॥
जोबनमें नित काम सतावे मोह लियो मन नारी
बालबचोंके पालनके हित परघरदास भिखारी ॥
वृद्धपणमें रोग लगे सब काया निर्बल हारी
ब्रह्मानंद भजनबिन तुमरे जन्ममरणभय भारी ॥

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु तेरी महिमा किम विध गावुं
तेरो अंत कहीं नहीं पावुं ॥ टेक ॥

अलखनिरंजनरूप तुमारो किसविध ध्यान लगावुं
वेद पार अजहुँ नहिं पायो मैं कैसे बतलावुं
गंगा यमुना नीर बहाये मज्जन किम कर वावुं
वृक्ष बगीचे रचना तेरी कैसे पुष्प चढावुं ॥
पांच भूतकी देह न तुमरी चंदन किम लिपटावुं
सकल जगतकेपालनकर्ताकिसविधभोगलगावुं ॥
हाथ जोड़कर करज करुं मैं बारबार शिर नावुं
ब्रह्मानंद मिटादे पड़दा घटघट दर्शन पावुं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु तेरी महिमा कौन बखाने
जाको ब्रह्मादिक नहिं जाने ॥ टेक ॥
तुं सर्वत्र पूरण व्यापक सबी ठिकाने
घटघटभीतर जोत तुमारी ढूंढत दूर दिवाने ॥
कैसे देह रची है तुमने किस विध प्राण चलाने
जीव कहांसे आवे जावे कोई सके न पिछाने ॥
सूरज चाँद सितारे पर्वत नदियां नीर वहाने
भुवनचतुरदश रचनातेरी तुममें सकल समाने ॥
तेरी शरण पड़े तो प्राणी मोक्षधाम पहुँचाने
ब्रह्मानंद बिना तुझ सुमरण जन्म जन्म भटकाने ॥

(राग आशावरी ताल धमाल)

प्रभु तेरी महिमा परम अपारा
जाको मिलत नहीं कोई पारा ॥ टेक ॥
सकल जगतको आप रचावे सबका पालनहारा
अंदर बाहिर सबघट पूरण सबसें निशदिनन्यारा ॥
कैसे सूरज गर्म बनाया शीतल चांद उजारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जुदाजुदा नित नभके मांहीं कैसे चमकत तारा ॥
ऊंचे ऊंचे पर्वत कीने सरिता निर्मल धारा
कैसे भूमि अचल निरंतर क्यों सागर जल खारा ॥
किसविध बीच बने विरचनके नाना भांत हजारा
ब्रह्मानंद अंत नहीं आवे सुर नर मुनिगण हारा ॥

(राग आशावरी ताल धमाल)

रे मनुवा क्यों जगमें लिपटायो
तेरो कोई नहीं है सहायो ॥ टेक ॥
यह संसार स्वप्नकी माया बिरथा भरम भुलायो
क्षणभंगुर सबवस्तु विनाशी प्रीत लगा पछतायो ॥
विषया रस मृगतृष्णा पानी देख देखकर धायो
कबहुँ प्यास मिटे नहिं तेरी जनम जनम भटकायो ॥
जो प्रभु नित्य सहायक तेरो तिसको क्यों विसरायो
सकल व्यापक अंतरयामी जिन सब जग उपजायो
तेरी मेरी करते निश दिन सबही जन्म बितायो
ब्रह्मानंद ध्यानकर प्रभुको जो चाहे सुख पायो ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग आशावरी ताल धमाल)

अहो प्रभु काल बड़ो बलकारी
जांको भोजन है नरनारी ॥ टेक ॥ अहो०
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र गण खाये खाये दैत्य हजारी
बड़े बड़े पृथ्वीके राजा खाये निज तरकारी ॥
सूरज चांद सितारे नदियां सागर पर्वत भारी
कालचक्रमें सब पिस जावें अपनी अपनी बारी ॥
जलचर नभचर बनचर भूचर लघुदीर्घ तनधारी
सबहीं जीव कालके मुखमें घूमरहे दिनचारी ॥
नाम तुमारो अमर निरंतर कालपाश भयहारी
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी कीजिये भवजल पारी ॥

(राग धुन ताल ३ तर्ज—'देखोरी इक बाला जोगी')

जो जन हरिका ध्यान लगावे
जो भवसागर पार तरे रे ॥ टेक ॥ जो जन०
हिरदे बीच कमलके अन्दर सिंघासन निर्माण
करे रे। तिसके ऊपर कोटि भानुसम हरि
स्वरूप मनमें सुमरे रे ॥ जो जन०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

पग नूपुर कटिमें मणिमेखल सुन्दर पीतांवर पहरे रे। कौंस्तुभ मणि वनमाल गलेमें कुंडल कानन वीच परे रे ॥ २ ॥ जो जन०
चतुरभुजा वाजुबंद सोहे कर कंकण धुनि मनको हरे रे। शीश मुकुट मणिरतन जड़ित है शंख चक्र गदा पद्म धरे रे ॥ ३ ॥ जो जन०
वाम अंकमें लक्ष्मी विराजे शेष नाग सिर छत्र करे रे। शिव सनकादि खड़े कर जोड़े ब्रह्मानंद मन मोद भरे रे ॥ ४ ॥ जो जन०

(राग धुन ताल ३)

जो जन ध्यान धरे निर्गुणको
सो ईश्वरका दर्शन पाये ॥ टेक ॥ जो जन०
जाय इकांत भुवन में बैठे कोमल आसन भूमि बिछावे। चिंता फिकर छोड़ सब मनके त्रिकुटी महलमें सुरति जमावे ॥ १ ॥ जो जन०
पहले पहल रवि शशि तारे पल पलमें बिजली चमकावे। दूर दूरके दिव्य देवगण पुन पुन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

तेज . बीच दरसावे ॥ २ ॥ जो जन०
दिनदिन ध्यान धरे योगी जन ब्रह्मजोत घटमें
प्रगटावे । कोटि भानु सम झिलमिल झिलमिल
रोम रोममें सुख उपजावे ॥ ३ ॥ जो जन०
कर्मनके बंधन सब टूटे माया मोह जाल कट
जावे । ब्रह्मानंद मोक्षपद पावे गर्भवास
फिरके नहीं आवे ॥ ४ ॥ जो जग०

(राग धुन ताल ३)

काहे सोच करे नर मनमें
वो तेरा रखवारा है रे ॥ टेक ॥ काहे०
गर्भवाससे जब तु निकला दूध कुचनमें डारा है रे
बालापणमें पालन कीनो माता मोह दुवारा है रे ॥
अन्न रचा मनुजोंके कारण पशुओंके हितचारा है रे
पक्षी बनमे पान फूलफल सुखमें करत अहारा है रे
जलमें जलचर रहत निरंतर खावें मांस करारा है रे
नाग बसें भूतलके मांहि जीवें वर्ष हजारा है ॥
स्वर्गलोकमें देवनकेहित बहत सुधाकी धारा है रे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ब्रह्मानंद फिकर सब तजकर सुमरो सर्जनहारा हैरे

(राग धुन ताल ३)

जाग मुसाफिर क्या सुख सोवे
आखिर तुझको जाना है रे ॥ टेक ॥
इस सरायमें रहन न पावें क्या राजा क्या रानी हैरे
काहे पैर फैलावे मूरख घड़ी पलक ठहराना हैरे ॥
इक आवत दूजा चलजावे कायम नहीं ठिकाना हैरे
यह छल भरियां सुंदर परियां काहे देख लुभाना हैरे
इस मकानमें चोर बसत हैं अपना माल बचाना हैरे
आ परदेस ख़र्च मत कीजे यहांतो तुझे कमाना हैरे
दूर देशमें जाना तुझको पास न कछु समान हैरे
ब्रह्मानंद सुकृत करप्राणी जो आगे सुखपाना हैरे॥

(राग धुन ताल धीमा)

गायरे नर गाय प्यारे अबतो हरिगुण गायरे ॥टेक
बालापण जोबन गया फिर विरध हो गई कायरे
छोड़ दे दुनियांकी लालच क्यों रहा लिपटायरे ॥
नदिया चली नीरकी जिम गई समुद्र समायरे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

रातदिन उमरा विहावे पलकथिर न रहायरे ॥
माल धन सुत मीत नारी कोई संग न जायरे
चार दिनके जान साथी अंत सकल विलायरे ॥
दीनबंधु दयाल प्रभुके चरणमें चित लायरे
ब्रह्मानंद मिटैं सबी दुःख सदा होय सहायरे ॥

(राग धुन ताल धीमा)

जागरेनरजागप्यारे अबतो गाफिल जागरे ॥टेक॥
स्वप्न जैसी जान रचना खिला दुनियां बागरे
देखते मुरझाय जावे क्या करत है रागरे ॥
काम क्रोध हंकार तृष्णा संग इनको त्यागरे
ध्यान धर जगदीशका नित मोड़मनकी बागरे ॥
जाल मायाका बिछा है दूर इससे भागरे
जानले निजरूप तेरो गुरुचरण अनुरागरे ॥
नामसम कलिकालमें नहिं दान जपतप योगरे
ब्रह्मानंद भजन बिना सब व्यर्थ योग विराग रे

(राग धुन ताल धीमा)

मनरे मननान मूरख बात मेरी मानरे ॥टेक॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जैसे बिजली बीच बादल होत है चल मानरे
मालधन जोबन नहीं थिर क्याकरे अभिमानरे ॥
जगमें मानुष देह पाइ परम मोक्ष निधानरे
भजन बिन मिरथा गमाई भूलकर नादानरे ॥
करले जो कुछ हो सकेरे योग जपतप दानरे
मनमें फिर पछतायगा जब निकस जावे प्राणरे
संत संगत बीच जाकर श्रवणं कीजे ज्ञानरे
ब्रह्मानंद स्वरूप पूरण घटमें अपने जानरे ॥

(राग धुन ताल धीमा

चेतरे नर चेत प्यारे अबलों मनमें चेतरे ॥ टेक
क्यों भुलायो नाम हरिको जीव मूढ़ अचेन रे
बिखर जावे देह तेरी जैसे वालु रेतरे ॥
मिटी न मनकी आश तेरी बाल हो गये श्वेतरे
भजन बिन भगवानके तुं मरके होवे प्रेतरे ॥
बिषय लालचमें फसायो किया न प्रभुसे हेतरे
धर्मको नहीं बीज बोयो खाली रहगया खेतरे ॥
सर्व व्यापक रूप ईश्वर जान उसका भेदरे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्मानंद मिटे सबी दुख जन्ममरण समेतरे ॥

(सारंगी कवाली)

अब तुम दया करो श्रीकृष्णजी
ब्रजराज कहाने वाले ॥ टेक ॥

तुम मात देवकी जाये जसुमतिके पुत्र कहाये
मथुरासे गोकलआयेजी माखनके चुरानेवाले ॥
लड़कपन संग माटी खाई सुन मात जसोदाधाई
तुम अपने मुखकेमांहीजी सबविश्व दिखानेवाले ॥
थन चूस पूतना मारी कुबरीकी देह सुधारी
तुम कंसराज बधकारीजी दुष्टनके दबानेवाले ॥
जमुनातट बंसी बजाई सबसखियां सुनकर आई
वृंदावन रासरचाईजी मिल नाच नचानेवाले ॥
तुम पुरी द्वारका धाये सोनेके महल बनाये
रुकमणको जीतकरलायेजी यदुवंश बढानेवाले ॥
तुम अर्जुनके रथवाही पांडवकी जीतकराई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

द्रुपदीकी लाज रखाईजी भक्तनके बचाने वाले ॥
सब दैत्यनको संहारा भूमीका भार उतारा
ब्रह्मानंद देवदुखटाराजी निजधाम सिधानेवाले ॥

(लावनी कव्वाली)

अबतुम दयाकरो श्रीरामजी रघुनाथ कहानेवाले ॥
बन जाय ताड़का मारी खरदूषण फौज संहारी
सब बिघ्नदिये तुमटारी जी मुनियज्ञ करानेवाले
तुम जनकपुरी पगधारा शिवधनुष तोड़कर हारा
राजोंका गर्व निवाराजी सीताको विहानेवाले ॥
भई राजतिलककी त्यारी तब केकईकी मतिमारी
दशरथ आज्ञा सिरधारीजी बनवास सिधानेवाले ॥
तुम चित्रकूट चलआये सब ऋषिमुनि सुख उपजाये
जहाँ भरतमिलाप करायेजी निलकंठ लगानेवाले ॥
तुम पंचवटीमें जाई निज पर्णकुटी बनवाई
तहां सीता गई चुराईजी मृगमार गिरानेवाले ॥
सुग्रीवको मित्र बनाया बालीको मार गिराया
हनुमान दूत भिजवायाजी लंका जलवानेवाले ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तुम सागर पुल बनवाई सब सेना पार लंघाई
रावणसे करी लड़ाईजी सब वंश मिटानेवाले ॥
घर जनकसुताको लाये दे राज्य विभीषण आये
ब्रह्मानंद विमलयश गायेजी सुरकाज बनानेवाले ॥

(कावली कव्वली)

अब तुम दयाकरो महादेवजी कैलास बसानेवाले ।
सब अंग विभूति रमाई सिर ऊपर जटा सुहाई
गिरिराजसुता सुखदाईजी निजअंग बिठावाले ॥
कानन में कुंडल राजे मस्तकमें चंद्र विराजे
तननागविभूषण साजेजी मृगछाल बिछानेवाले ॥
नरमुंडमाला गलधारी करमें त्रिशूल भयकारी
नंदीगण पीठ सवारीजी डमरूको बजानेवाले ॥
गंगा नदि वेग अपारा जब नभसे उतरी धारा
तुम बीच जटाके डाराजी जलबूंद बनानेवाले ॥
जब रावणने तप कीना तब मनवांछितवर लीना
तुम तीनलोकपति कीनाजी सब राज्य दिलानेवाले
तुम कामदेव तन जारा त्रिपुरासुर मार विदारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सब दक्षयज्ञ संहाराजी गणसेन पठानेवाले ॥
मुनि मार्कण्ड तपधारी जब आयो शरण तुमारी
यमपाश पलकमें टारीजी तन अमर करानेवाले ॥
तुम दीनबंधु व्रतधारी निज भक्तनके हितकारी
ब्रह्मानंद सकल भयहारीजी सुखधाम पुगानेवाले

(लावनी कव्वाली)

अबतुम दयाकरोजगदीशजी सबविश्व रचानेवाले॥
तुम मनमें प्रथम विचारा तब पांचतत्व रचडारा
फिरहुआ जगत विस्ताराजी सबभुवन बनानेवाले॥
कोई नभचर जीव बनाये कोई पृथिवी बीच बसाये
जलचर जलमें उपजायेजी बहुरूप धरानेवाले ॥
कहीं अमृत फल रचदीने कहीं अन्न बहुविध कीने
तुम भोजन नित्यनवीनेजी सबको मिलवानेवाले ॥
नहीं जीव कर्म चतुराई तुमने सब वस्तु बनाई
सब जगा सबी सुखदाईजी सब ढंग जमानेवाले ॥
तुम पंखा पवन चलाया दीपक रविचंद्र जलाया
जितनदियां नीर बहायाजी सबजीवजिवानेवाले॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जड़ चेतन जीव बनाये फिर बीजसे बीज लगाये
कोई नाशहीन नहिपाये जी जगचक्र चलानेवाले ॥
तुमको सब जीव समाना निजकर्म किये परधाना
फिर ऊंचनीचजग ठाना जी सबखेलदिखानेवाले॥
तुम पार ब्रह्म अविनाशी घटघटके अंतरवासी
ब्रह्मानंद परम सुखराशीजी भवबंध मिटानेवाले ॥

(गजल ताल कव्वाली)

भजले रामनाम सुखधाम [1]तेरा पूरण हो सबकाम ॥
काशी जावे मथुरा जावे तीरथ फिरे तमाम
जाय हिमालय करे तपस्या नहि पावे विश्राम ॥
जटा रखाये भस्म रमाये जंगल किया मुकाम
सतगुरुकी संगत नहिं कीनी मिले न आतमाराम ॥
आसन साधे भोजन साधे साधे प्राणायाम
घटमें ब्रह्मस्वरूप न चीनो कीनो जतन निकाम॥
संत समागम करे निरंतर जगसे हो उपराम
ब्रह्मनंद परम पद पावे होवे मन निष्काम ॥

१ रंगस कैसे होरी खेलूंरा मैं सांवरियाके संग (तर्ज)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भजन ताल कव्वाली)

देखो वृंदावनकी कुंजमें री नाचे नंदकुमार ॥
मोरमुकुट सिर ऊपर सोहे गल फूलनके हार
पीतांबर कटि बीच विराजे मुरली अधर सुधार ॥
वीणा ताल मृदंगी बाजे बाजे झांझ सितार
छनछन छनछन नूपुर बाजे करकंकण झनकार ॥
सखियांके संग राधा नाचे नाचे ब्रजकी नार
ग्वालबाल सब मिलकरनाचे करकरके सिंगार ॥
जलचर मोहे थलचर मोहे मोहे नभ संचार
ब्रह्मानंद मुनीश्वर मोहे वंशी धुन निर्धार ॥

(भजन ताल कव्वाली)

बंशीका बजाना छोड़देरे नंदमहरके लाल ॥टेक॥
तेरी वंसरी रसकी भीनी बाजे मधुर रसाल
सुनसुन सारी ब्रजकी नारी भूलगई घरमाल ॥
बनमें जाते धेनु चराने मोह लिये सब ग्वाल
दधि बेचनको चली गुजरिया रोकलई तत्काल ॥
पक्षी मौन हुये पशुओंने तजा चरनका ख्याल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ध्यानछुटा मुनियोंका नगमें सुनकर धुनीविशाल ॥
मोरमुकुट पीताम्बर मोहे गल वैजंती माल
ब्रह्मानंदकी सुनो बेनती दीजे दरस दयाल ॥

(भजन ताल कव्वाली)

बंसीका बजाना रीसखी मैं कैसे छोड़ूँ आज ॥टेक
इस बंसीमें सब रागनकी सुंदर भरी अवाज
वीणा ताल मृदंग सरंगी बाजें सबही साज ॥
इस बंसीकी धुनको सुनके मग्न भये मुनिराज
स्वर्गलोकसे सुनने आवे मिलकर देव समाज ॥
इस बंसीमें निगमागमकी वाणी रही विराज
जो सुन पावे मोक्ष सिधावे सफल होय सबकाज ॥
वृन्दावनमें कृष्णचंद्रकी रही बन्सरी बाज
ब्रह्मानंद शरणमें आयो रखिये मेरी लाज ॥

(भजन ताल कव्वाली)

मनुवा जलधीतेरीरीत कीनी परदेसीसे प्रीत ॥टेक॥
क्षण भंगुर यह काया तेरी इसकी क्या परतीत
पलमें बिखर जाय यह सारी जिम बालूकी भीत ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

स्वारथके सब बन्धु जगतमें सुत दारा अरु मीत
जीव अकेला आवे जावे कोई नहीं संगीत ॥
यह संसार स्वप्नकी रचना तुं समझे विपरीत
घड़ी पलका नहीं ठिकाना क्या बांधे थिरनीत ॥
हरिका भजन करो नित प्यारे मन अपनेको जीत
ब्रह्मानंद परमपद पावे भव भय जावे बीत ॥

(भज तालन कव्वाली)

मनुवा सोचसमझकर देखलेरे नश्वर सब संसार ॥
राजा जावे रानी जावे जावे सब परिवार
माल खजाना सब चल जावे जावे घर दरबार ॥
सूरज चांद सितारे पर्वत सागर नीर अपार
दिन दिनकाल सभीको खावे धावे पवनसवार ॥
बालपणा जीवन सब बीता बीता काम बहार ॥
मौत खड़ी सिर ऊपर तेरे अब तो चेत गंवार ॥
भवका नाव सुधर निशवासर छोड़ जगत व्यवहार
ब्रह्मानंद मिटे भवबंधन छूटे सकल विकार ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(भज तालन कव्वाली)

अबतो छोड़ जगतकी लालसा रे सुमरो सर्जनहार॥
बालापण खेलनमें खोयो जोबन मोह्यो नार
बूढापण तन जर्जर होयो मन तृष्णा विस्तार ॥
पलपल छिनछिन उमराजावे जैसे अंजली धार,
गयावखत फिर हाथ न आवे कीजे जतन हजार॥
मातपिता नारी सुत बांधव स्वारथका व्यवहार
अंतकाल कोई संग न जावे मनमें देख विचार ॥
स्वप्न समान जगतकी रचना झूठा सब संसार
ब्रह्मानंद भजन कर हरिका पावे मोक्ष दुवार ॥
तुं तो उड़ता पंछी यार तेरा कौन करे इतबार॥टेक
नौ खिड़कीका पिंजरा तेरा खुले पड़े सब द्वार
आनाआना मुशकिल तेरा जाना सहज शुमार ॥
तेरे कारण महल बनाये सबे सुत धन दार
सबको छोड़जाय तुं पलमें निरमोही निरधार ॥
सुन्दर भोजन नित्य खिलावुं पहरावुं सिंगार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मलमल अतर फुलेल लगावु नहि माने उपकार ॥
कोट बनावु किले बनावु बांधु बंध हजार
ब्रह्मानंद रहे तु नाहीं निकल जाय बलधार ॥
(भजन ताल कव्वाली)
मैंतो रमताजोगी राममेरा क्यादुनियांसे काम ॥ टेक
हाड़ मांसकी बनी पुतलिया ऊपर जड़िया चाम
देख देख सब लोक रिझावें मेरो मन उपराम ॥
माल खजाने बाग बगीचे सुन्दर महल मुकाम
एक पलकमें सबही छूटे संग चले नहि दाम ॥
मात पिता अरु मीत पियारे भाई बंधु सुतवाम
स्वारथका सब खेल बना है नहीं इनमें आराम ॥
दिनदिनपलपलछिनछिन काया छीजत जाय तमाम
ब्रह्मानंद भजन कर प्रभुका मैं पावु विश्राम ॥
(भजन ताल ६ तर्ज—गणपति विघन-विनाशनहारे ,
प्रभु कर सब दुख दूर हमारे
शरण पड़े हम दास तुमारे ॥ टेक ॥
सकल जगत तुमने उपजाया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तुमही हो प्रतिपालन हारे ॥ १ ॥ प्रभु०
सकल व्यापक अन्तरयामी
ध्यावत सुरनर मुनि गण सारे ॥ २ ॥ प्रभु०
नाम तुमारो सब सुखदायक
सकल दोष भय पाप निवारे ॥ ३ ॥ प्रभु०
सत चित आनंद रूप तुमारो
ब्रह्मानंद सदा मन धारे ॥ ४ ॥ प्रभु०

(खमाच ताल ३)

प्रभु तुम सकल जगतके स्वामी
घट घटके नित अंतरयामी ॥ टेक ॥
निर्मल पूरण रूप तुमारो
भुवन चतुरदश जल थल गामी ॥ १ ॥ प्रभु०
तुमरा नाम लेत सब उधरें
पामर नीच जीव खल कामी ॥ २ ॥ प्रभु०
तुझ बेमुख सुख कबहुँ न पावें
नरक कुंड नर पड़त हरामी ॥ ३ ॥ प्रभु०
ब्रह्मानंद दयाल दया कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भवदुख हारण सब सुखभामी ॥ ४ ॥ प्रभु०

(खमाच ताल २)

प्रभु तुम सब जन सर्जन- हारे
सकल शक्तिमय पिता हमारे ॥ टेक ॥
भूमि पर्वत नदियां सागर
तुमरी रचना रवि शशि तारे ॥ १ ॥ प्रभु०
सुर नर पशु सब जीव जगतमें
तुम अधीन सब पुत्र तुमारे ॥ २ ॥ प्रभु०
नानाविध सब भोग पदारथ
सबके सुख कारण विस्तारे ॥ ३ ॥ प्रभु०
ब्रह्मानंद शरण में तुमरी
जन्ममरण भयभंजन हारे ॥ ४ ॥ प्रभु०

(खमाच ताल ३)

हरि तुम भगतनके रखवारे
सकल जगतके नित हितकारे ॥ टेक ॥
गजको पकड़ ग्राहने खेंचा
गरुड़ सवार पधार उबारे ॥ १ ॥ हरि०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्रह्लाद भगतकी रक्षा कीनी
हिरण्यकशिपु तन तुरत विदारे ॥ २ ॥ हरि०
पद्रुदसुताकी लाज बचाई
खेंच खेंच पट कौरव हारे ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद शरणमें आयो
कीजिये भवजल सिंधु किनारे ॥ ४ ॥ हरि०

(खमाच ताल ३)

चंचल मन निशदिन भटकत है
एजी भटकत है भटकावत है ॥ टेक ॥
जिम मर्कट तरु ऊपर चढ़कर
डार डार पर लटकत है ॥ १ ॥ चंच०
रुकत जतनसें सब विषयनतें
फिर तिनहीमें अटकत है ॥ २ ॥ चंच०
काजके हेत खोभकर मूरख
चिंतामणिको पटकत है ॥ ३ ॥ चंच०
ब्रह्मानंद समीप छोड़कर
तुच्छ विषय रस गटकत है ॥ ४ ॥ चंच०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(खमाच ताल ३)

हरिसुमरण बिन दिन जाय रहे
ऐसी जाय रहे नित धाय रहे ॥ टेक ॥
बालपणा खेलनमें खोया
जोबन काम लुभाय रहे ॥ १ ॥ हरि०
वृद्धपणेमें शिथिल भयो तन
नाना रोग सताय रहे ॥ २ ॥ हरि०
जप तप दान योग नहिं कीनो
बिरथा जन्म गमाय रहे ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद भजन बिन प्रभुके
भवसागर भटकाय रहे ॥ ४ ॥ हरि०

(खमाच ताल ३)

हरिनाम सुमर सुखकारण रे
सुखकारण रे भवतारण रे ॥ टेक ॥
सोवत जागत फिरत निरंतर
सुखसे करो उच्चारण रे ॥ १ ॥ हरि०
जन्म जन्मके संचित सारे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

पलमें पाप निवारण रे ॥ २ ॥ हरि०
जप तप योग कठिन कलिमांही
होय न भवभय हारण रे ॥ ३ ॥ हरि०
ब्रह्मानंद करो प्रभुके नित
चरणकमल चित धारण रे ॥ ४ ॥ हरि०

(खमाच ताल ३)

अनहद धुनी सिर पर बाज रही
एजी बाज रही अरु गाज रही ॥ टेक ॥
बाजत शंख मृदंग बंसरी
घन गर्जत अति छाज रही ॥ १ ॥ अन०
सुनकर मस्त भया मन मेरा
चंचलता सब भाग गई ॥ २ ॥ अन०
तन के धर्म कर्म सब छूटे
लोक वेदकी लाज गई ॥ ३ ॥ अन०
ब्रह्मानंद गिरा गमनाही
शून्य समाधि बिराज रही ॥ ४ ॥ अन०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मेरी सुरत गगनमें जाय रही
एजी जाय रही अरु जाय रही ॥ टेक ॥
त्रिकुटी महल में चढ़कर देखा
जग मग जोत जगाय रही ॥ १ ॥ मेरी०
अमृत बरसे बादल गरजे
बिजली चमक मन भाय रही ॥ २ ॥ मेरी०
दसवें महलमें सेज पियाकी
चुन चुन फूल बिछाय रही ॥ ३ ॥ मेरी०
ब्रह्मानंद देहसुध बिसरी
सहजास्वरूप समाय रही ॥ ४ ॥ मेरी०

(खमाच ताल ३)

मुझे लगन लगी प्रभु पावनकी
एजी पावनकी घर लावनकी ॥ टेक ॥
छोड़ काजा अरु लाजा जगतकी
निशदिन ध्यान लगावनकी ॥ १ ॥ मुझे०
सुरत उजाली खुलगई ताली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

गगन महलमें जावन की ॥ २ ॥ मुझे०
झिलमिलकारी जोत निहारी
जैसे बिजली सावनकी ॥ ३ ॥ मुझे०
ब्रह्मानंद मिटी सब प्यासा
निरख छबी मन भावनकी ॥ ४ ॥ मुझे०

(खमाच ताल ३)

मुझे सतगुरु संत मिलाय सखी
मेरे मनकी तपत बुझाय सखी ॥ टेक ॥
आन बसी चोरनकी नगरिया
खोस खोस कर खाय सखी ॥ १ ॥ मुझे०
झूठे कार निहार जगतके
बिरथा रही फसाय सखी ॥ २ ॥ मुझे०
बिन गुरु ज्ञान मोक्ष नहिं होवे
कोटिन जतन कराय सखी ॥ ३ ॥ मुझे०
ब्रह्मानंद मिले गुरु पूरा
भवबन्धन मिट जाय सखी ॥ ४ ॥ मुझे०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(खमाच ताल ३)

भजले नर शारंगपाणी रे भजले नर शारंगपाणी
मानुष तन पुन पुन नहिं आवे। दिन दिन
घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन्। स्रवत जात
जैसे अंजलिको पानी ॥ टेक ॥

जरमूढ़ पापसे डररे। हरिचरण कमल चित
धररे। संतन संग संगति कररे।
तन धन जोबनका मद मनसे शरण गहो
सतगुरु ज्ञानी ॥ १ ॥ भज०

विषयारस फिरत भुलाना। निजसुख स्वरूप
नहिं जाना। फिर मरकर मन पछताना।
भटकत पुन पुन लख चौरासी सुख न लहत
क्षण अभिमानी ॥ २ ॥ भज०

सुत दारादिक परिवारा। क्षण भंगुर देख
बिचारा। जिम बिजलीका चमकारा।
करकर पाप करत धन संचय नरक पड़त पामर

१ ब्रज दर्शनका मेला है। दिननोंके बीचे हुं १ तक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भाखी ॥ ३ ॥ भज०

जो जाप हरिका गावे। भवसागरको तर जावे। फिर गर्भवास नहि आवे। ब्रह्मानंद परमपद पावत जावत ब्रह्मस्वरूप समानी ॥ ४ ॥ भज०

(खमाच ताल ३)

जग स्वपनेकी मायासाथे जगस्वपनेकीमाया है ॥ सोच समझ नर दिल अपनेमें। कौन है तु किस कारण इस दुनियामें। मनुजतन पाया है ॥टेक॥ नारी सुतबांधव तेरा है नहिं तेरा है नहि मेरा है। चिड़ियाका रैन बसेरा है। अपने अपने कर्मनके वश कोई जावत कोई आया है ॥ १ ॥ जग०

घर मंदिर माल खजाना है। दो दिनका यहां ठहराना है। फिर आखिर तुमको जाना है। कर अपने करसे शुभ कारज जो परलोक सहाया ॥ २ ॥ जग०

चेहरेकी सुन्दरताई है। थोड़े दिनकी ठसनाई है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

फिर खाकमें खाक मिलाई है। सुमरणकर हरिका निशदिन दिनदिन छीजत यह काया है ॥ ३ ॥
यह झूठा सब संसारा है। मायाने जाल पसारा है। क्यों भूला फिरत गवारा है। ब्रह्मानंद रूपबिन जाने जन्ममरण भटकाया है ॥ ४ ॥ जग०

(खमाच ताल ३)

सुनलेप्रभु अरज हमारीरे सुनले प्रभुअरजहमारी ॥ दीनदयाल सकल दुखभंजन। अशरणशरण परम सुखदायक जन्ममरण भवबन्धन हारी ॥ टेक ॥
तुम सकल जगतके स्वामी हो। घटघटके अंतरयामी हो। सब विश्व चराचरगामी हो। जलथल गिरिवर नदियां सागर तुमरी अचरज रचना सारी ॥ १ ॥ सुन०
कहीं सूरज चांद सितारा है। कहीं बिजलीका चमकारा है। कहीं भुवन चतुरदश न्यारा है। सुर नर पशुगण जीव चराचर सब जग पालक नित हितकारी सुन०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कोई निगमागम गुण गाते हैं। कोई निर्गुण रूप बताते हैं। कोई मुनिजन ध्यान लगाते हैं। तुमरा अंत पार नहि पावे अचरज परबल महिमा भारी ॥ ३ ॥

तुम परमधाम अविनाशी हो। सतचित सुखरूप विलासी हो। सब व्यापक विश्वविकासी हो। ब्रह्मानंद करो करुणा अब शरण पड़ो मैं आय तुमारी ॥ ४ ॥ सुन०

(ध्रुवपद ताल ४ तर्ज--प्रथम मान. ओंकार)

प्रथम सुमर श्रीगणेश गौरीसुत प्रिय महेश ॥
सकल विघन भय कलेश दूरसे निवारे ॥ १ ॥
लंब उदर भुज विशाल कर त्रिशूल चंद्र भाल
शोभत गल पुष्पमाल रक्तबसन धारे ॥ २ ॥
ऋद्धि सिद्धि दोऊ नार चमर करत बार-बार
मूषक वाहन सवार भक्तन हितकारे ॥ ३ ॥
पूरण गुणगण निधान सुरमुनि यश करत गान
ब्रह्मानंद चरण ध्यान सकल काज सारे ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(ध्रुवपद ताल ४)

शीशमुकुट तिलक भाल कानन कुण्डलविशाल
कंठमें वैजंती माल शोभत अति भारी ॥ १ ॥
बिलसत तन पीत वसन वदन मंद मंद सहन
तीन लोक ताप ग्रसन चतुरभुजाधारी ॥ २ ॥
शंख चक्र गदा संग रमा बसत वाम अंग
सुन्दर शुभ श्याम रंग गरुड़के सवारी ॥ ३ ॥
कुटिल कुटिल अलक राजे पगमें नूपुर विराजे
ब्रह्मानंद मदन लाजे रूपको निहारी ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

जय महेश जटाजूट कंठ सोहे कालकूट
जन्म-मरण जाय छूट नाम लेत जाके ॥ १ ॥
तीन नयन चंद्र भाल गलमें मुण्डनकी माल
शोभत तन मिरगछाल कटिमें नाग बांके ॥ २ ॥
गौर बसत सदा संग भस्म लसत अंग-अंग
शीश गंगके तरंग वाहन वृषभाके ॥ ३ ॥
कर त्रिशूल अरु कुठार ब्रह्मानंद निर्विकार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जाकी महिमा अपार करत वेद थाके ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

ईश्वर तुं है दयाल जगतपति प्रणपाल
व्यापक पूरण विशाल सतचित सुखदाई ॥१॥
सकल भुवन जन्म करण जीवन के परम शरण
शरणागततापहरण निगमागम गाई ॥ २ ॥
तेरी महिमा अपार कोई नहिं पावे पार
ऋषि मुनि करकर विचार अंत हार जाई ॥३॥
ब्रह्मा श्रीपति गणेश नारद शारद सुरेश
ध्यावत मनमें ब्रह्मानंद पाई ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

आदिदेव विश्वनाथ भक्तनके सदा साथ
पकड़ प्रभु मेरो हाथ दास मैं तुमारो ॥ १ ॥
सुर नर मुनि धरत ध्यान वेद वचन करत गान
तुं ही सबगुण निधान अगम्रजनहारो ॥ २ ॥
पापहरण तेरो नाम सुख स्वरूप परम धाम
अचरज सब तेरे काम दयाकर निहारो ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सकल जगतके आधार निर्गुण नित निराकार
ब्रह्मानंद सुन पुकार भवसागर तारो ॥ ४ ॥

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

प्रभु निर्विकार जग रचनहार। महिमा
अपार नहिं मिलत पार। करकर विचार।
मैं तो निशिदिन हारो ॥ १ ॥ प्रभु०
सब विश्वभरण भवतापहरण। दीननके
शरण दुख दूर करण। मेरो जनम मरण।
सब बन्धन टारो ॥ २ ॥ प्रभु०
तुम जगत नाथ मैं हूँ अनाथ। मेरो पकड़
हाथ रख अपन साथ। धरुं चरण माथ
दया करके निहारो ॥ ३ ॥ प्रभु०
मेरी सुन पुकार करुं बार-बार। तेरी आस
धार पड़ो आय द्वार। ब्रह्मानंद पार
भवसागर तारो ॥ ४ ॥ प्रभु०

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

हरिनाम सुमर तेरी जाय उमर। घड़िपल छिन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भर नहिं दिलसे बिसार। सब सोच फिकर नर मनसे बिहाई ॥ १ ॥ हरि०

सुन मीत नार घर कारवार। जगकी बहार दिन देख चार कोई अंत बार तेरे संग न सहाई ॥ २ ॥ हरि०

राजा बजीर रणशूर धीर गुणिगण गंभीर नहिं थरत धीर। कोई सिद्ध पीर। जग थिर न रहाई ॥ ३ ॥ हरि०

बिन प्रभुके भजन सब झूठ जतन। करके थिर मन मेरो सुनले बचन ब्रह्मानंद रटन नित कर मनमांही ॥ ४ ॥ हरि०

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

आली नंदको लाल लोचन विशाल। गलफूलन माल शोभे तिलक भाल। चले ललित चाल नित बन्सरी बजावे ॥ १ ॥ आली०

घनश्याम वदन मुख चंद किरण। तन पीत बसन मृदु मंद हसन पग नूपुर धुन। सुन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मन हरखावे ॥ २ ॥ आली०
अति विमल नीर जमुनाके तीर। कसे कमर
चीर करे नाच धीर। संगमें अहीर
मिल रास रचावे ॥ ३ ॥ आली०
चली ब्रजकी नार करकर सिंगार। हरि छवि
निहार भुली सदन कार। ब्रह्मानंद पार
नहिं मुनि जन पावे ॥ ४ ॥ आली०

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

देखो देखोरी लंगर मेरीरोकत डगर। मेरी
बैयां पकर तलपटकी गगर। मैं तो जोड़तहुँकर
नहिं मानत बिहारी ॥ १ ॥ देखो०
सिर मुकुट धार गल पहनहार। संग बाल
डार नित करत रार। मैं तो गईरी हार।
बड़ो ढीठ अनारी ॥ २ ॥ देखो०
सखी नागर नट ठाड़ो जमुनाके तट। कर
कपटझपट मेरो हरलियां पट बनिसवट झटपट।
चढ़ गयोरी मुरारी ॥ ३ ॥ देखो०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

धर मुरली अधर स्वर गात मधुर। मैं तो धुन सुनकर सुध सारी बिसर। ब्रह्मानंद नजर बीच बसो गिरधारी ॥ ४ ॥ देखो०

(ठुमरी खमाच

रस भरी रे मोहन तेरी अखियाँ ॥ टेक ॥ डगर चलत पग धरत हरत मन करत रार नहिं माने लंगर कर रही पुकार सब सखिया ।१। चुनरी झटक मोरी गगरी पटकदीनी मटकचाल गयो नंदलाल.लखआली अलक भालपर रखियां ।२ जमुनातट पनघट बन्सीवट गावत मधुरी बेन बजावत नाचत परम हरखियां ॥ ३ ॥ श्यामल तन मुख चंद्रकिरणसम ब्रह्मानंद मुकुन्द छबी मन मोहन नैन निरखियां ॥ ४ ॥

(ठुमरी खमाच)

मोकुं जाने दे जाने देरे कनैया ॥ टेक ॥ जमुनाको सखीयर मैंनो चली निजघर ठाड़ो मगपर करे रार निडर मैं तो कहूंगी जाय तोरी मैया ॥१।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

काहेको मुरारी परशोकतहमारी तुम मारी ब्रजनारी
हम गारी देंइ हारी नहिं मानत है धेनुचरैया ॥२॥
निपटअनारी न मांगेदान ब्रजनारीनसे कंबकोन करे
मान देखोरी बड़ोगुमाननंदलालनिठुरलड़ैया ॥३॥
नंदके दुलारे मेरे नैननके तारे हरि ब्रह्मानंद
विहारे ब्रज अंदर सुन्दर रूप धरैया ॥ ४ ॥

(ठुमरी खमाच)

दर्शन बिन जियरा तरसे ॥ टेक ॥
घड़िघड़ि दिनदिन पलपल छिनछिन कलन
परत नहिं धरत धीर मन नीर नैननसे बरसे ॥१॥
बिनती हमारी अब सुनो गिरधारी तुम जाऊं बलि
हारी तेरेचरणकमलतांपेवारी मेरीजानजिगर से ॥२
कीजिये सुनाई मेरि दिरदयों लगाई अब औरन सहाई
तेरेबिनाय दुराईमुझेलीजिये बचाईनिज करसे ॥३॥
दूषण हमारी सब दिलसे बिसारो प्रभु ब्रह्मानंद
निहारो निज नैनन तारो भवसिंधु लहरसे ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(ठुमरी खमाच)

दर्शन बिन तरसे नैना ॥ टेक ॥

सांवरीसूरतप्यारी वनमाल गलधारी जबसे निहारी साँ रीतनकीबिसारीसुधपड़त न घड़ीपलचैना ॥१॥

जमुनाके नीरेतीरे विमल समीरे सखी धीरे धीरे गावेनंदलाल ग्वाल बाल संगमधुरमधुरस्वरबैना।२

शीश मुकुट कटि पीत विमल पट रास करत नटवर वन कुंजन पग नूपुर धुनछैना ॥ ३ ॥

सुन्दर अलक झलक श्रुति कुंडल ब्रह्मानंद पलक नहीं विसरत सकल मनोरथ दैना ॥ ४॥

(राग कसूरी ताल ३ तर्ज—सदा रही अलगस्त)

दीनानाथ दयाल सुने मैं भक्तन हितकारी ॥टेक॥

हिरणकशिपने बांध भक्तको चाबुक जब मारी खंभफोड़कर प्रकट भये हरि नखसे कमर फाड़ी।१

गजको पकड़ ले चला ग्राह जब जलमें बलकारी मार चक्र ग्राहका सिरकाटा गजकि विपतटारी ॥२

बीच सभाके नगन करी जब पांडवकी नारी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

दुःशासनकी भुजा चीरको खेंच खेंच हारी ॥३
ध्रुवने शाम लिया जब दीना अचल धाम भारी
ब्रह्मानंद देर नहिं कीजे अब मेरी बारी ॥ ४ ॥

(राग कसूरी ताल ३)

पियामिलनकेकारणआज जोगनबनजावुंगी ॥टेक॥
हारसिंगार छोड़कर सारे अंग विभूति रमावुंगी
सिंगी सेली पहर गलेमें अलख जगावुंगी ॥१॥
काशी मथुरा हरिद्वार सब तीरथ न्हावुंगी
जाय हिमाचल करूं तपस्या तनको सुखावुंगी ।२।
ऋषि मुनियोंके आश्रम जाकर खोज लगावुंगी
अंदर बाहिर सब जग ढूंढूं नहिं अटकावुंगी ।३
निशदिन उसका ध्यान लगाकर दर्शन पावुंगी
ब्रह्मानंद पिया घर लाकर मंगल गावुंगी ॥४॥

(राग कसूरी ताल ३)

हरिनाम सुधर सुखधाम
जगतमें जीवन दो दिनका ॥ टेक ॥
पाप कपटकर माया जोडी गर्व करे धनका

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सभी छोड़कर चला मुसाफिर बासहुया बनका ॥१
सुन्दर काया देख लुभाया लाड़ करे तनका
छूटा श्वासबिखर गई देही ज्यों माला मनका ॥२
जीवन-नारी लगे पियारी मौज करे मनका
कालबली का लगे तमाचा भूलजाय ठनका ॥३
यह संसार स्वपनकी मेला पलछिनका
ब्रह्मानंद भजनकर बन्दे नाथ निरंजनका ॥४॥

(कसूरी ताल ३)

तेरी शरण पड़ा मैं आय नाथ
मोहे दे दर्श प्यारा ॥ टेक ॥
गोकुल ढूंढी मथुरा ढूंडी बिंदरावन सारा
काशीपुरी नकल फिर ढूंडी ढूंडा हरिद्वारा ।१।
कोई बैकुन्ठ कैलाश बतावे कोई सागर पारा
कोई कहे सब जगके भीतर व्यापक कर्तारा ।२।
संत बतावें घटके मांही प्रगट उजियारा
कोई कहे वो अलख निरंजन सबसे है न्यारा ।३।
चतुर्भुजा पीतांबर सोहे शीश मुकुट धारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ब्रह्मानंद मैं दर्शन पाऊं जाऊं बलिहारा ॥४॥

(कसूरी ताल २)

तेरो जन्म मरण मिट जाय
हरिका नाम सुमर प्यारे ॥ टेक ॥
गर्भमें आया नरतन पाया भाग्य बड़े भारे
मोह भुलाना कदर न जाना रेत रतन डारे १
बालापनमें मन खेलनमें सुख दुख नहिं धारे
जोबन रसिया कामन बसिया तनमन धनहारे २
बूढ़ा होकर घरमें सोकर सुने बचन सारे
दुर्बल काया रोग सताया तृष्णा तन जारे ३
प्रभु नहिं सुमरा बीती उमरा काल आय मारे
ब्रह्मानंद बिना जगदीश्वर कौन विपत टारे ४

(कसूरी ताल ३)

शरण पड़ेकी लाज आज
तुम राखो भगवाना ॥ टेक ॥
जपतप योग यज्ञ नहिं कीने नहिं तीरथ दाना
बिरथा बीत गई सब उमरा विषयन भरमाना १

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सत संगतमें बैठ तुमारा किया न गुण गाना
भवसागरजल दुस्तर भारी कैसे तर जाना २
चौरासी लख जीव जनमें पुन पुन भटकाना
सुमरे भजन विना नहिं कबहूँ होय मोक्षपाना ३
दीनदयाल दयाके सागर तुम सब गुणखाना
ब्रह्मानंद मैं दास तुमारो मुझे न विसराना ४

(बसूरी ताल ३)

तुम जाय बसे मोहन मथुरा
गोकुल कब आओगे ॥ टेक ॥
मोरमुकुट पीताम्बर माला गल पहनावोगे
जमुनातटपर ग्वालनके संग धेनु चरावोगे ॥१॥
मीठी धुनसे शाम मनोहर बेन बजाओगे
वृन्दावनकी कुन्ज गलिनमें राम रचावोगे ॥२॥
छिनछिन सखियनसे दधिमाखनले कब खावोगे
राधा प्यारी शोच करे मन फिर मिल जावोगे ।३।
अखियां तरस रहीं दर्शनको कब दिखलावोगे
ब्रह्मानंद हमारे मनकी आस पुरावोगे ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग रासड़ा तर्ज--मांड जाऊं रे सांवरिया तोपर)

हरिभजन करोरे नर नारियांरे
मिटे जन्ममरणकी खुवारियांरे ॥ टेक ॥
मानुष तन दुर्लभ है भाई । भजन बिना विरथा चलजाई । गया वक्त नहि आवे दूजी वारियांरे १
बालापण खेलनमें जावे । जोबन काम कला मन भावे । बूढ़े तनमें लागे घणी बिमारियांरे २
यह संसार सराय तमाशा । मूरख करे भोगकी आशा । सिरपे काल खड़ी है करे तियारियांरे ३
सुतदारा धन मीत पियारे । कोई न जावे संग तुमारे । ब्रह्मानंद जगतको झूठी यारियांरे ४

(राग रासड़ा)

हरिभजन करे तो सुख पायगारे
नहिं तो जनम जनम भटकायगारे ॥ टेक ॥
भवसागरमें नीर अपारा । हरिका नाम जहाज सुखारा । जपे जो निश्चय धार पार लगायगारे १
मायाजाल बड़ा है भारी निकलनकी नहिं दूजी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

बारी। मानुषतन जब छूटे फिर पछतावगारे २
चार दिवसका जगमें डेरा। क्या करता है मेरा
मेरा। खाली आया था फिर खाली जायगारे ३
सकल जगतका कर्ता स्वामी घटघटका प्रभुअंतर-
यामी। ब्रह्मानंद सुमर नर दुख मिटायगारे ४

(राग रासड़ा)

हरिचरणकमल चित लावनारे
फिर मानुष जनम नहिं आवनारे ॥ टेक ॥
मैथुन नींदखान अरु पाना। यह सब जीव स्वभाव
समाना। नरतनमें कुछ करले कर्म सुहावनारे १
गर्भवासमें किया करारा। अब क्यों प्रभुकानाम
बिसारा। झूठे जग व्यवहार देख भुलावनारे २
मंदिर महल अटारी डेरे। क्या करता है मेरे
मेरे। चार दिवसका रहना आखिर जावनारे ३
तीरथ दान बरत अरु पूजा। भजन समान उपाय
न दूजा। ब्रह्मानंद विचार मोक्षपद पावनारे ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(राग रासड़ा)

चलो चलो सखियां मिल जांइयेरे ।
सतसंगतमें हरिगुण गाइयेरे ॥ टेक ॥

संतसंतमें लाभ घनेरा । जन्म जन्मका मिटे अंधेरा परमेश्वरका दर्शन घटमें पाइयेरे ॥ १ ॥

सतसंगत महिमा अतिभारी । ऋषि मुनि वेद पुराण पुकारी । ज्ञान विवेक विचार सदा मनलाइयेरे ॥ २ ॥ चलो०

करे हजार जतन जो कोई । सतसंगत बिन ज्ञान न होई जप तप संयम साधन सफल कराइयेरे ॥ ३ ॥ चलो०

पापी नीच मूढ नर नारी । सब सुधरे सत संगत धारी । ब्रह्मानंद मनुष तन नाहीं गमाइयेरे ॥ ४ ॥ चलो०

आवो आवो सखि बात बिचारियेरे ।
इस मानुषजनमको सुधारियेरे ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जिम अंजलिका जावे पानी । दिन दिन उमरा जाय बिहानी । हरिका नाम सुमर कर काल गुजारियेरे ॥ १ ॥ आवो०

स्वप्न समान जगत सब जानी । हर्ष शोक मनमें नहि आनी । प्रभुका ध्यान सदा हिरदेमें धारियेरे ॥ २ ॥ आवो०

स्थावर जंगम जग नर नारी । परमेश्वरकी रचना भारी । ऊंच नीच सब मनसे भेद निवारियेरे ॥ ३ ॥ आवो०

सतगुरु शरण गही दृढ़ मनमें । परब्रह्म खोजो निज तनमें । ब्रह्मानंद सकल भवबन्धन टारियेरे ॥ ४ ॥ आवो०

सुनो सुनी सखी ज्ञान बिचारणांरे
भवसागरसे पार उतारणारे ॥ टेक ॥

पांच तत्वकी देह बनाई । क्षणभंगुर जड़ रूप कहाई । सुख दुख जीवन मरण धर्म तन

Kurukant Sharma Collection, Rajasthan

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

कारणारे ॥ १ ॥ सुनो०

ईश्वर अंश जीव अविनाशी । चेतनरूप परम सुखराशी । निर्गुण निर्मल अचल सदा निर्धारणारे ॥ २ ॥ सुनो०

घटजल सागरजल नहि दोई । ईश्वर जीव भेद नहि कोई व्यापक पूरण ब्रह्म अखंड निहारणारे ॥ ३ ॥ सुनो०

सीपमांहि निज रजत निहारा । भिन्न मृगतृष्णा जलकी धारा । ब्रह्मानंद झूठ सब जगत पसारणारे ॥ ४ ॥ सुनो०

(राग झिला ठुमरी ताल ३)

दे दर्शन मोहे आज सांवरिया
बिन दर्शन मन धीर न धरिया ॥ टेक ॥

सांवरी मूरत मेरे दिल में समाई । खान पान तन सुध बिसराई । कलन पड़त निशदिन पल घड़ियाँ ॥ १ ॥ दे द०

जिम चातक [illegible] बिन होई । [illegible] बिन

irkant Sharma Collection, Rajasthan

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मम भति सोई। तड़फ रही बिन नीर मछलिया ॥ २ ॥ दे द०

मेरे अवगुण नाथ बिसारो। कर किरपा मम धाम पधारो। जनम जनम की मैं दास तुमरिया ॥ ३ ॥ दे द०

ब्रह्मानंद सरसकी प्यासी। करुणा करो जान निज दासी। बारबार येही मांग हमरिया ॥४॥

हरिका भजन कर ले री मेरी मतिया
भजन बिना न मिलेरी शुभ गतिया ॥ टेक ॥

क्या विषयोंमें फिरत भुलाना। अन्तकाल सब नरक निशानी। जावत बीच काल दिन रतिया ॥ १ ॥ हरि०

जग दुर्लभ मानुषतन पाया, हरिके भजन बिन काम न आया। जिम निष्फल दीपक बिन पतिया ॥ २ ॥ हरि०

प्रीतम है तेरे तन अंदर। क्या खोज बन पर्वत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

फंदर। उलट देख घटमांहि सुरतिया ॥ ३ ॥ ब्रह्मानंद बचन हितकारी। छोड़ जगतकी झूठी यारी। हरि चरणनमें करो नित रतिया ॥ ४ ॥ हरि०

(जिला ठुमरी ताल ३)

अबतो सुनो प्रभु अरज हमरिया।
चरण पड़ा मैं आय तुमरिया ॥ टेक ॥
सकल ज़गत के पालक स्वामी घटघटके प्रभु अंतरयामी। तुम सागर जगजीव लहरिया ॥१॥ पापहरण तुम नाम निरंजन माया मोह जाल भयभंजन। गावत सुरनर मुनिमनवरिया ॥२॥ मैं मतिमंद सकल गुणहीना जपतप योग भजन नहि कीना। दीन जानकर फेर नजरिया ॥३॥ ब्रह्मानंद कहे कर जोरी भक्तिदान दीजे प्रभु तोरी। जन्ममरणदुख संकट हरिया ॥४॥

(जिला ठुमरी ताल ३)

अब तो सुमर नर रामचरणको

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जन्ममरणदुख दूर करणको ॥ टेक ॥
चौरासी लख भटकाइ आया जगमें दुर्लभ नरतन पाया क्यों खोवे इस परम रतनको ॥१॥
श्रवण सुने नहि नैन न सूझे बुद्ध क्या कोई बात न बूझे। क्या विरथा भटकावत मनको ।२।
आज गया जैसे कल जावे बीता बखत फिर हाथ न आवे। करले वेग विचार जतनको ।३।
ब्रह्मानंद कहे हित बाणी प्रभुकी शरण पड़ोरे प्राणी। भवसागरजल पार तरणको।४।

(जिला ठुमरी ताल ३)

अब तो तजो नर रति विषयनकी
करले फिकर परलोक गमन की ॥ टेक ॥
बालपणा जिम गई जुवानी सुन्दर काया भई पुरानी। तदपि मिटे नहि लालच मनको । १ ।
जरा दूत यमराज पठाया रोग फौज संग लेकर आया। मूरख आश करे क्या तनकी
स्वारथ देख करें सब प्रीति सकल जगतकी है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

यह रीति। छोड़ ममत धन धाम सुतनकी ॥३॥ ब्रह्मानंद वचन सुन लीजे निशदिन हरि चरणन चित दीजे। पाश कटे तेरी जनम-मरणकी ॥ ४ ॥ अब तो०

(गजल ताल ३)

तेरी शरणमें आयके फिर
आश किसकी कीजिये ॥ टेक ॥
नहिं देख पड़ता है मुझे दुनियामें तेरी शानका
गंगा किनारे बैठके किम कूपका जल पीजिये १
हरगिज नहीं लायक हूँ मैं गरचे तेरे दरबारका
मेरी खताको माफ कर दीदार अपना दीजिये २
पतित पावन नाम सुनके मैं शरण तेरी पड़ा
सफल कर इस नाम सुनके मैं शरण तेरी पड़ा
सफल कर इस नामको अपना मुझे करलीजिये ३
मिलता है ब्रह्मानंद जिसके नाम लेनेसे सही
ऐसे प्रभुको छोड़कर फिर कौन से हित कीजिये ४
जो भजे हरिको सदा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सोई परमपद पायगा ॥ टेक ॥
देहके माला तिलक अरु छाप नहि किस कामके
प्रेमभक्तिके बिना नहि नाथके मन भायगा १
दिलके दर्पणको सफा कर दूर कर अभिमानको
खाक हो गुरुके कदमकी तो प्रभु मिल जायगा २
छोड़ दुनियाके मजे सब बैठकर एकांतमें
ध्यानधर हरिके चरणका फिर जनम नहि आयगा
दृढ़ भरोसा मनमें करके जो जपे हरिनामको
कहता है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद बीच समायगा ॥४॥

(गजल ताल ताल ३)

दे पिया दर्शन मुझे तेरा वियोग सता रहा ।टेक।
छोड़कर घरमें मुझे तुम जा बसे परदेस में
यह मेरा दिनचारका जोबन मुफतमें जा रहा ॥
खाना व पीना सोवना घर कामकाज भुलादिया
दिनरात मनमेरा तेरे मिलनेकी आश लगा रहा ॥
तेरा कहा माना नहीं यह भूल मेरी है सही
अबतो दयाकर माफ कर दिल है मेरा पछता रहा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जानकर दासी सदा अपनी मुझे मिलवाइये
ब्रह्मानंद शरण पड़ा कर जोड़ अर्ज सुना रहा ४

(गजल ताल ३)

मानले कहना हमारा मनकी लालच छोड़ दे ।टे.।
चार दिनकी जिंदगी आखिर यहाँ से जायगा
सब तरफसे दिल हटा हरिके चरणमें जोड़दे ।१।
यह सभी स्वारथ भरे जिनको पियारे जानता
भजन कर प्रभुका सदा सबसे परीती तोड़दे ।२।
बालकपणा जोबन गया बूढ़ा हुआ मरणे लगा
अब तो मूरख चेतकर विषयोंसे मनको मोड़दे ।३।
यह तेरा मानुष जनम पलपलमें बीता जारहा
ब्रह्मानंद मिले नही फिर जो तुं लाख कराड़दे ।४।

(गजल ताल ३)

देखले नजरोंसे प्यारे ईशका दरबार है ।। टेक ।।
भूमी गलीचा है बिछा आकाश तम्बु सुहावना
रवि चंद दीपक रोशनी सब वृक्ष बाग बहार है १
नदियां फुवारें चल रहे पंखा पवन झूले सदा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सागर सरोवर शोभते सब पर्वतोंकी दिवार है २
न्यायकारी आप ईश्वर जीव लोक सभा भरी
राजा व रंक समानसे सुनता सभीकी पुकार है ३
स्वर्ग भूमि इनाम सुन्दर नरक जेल जगा बनी
ब्रह्मानंद मिले सभी फल कर्मके अनुसार है।४।

(गजल ताल ३)

ज्ञान दे गुरुदेवने मेरे दिलका
भरम मिटा दिया ॥ टेक ॥
आशा था देखनको जिसे मथुरा बनारस द्वारका
सोई चेतनदेवको घटमें मेरे दिखला दिया ॥१॥
इस नजरसे जगतको मैं देखता था जुदा जुदा
जीवजून अनेकमें मुझे एक रूप बता दिया ।२।
जगत सांचा मानके फिरता था मैं भटका हुआ
स्वप्ने समान विचारके सब नाशरूप जता दिया ३
सुख दुःख भूख पियास जीवनमरण धर्म शरीरके
ब्रह्मानंद स्वरूपको करके जुदा दरसा दिया ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE

(भजन राग—मारवाड़ी तर्ज-मूंदड़ी)

राजा दशरथके महलोंमें
जन्म लिया श्रीरामजी ॥ टेक ॥
माता कौशल्याके जाये सुन्दर बालकरूप सुहाये
भूमीभार हरणको आये मिलकर सखियां गावें
गीत घरघर आठों यामजी ॥ १ ॥ राजा०
विश्वामित्र संगले आया उसका पूरण यज्ञ कराया
शंकर धनुष मरोड़ गिराया मारा सब राजोंका मान
जनकसुता सुखधामजी ॥ २ ॥ राजा० ॥
दशरथ वचन मान रघुराई वनको गये संगले भाई
रावण सीता गई चुराई हनुमत जाय जलाई
लंक कीनो पूरण कामजी ॥ ३ ॥ राजा० ॥
बीच समुन्दर पुल बनवाई लंका जाकर करी लड़ाई
रक्षस सेना मार गिराई देकर राज्य विभीषण
आये अवधपुरी विश्रामजी ॥ ४ ॥ राजा० ॥

(भजन राग—मारवाड़ा)

देखो नंदमहरके घरमें प्रगटे कृष्ण मुरारजी टेक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मथुरा मातदेवकी जाये गोकुल यसुमती पुत्र कहाये
धर्महेत अवतार धराये गोपी गोपग्वाल सब
मिलकर गावें मंगलचारी ॥ १ ॥ देखो० ॥
दत्य वकासुरको धरमारा कालीनागनाथ करडारा
अपने करपर गिरधारा खेंचे कंसराजके केश
डारा धरणी मारजी ॥ २ ॥ देखो नंद०
जमुना तटपर धेनु चराई वृन्दाबनमें रास रचाई
द्वारा नगरी जाय वसाई मित्र सुदामा महल रचाई
बनके अर्जुनके रथवाही कौरवसेना नाश कराई
यादवकुल परमास खपाई प्रभजी आप धारे
धाम भूमीभार उतारजी ॥ ४ ॥ देखो नंद०

(भजन राग मारवाड़ी)

प्रभुजी राखो मेरी लाज शरण पड़ी हुँ तेरियां ।टेक।
दुष्ट दुशासन भुजा पसारे मेरे तनसे चीर उतारे
पांडव बैठे सन्मुख सारे चारों तरफ खड़े सबलोक
बीच सभाके घेरियां ॥ १ ॥ प्रभुजी०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तुम हो दीनबंधु अविनाशी सब जग पूरण घटघट वासी तुमरो नाम परम सुखराशी निशदिन भक्तन के हितकार सुनिये विनती मेरियां ॥२॥ प्रभु०

अबतो सकल जगतके माहीं मेरा तुमहीं एक सहाई दूजा कोई सहायक नाहीं मेरी बेग खबरलो नाथ कहां लगाई देरियां ॥ ३ ॥ प्रभुजी०

भीषम द्रोण कर्ण बलधारी सबकी लोभहेत मति मारी धर्म अधर्म न करें विचारी ब्रह्मानंद सदा मैं तेरे चरण कमलकी चेरियां ॥ ४ ॥ प्रभु०

(भजन राग-मारवाड़ी)

जागो जागोरे मुसाफिर उठकर
करो तियारियां ॥ टेक ॥

सोते सकली रैन बिहाई वेला दिन चढ़नेकी आई तेरे नैनन नींद समाई अब तो चेत पड़ा क्या गाफिल टांग पसारिया ॥ १ ॥ जागो जागो०

यहतो है परदेश बिगाना इसमें तेरा नही ठिकाना तूं क्यों भूला फिरे दिवाना तैने किस विध अपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

घरकी याद बिसारिया ॥ २ ॥ जागो० ॥
तुझकोजानादूरनगरमें तूं क्योंअटका बीच सफरमें
तेरे साथी पहुँचे घरमें तैंने आलसके वश होकर
बिरथा रात गुजारिया ॥ ३ ॥ जागो जागो०
तेरा मारग बहुत कठिन है तेरे पास नहीं कुछ धनहै
करले शोच विचार जतन है ब्रह्मानंद सुमर जग-
दीश्वर विपता मेटे सारियां ॥ ४ ॥ जागो०

(भजन राग-मारवाड़ी)

अब तो सुनिये मेरी नाथ
विनती दीनदयालजी ॥ टेक ॥
तुमने सकल जगत उपजाया नानाविध सबजीव
बनाया अचरज प्रबल तुमारी माया तेरो अंचल
आवे पार पूरणरूप विशालजी ॥१॥ अब तो०
जग में मानुष देही पाई आकर करी न कछु कमाई
बिरथा विषयों बीच गवाई कीनो नहीं तुमारी ध्यान
फसिया मायाजालजी ॥ २ ॥ अब तो० ॥
भवसागरमें नीर अपारा मैं तो डूब रहा मझधारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मेरा कोई न ओर सहारा करके करुणा अपनी वेग लीजे मुझे निकालजी ॥ ३ ॥ अब तो० ॥
जो जनशरणतुमारीआवेनिश्चयमोक्ष धाम को जावे फिरकर गर्भवासनहिं पावे ब्रह्मानंद तुमारो दास जान करो प्रतिपालजी ॥ ४ ॥ अब तो० ॥

(गजल ताल ३)

दया की नजरोंसे देख मुझको
मैं नाथ तेरी शरण में आये॥ टेक ॥
समस्त दुनियांका एक मालिक तु ही है पालक चराचरोंका। बना है तेरा जगत तमाशा मैं देख करके तुझे भुलायो ॥ १ ॥ दया०
संसारसागर गंभीर पानी नजर न आवे मुझे किनारा। न संग साथी सहायकारी मैं बीच लहरोंके हुं डरायी ॥ २ ॥ दया०
बिछा है मायाका जाल भारी न कोई निकलनकी है दुवारी। छुड़ा दे मुझको पसार भुजाको जन्मजन्मोंसे हुं फसायो ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

नहीं है तेरे समान दूजा जगतमें सारेमें है दयालु। ब्रह्मानंद बचाले मुझको मैं काल चक्करसे हुं डरायो ॥ ४ ॥ दया

(गजल ताल ३)

जिधरको देखूँ जहांको देखुं
तूँ एक मुझको दिखा रहा है ॥ टेक ॥
जमीपे तुं है गगनमें तुं है पवनमें पानी अगनमें पूरण। वो चाँद सूरज सितारे बिजलीमें तेज तेरा समा रहा है ॥ १ ॥
नदी समुन्दर पहाड़ जंगल न खाली तुझसे जगा है कोई। चरा अचरमें वो नार नरमें स्वरूप तेरा सुहा रहा है ॥ २ ॥
मिले न आदि न अन्त मुझको न मध्य तेरा दिशामें चारों। समस्त दुनियांको तुं निरंतर कलासे तेरी चला रहा है ॥ ३ ॥
वेद ग्रन्था न सर्म पंथा ऋषि मुनिश्वर पार पावे। ब्रह्मानंदा आनंदा जगतमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सारेमें छा रहा है ॥ ४ ॥

(गजल ताल १)

जो गर्भका इकरार था
तुमे याद होके न याद हो ॥ टेक ॥

उलटे बदनमें लटकना फिर लख चोरासी भटकना तब सोच कर सिर पटकना तुमे याद होके न याद हो ॥ १ ॥ जो०

पिछले जनमका संभारना सब कर्मका वो विचारणा । फिर ईश ईश पुकारना तुमे याद होके न याद हो ॥ २ ॥ जो०

विषयोंसे दिलको हटावना हरिके चरणमें लगावना । किसी जीवको न सतावना तुमे याद होके न याद हो ॥ ३ ॥ जो०

उस बातका बिसरावना दुनियांकी मौज उड़ावना । ब्रह्मानंद फिर दुख पावना तुमे याद होके न याद हो ॥ ४ ॥ जो०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल ताल ३)

जो ईशका उपकार था
तुमे याद होके न याद हो ॥ टेक ॥
करो गर्भमें तेरी पालना फिर दुखसे बाहिर निकालना। चूचियोंमें दूधका डालना तुमे याद होके न याद हो ॥ १ ॥ जो०
सूरज वा चांद सितार है जल पवन भोग अपार है। तेरे वासते यह बाहर है तुमे याद होके न याद हो ॥ २ ॥
नरजन्म यह बहु कामका तुझको दिया बे दामका। अब भजन उसके नामका तुमे याद होके न याद हो ॥ ३ ॥ जो०
हरिके भजन बिन बेवफा तुझको मिले न कबी-नफा। ब्रह्मानंदका कहना सफा तुमे याद होके न याद हो ॥ ४ ॥ जो०

(गजल ताल ३)

जो नामका खलाफ है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

तुमे याद होके न याद हो ॥ टेक ॥
जब दैत्य चाबुक मारिया महलाद नाम उचारिया। नखसे असुरको विदारिया तुमे याद होके न याद हो ॥ १ ॥ जो०
ध्रुवको पिता निकला दिया हरिनाममें मन लादिया। उसे अचल धाम दिला दिया तुमे याद होके न याद हो ॥ २ ॥ जो०
गजराजपे विपता पड़ी मनमें जपा जो हरि हरि। ग्रह मारके मुकती करी तुमे याद होके न याद हो ॥ ३ ॥ जो०
द्रुपदीकी लाज उतारिया जब कृष्ण कृष्ण पुकारिया। ब्रह्मानंद चीर वधारिया तुमे याद होके न याद हो ॥ ४ ॥

(गजल राग पहाड़ी)

जो मौतका दिन आगया
तुमे याद होके न याद हो ॥ टेक ॥
दुनियामें दिलको मिला दिया [illegible] [illegible]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भुला दिया । मानुष जनमको रुला दिया तुमे याद होके न याद हो ॥ ३ ॥ जो०

जब रोग आय सतायगा खटयामें तुझको लिटायगा । कोई कार काम न आयगा तुमे याद होके न याद हो ॥ २ ॥

सुत मीत बांधव नारियां धन माल महल अटारियां । तेरी छूट जायगी सारियां तुमे याद होके न याद हो ॥ ३ ॥ जो०

यमदूत लेकर जायगा तुझे नरक बीच गिरायगा । ब्रह्मानंद फिर पछतायगा तुमे याद होके न याद हो ॥ ४ ॥

(गजल राग पहाड़ी)

कैसी मधुर श्याम आज बंशी बजाई तैने ब्रज ग्वालनकी सबी होश भुलाई तैने ॥टेक॥

यमुनाके तीर बिमल नीर बड़ी टेर सुनाके तजके घर बार गोप नार बुलाई तैने ॥ १ ॥

सखियनके संग रंग नाच करे कुंजनमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

वृन्दावन धाम सरस रास रचाई तैने ॥ २ ॥
सुनके मधुर गान सुर बिमान चढ़े आय रहे
मुनियों का छुटा ध्यान अजब तान सुनाई तैने ३
घनके मृग पक्षी सबी मौन हुये सुन सुनके
ब्रह्मानंद चंद किरण रात सुहाई तैने ॥ ४ ॥

(गजल राग पहाड़ी)

राम तेरा नाम सदा सदा याद दिलाना मुझको
दुनियांके कारबारमें निशिदिन भुलाना मुझको
जान दयासिंधु तुझे दीनन हितकार सदा
शरण तेरी आय पड़ा दास वनाना मुझको ।१।
नाम पतितपावन जग बीचमें है तेरा
जन्म जन्म पापके बंधनसे छुड़ाना मुझको ॥२॥
मोह नदी नीर भरा तीर नजर ना आवे
डूब रहा धार प्रभु पार लगाना मुझको ॥३॥
तेरे विना कोई नहीं विश्वमें पालक मेरा
ब्रह्मानंद चरण कमल बीच लगाना मुझको ।४।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गजल राग पहाड़ी)

कैसे करूं मैं तो प्रभ आज बड़ाई तेरी
ऋषि मुनियोंने गति जान न पाई तेरी ॥टेक॥
भूमि रवि चंद गगन सागर गिरिवर तारे
अचरज सब देख पड़े विश्व बनाई तेरी ॥१॥
जलके कतरेसे बदन खूब बनाया तैने
वर्णन कर कौन सके नाथ सफाई तेरी ॥ २ ॥
सुरनर पशु पक्षी सबी जीव हैं बालक तेरे
चौदें भुवन बीच सभी वस्तु जमाई तेरी ॥३॥
सकल जगत बीच तेरा रूप प्रभु है पूरण
ब्रह्मानंद मनमें सदा आश लगाई तेरी ॥ ४ ॥

(गजल राग पहाड़ी)

मैं तो तेरा दास प्रभु मुझको भुलाया कैसे
दीनबंधु दीनानाथ नाम धराया कैसे ॥ टेक ॥
गजको जल बीच जभी ग्राहने आकर पकड़ा
आप पलक बीच कठिन बंध छुड़ाया कैसे ॥१॥
दानवने प्रह्लादको जब खंभसे बाबुक मारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बनकर नरसिंह दैत्य फाड़ गिराया कैसे ॥२॥
द्रुपदीकी लाज सभा बीच लगे लेने जबी
खेंच खेंच हार गये चीर बढ़ाया कैसे ॥ ३ ॥
ध्रुवने वन जाय जपा नाम तुमारा दिलसे
ब्रह्मानंद करके दया राज्य दिलाया कैसे ॥४॥

(गजल राग पहाड़ी)

ईश तेरा रूप मुझे अब तो दिखा दे प्यारे
दिलमें लगी आश मेरी प्यासमिटादे प्यारे ॥टेक॥
ढूँढता फिरता हुँ तुझे मैं तो सदा बनवनमें
कौन जगा खास तेरा बसा बता दे प्यारे ॥१॥
कहते हैं मुनिराज सबी विश्वमें तुं है पूरण
घटघटमें तेरी जोतका दर्शन तो दिखादे प्यारे २
सुर नर असु जीव तेरे अंश सबी हैं जगमें
भेदके पड़देको मेरे दिलसे हटा दे प्यारे ॥१३॥
तेरी महिमाका सबी वेदवचन गान करें
ब्रह्मानंद नाम तेरा दिलमें बसादे प्यारे ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(जिला रेखता ताल दादरा)

अये राम तेरे नामका मुझको अधार है
अंधेको जैसे लकड़ी तनका सहार है ॥ टेक ॥
तप योग यज्ञ और कर्म बनपड़ो नहीं
कलियुगमें तेरे नामकी महिमा अपार है ॥ १ ॥
लिखने से रामनामके जलमें शिला तरी
कैसे मनुज न जा सके भवसिंधु पार है ॥ २ ॥
शबरीके पादनीरसे सरवर विमल हुआ
छूनेसे चरणके तरी गौतमकी नार है ॥ ३ ॥
करके भरोसा मनमें राम नाम सुमर ले
ब्रह्मानंद मिटे जन्म मरण बार बार है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

शरण पड़ेकी लाज प्रभु राख लीजिये
करके दया दयाल गुना माफ कीजिये ॥टेक॥
गरचे कपूतहुँ पिता न दूर कर मुझे
चरणकमलमें आसरा मुझको भी दीजिये ॥१॥
तेरी खुशीका काम कोई बन पड़ा नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अपने बिरदको देख जरा दिलमें रीझिये ॥२॥
तेरे बिना पालक मेरा नहीं है दूसरा
स्वारथके सबी लोक हैं किसपे पसीजिये ॥३॥
दिलबीच लगरही सदा दर्शनकी लालसो
ब्रह्मानंद मेरी बेनती अब तो सुनिजिये ॥ ४ ॥
ईश्वर तेरे दरबार की महिमा अपार है
बंदा न सके जान तेरा क्या विचार है ॥टेक॥
पृथिवी जलोंके बीचमें किस आसरे खड़ी
सूरज वा चांद घुमते किसके अधार हैं ॥ १ ॥
सागर न तीर लांघते सूरज दहे नहीं
चलती हवा मर्यादसे किसके करार है ॥ २ ॥
भूमि बिछा है बिस्तरा नदियोंमें जल भरा
चलती हवा दिन रातमें जीवन अधार है ॥३॥
फल फूल अन्न शाक कंद मूल रस भरे
घृत दूध दही खान पान की बहार है ॥४॥
पिता है तुं दयालु तेरे बाल हम बसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्मानंद तुझे धन्यवाद बार बार है ॥ ५ ॥

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर दयानिधान दया दासपे करो
दीननके नाथ जान तेरी शरणमें पड़ी ॥टेक॥
दुनियाकी सैरमें प्रभु तुजको भुलादिया
करके कसूर माफ मेरे हाथ सिर धारो ॥१॥
किये अनेक पाप पेटभरणकाज मैं
सब दोषको बिसार प्रेमकी नजर भरो ॥२॥
विषयोंके लोभसे फसा मायाके जालमें
बंधनको मेरे काट सबी पाप परिहरो ॥३॥
भवसिंधुमें पड़ाहुँ मुझे पार कीजिये
ब्रह्मानंद करे अर्ज तेरे द्वारपे खड़ी ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

ईश्वर तेरा स्वरूप विश्वका अधार है
तेरे हुकुमसे होरहा सब कारबार है ॥ टेक ॥
सूरज वा चन्द्रमा सदा उगते हैं नेमसे
दिनरात घड़ी पलका कालका शुमार है ॥ १ ॥

Kirtikar Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पड़ती है धूप शीत वृष्टि बकतपे सदा
फलते हैं वृक्ष लता अपनी बार हैं ॥ २ ॥
बालक जवान वृद्धपणा होत कालसे
मरणा न देहका कोई सके निवार है ॥ ३ ॥
तप योग यज्ञ जतन सबी कठिन हैं बड़े
ब्रह्मानंद जगत बीच तेरा भजनसार है ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश दासपे दया करोगे या नही
सब पाप ताप को मेरे हरोगे या नहीं ॥टेक॥
शरणमें तेरी आनपड़ा जान आसरा
सिरपे मेरे अब हाथ धरोगे या नहीं ॥ १ ॥
भवसिंधु है अपार पार तीर दूर है
पकड़के बांहको मेरी तरोगे या नहीं ॥ २ ॥
व्यापक है तेरा रूप सबी बिश्वमें भरा
हिरदेमें मेरे आयके बिचरोगे या नहीं ॥ ३ ॥
जावुं कहाँ मैं छोड़ तुझे दूसरी जगा
ब्रह्मानंद प्रेमकी [illegible] भरोगे या नहीं ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश मेरी वेनती अब तो सुनो सही
दिन बीत गया बातमें अब रात आ गई ॥टेक॥
मिली मनुजकी देह तेरे भजनके लिये
घर काम काज बीच तेरी याद ना रही ॥ १ ॥
बालकथा फिर जवान हुआ बिरध होगया
मनकी मिटी न आश होत है नईनई ॥ २ ॥
आयाथा लोभकेलिये दुनियाकी सफरमें
चारोंने लिया लूट पास खरच भी नहीं ॥ ३ ॥
जनमो मरणके फेरमें पड़ाहुँ मैं सदा
ब्रह्मानंद काटो फंद नाथ देरियां भई ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये विश्वपति नाथ पकड़ हाथ हमारा
शरणमें पड़ा आन तेरा जान सहारा ॥ टेक ॥
काल की नदिया जो मोह नीर से भरी
मद काम क्रोध लोभ बसें ग्राह अपारा ॥ १ ॥
सब देव दनुज मनुज जीव जाल हैं बहे

Kirtikant Sharma Collection, Rajafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तेरी दया विना न मिले पार किनारा ॥ २ ॥
क्षणभंग है शरीर मर्त्यलोकमें सही
मायाके जालमें फसा है जीव बिचारा ॥ ३ ॥
तुमने रचा है विश्व तुं ही पालना करे
ब्रह्मानंद तेरे नाम बिना झूठ पसारा ॥ ४ ॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश तेरा नामसर्व पापहरण है
भवसिंधु में पड़े हुयेको पार तरण है ॥ टेक ॥
कारण समस्त विश्वका धारण करे सदा
सब जीव जातका प्रभु तुं एक शरण है ॥१॥
तेरे बिना खाली नहीं जगा है जगतमें
घट घटमें तेरी ज्योतका परकाश करण है ॥२॥
तेरे संकल्प से बनी रचना नई नई
सबका तुं ही पिता दयाल विश्वभरण है ॥३॥
तेरे कृपाकटाक्षसे दुख दूर हों सबी
ब्रह्मानंद मोक्ष धाम तेरा विमल चरण है ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(रेखता ताल दादरा

अये ईश तेरी बेनतीको मान मान मान
तेरे चरणका दास मुझे जान जान जान ।।टेक
महिमा तेरी अपार नहीं पार वार है
सब वेद ग्रंथ पंथ करें गान गान ।। १ ।।
व्यापक है तेरा रूप सबी विश्वमें सदा
जाने न कोई जीब विना ज्ञान ज्ञान ज्ञान ।।२।।
मालिक सबी जहानका पालक भी है तुंही
दाता तेरे समान जगतमें न दूसरा
ब्रह्मानंद तेरी भक्ति करो दान दान दान ।।४।।

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश तुझे नमस्कार वार बार है
सब जगत बीच एक तेरा रूप सार है ।। टेक ।।
कैसी रची है विश्व कौनसे सामानसे
कोई न सके जान तेरा कारबार है ।। १ ।।
भूमी समुद्र चांद सूर्य गमन गिरि नदी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सब अचर चर जहानका तुंही अधार है ॥२॥
सकल जगतके बीचमें बाहिर भी है भरा
मिले न तेरा ऊंच नीत अंत पार है ॥३॥
तेरी सहायता से सभी जीव जी रहे
ब्रह्मानंद तेरा नाम मोक्ष धाम द्वार है ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

अये ईश तुझे नित्य धन्यवाद हमरा
सब विश्वका तुंही है प्रभु एक अधारा ॥टेक॥
तुझने दिया दयाल हमें देह मनुजका
सब जीव जूनसे बड़ा है प्राण पियारा ॥१॥
सब इन्द्रियां हमारी बड़ी कुशल काममें
हमरे लिये रचा है विषयभोग नियारा ॥२॥
भूमी अगन समीर नीर गगन तारका
रविचंद्र सबसे दे रहे हो हमको सहारा ॥३॥
पापी हैं हम बड़े जो तेरा नाम न जपें
ब्रह्मानंद करो माफ बाल जान हमारा ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(रेखता ताल दादरा)

शंकर तेरी जटामें चले धार गंग है
उठते हैं बाह बार बारिके तरंग है ॥ टेक ॥
गलेमें मुंडमाला है कानोंमें हैं कुंडल
खाने को कंद मूल फल पीनेको भंग है ॥१॥
मृगछाल कमरमें कभी वृषराजपे चढ़े
मस्तकमें चन्द्रकी कला विभूति अंग है ॥२॥
डमरू त्रिशूल हाथ में गिरजा है संगमें
त्रिनेत्र भुजा चार कंठ नील रंग है ॥३॥
कैलासमें निवास है गण साथमें रहें
ब्रह्मानंद अपने दासके सदाही संग है ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

अये कृष्ण तेरे नामपे कुर्बान हो रही
सूरतको तेरी देख परेशान हो रही ॥ टेक ॥
सिर पर वो मोरकी मुकुट कानोंमें हैं कुंडल
वो अधर बन्सरीकी मधुर तान हो रही ॥१॥
फूलोंकी माल है गलेमें तिलक भाल है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मुखचंद मंदहासमें बेजान हो रही ॥२॥
नहीं खानपानकी सुधी न लोकलाज है
तेरे दीदारके लिये हैरान हो रही ॥३॥
न भूलिये मुझे दीननके नाथ तुम सुने
ब्रह्मानंद तेरे दर की मैं दरबान हो रही ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

ब्रजराज तेरे कान गई तान हमारी
बंसीकी सुनी आज जो आवाज पियारी ॥टेक॥
संगमें हैं ग्वालबाल नंदलाल सांवरो
जमुनाके आस पास रची रास बिहारी ॥१॥
सिर मोर मुकुटधार गले हार पहनके
करते हैं नाच रंग सखासंग मुरारी ॥२॥
दे देके मधुर तान करे गान मनोहर
सुनके चली ब्रजनार सदन कार बिसारी ॥३॥
हरिका मुखारविंद देख चंदको छवी
ब्रह्मानंद मन आनंद भई गोपकुमारी ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(रेखता ताल दादरा)

अय राम तेरा नाम परमधाम दुवारा
लेता हूँ आठ याम और काम बिसारा ।टेक।।
दुनियां झूठ कारवार सार है नहीं
सुत भाई बंधु नार न हितकार हमारा ॥१॥
शरणमें पड़ा आनधरूं ध्यान चरणका
प्रभु दीजे भक्तिदान दास जान तुमारा ॥२॥
दया करो दयाल निश्चाल अब सही
हरो मायाका जाल मिटे काल पसारा ॥३॥
तेरे दरसको प्यास मेरी आश पूरिये
ब्रह्मानंद करो नाश मोहपाश अपारा ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

अये राम तेरी शाम छबी दिलमें बस रही
मुखचंदसे सदा मधुर सुधा बरस रही ॥टेक॥
सिरपे सुवर्णका मुकुट रतन जड़ा हुआ
कानोंमें मकर कुंडल मंद मंद हंस रही ॥१॥
गल मोतियोंकी माल तिलक भालमें लगा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मणियोंकी मेखला सुन्दर कटीमें कस रही ॥२॥
हाथों में धनुष बाण है तन पीत पट धरे
शुभ वाम अंग में जनकसुता बिलस रही ॥३॥
भरत के हाथ छत्र है लक्षमन चमर करे
ब्रह्मानंद मेरी जान दरसको तरस रही ॥४॥

(रेखता ताल दादरा) -

नरसिंह तेरा रूप मेरे दिल समा रहा
व्यापकपणा जगमें तेरा सबको बता रहा ॥टेक॥
नरका आकार संगमें मृगराजकी छबी
निकलके थंम बीचसे गर्जन सुना रहा ॥१॥
बिजलीसी जीभकी छटा । आँखें अगन भरी
धरणीपे दैत्यराज को नखसे गिरा रहा ॥२॥
भगतकी करी पालना देवनका दुख हरा
शरणागतोंकी बेनती का फल दिखा रहा ॥३॥
सुमरण करे जहाँ कोई तु है उसी जगा
ब्रह्मानंद तेरे चरणमें मनको लगा रहा ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(रेखता ताल दादरा)

तेरे दिदार के लिए बन्दा हैरान है
सुनते नहीं हो अरज क्यों दयानिधान है ॥टेक
काशी गया दुवारका मथुरामें फिर लिया
मिला नहीं मुझको तेरा असली मकान है ॥१॥
फिरा तेरी तलासमें जंगल पहाड़में
देखा नहीं तेरा किसी जगह निशान है ॥२॥
पूछा जो आलिमोंसे तेरा खास कर पता
रहता है तेरे पास यह उनका बिमान है ॥३॥
कर मिहिरकी नजर मुझे अब दरस दीजिये
ब्रह्मानंद तेरे चरणपे कुर्बान जान है ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

आशक हुआ जो मन तो क्यां माशूक दूर है
दिलमें बसा दिलदारकी चशमोंका नूर है ॥टेक॥
सिरको चढ़ा दिया जभी कदमों पे यारके
घरबारजानमालकी फिर क्या जरूर है ॥१॥
गरचे सरे दरबारमें मुशकिल है पहुँचना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

घायल हुआ हटता नहीं रणबीच शूर है ॥२॥
बाना फकीरी पहनके फिरना जंगल पहाड़
गुरुके चरण को चूमना फिर क्या गरूर है ।३।
दुनियाँकी हवश छोड़दे कर कैद नफसको
ब्रह्मानंद घटमें देखले हाजर हजूर है ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

आशकहूया जो दिलतो क्या दुनियाँकी शरम है
करना इशक का जगतमें नहीं सहजकरम है॥टेक॥
दीपकको देखके पतंग प्रेमवश भया
पड़के अगनमें जलाया क्या शीत गरम है ॥१॥
भ्रमर सुगन्धके लिये फूलनमें जा बसा
फसके कंमलमें रह गया गरचे वो नरम है ॥२।
जाकरके रणमें शूरमा आगे चरण धरे
घायल हुआ पदन नहिं मरणेका भरम है ॥३॥
ईशू तथा मनसूरको शूली चढ़ा दिया
ब्रह्मानंद गई जान वो छोड़ा न धरम है ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(रेखता ताल दादरा)

आशक हूया जो दिल को क्या कायरपणा करे
ऊखल में दिया शीश तो चोटसे क्या डरे ॥टेक॥
माशूकका मिलना बड़ा है कठिन समझले
पावेगा सो दिदार जो जीता हुया मरे ॥१॥
अगर मुकाम यार के जाना जरूर है
जाता है वक्त बीत तो फिर धीर क्या धरे ॥२॥
चाहता है देखना जभी दिलदार को अपने
दुनियाँकी तरफमें सदा फिर क्यों नजर भरे ॥३॥
तृष्णानदी की धारमें जो डूबता फिरे
ब्रह्मानंद वो भवसिंधुनीर पार क्या तरे ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

किस देवताने आज मेरा दिल चुरा लिया
दुनिया की खबर ना रही तनको भुला दिया ॥टेक
रहता था पासमें सदा लेकिन छिपा हुआ
करके दया दयालने पड़दा उठा लिया ॥१॥
सूरज वो था न चाँद था बिजली न थी वहाँ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

एकदम वो अजब शानका जलवा दिखा दिया २
फिरके जो आंख खोलकर ढूंडन लगा उसे
गायब था नजरसे सोई फिर पास पा लिया ३
करके कसूर माफ मेरे जन्म जन्म के
ब्रह्मानंद अपने चरणमें मुझको लगा लिया ४

(रेखता ताल दादरा)

जिसको नहीं है बोध तो गुरु ज्ञान क्या करे
निजरूप को जाना नहीं पुराण क्या करे ॥टेक॥
घटघटमें ब्रह्मजोतका परकाश हो रहा
मिटा न द्वैतभाव तो फिर ध्यान क्या करे ॥१॥
रचना प्रभुकी देखके ज्ञानी बड़े बड़े
पावे न कोई पार तो नादान क्या करे ॥२॥
करके दया दयालने मानुष जनम दिया
बन्दा न करे भजन तो भगवान क्या करे ॥३॥
सब जीव जन्तुओं में जिसे है नहीं दया
ब्रह्मानंद बरत नेम पुण्य दान क्या करे ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(रेखता ताल दादरा)

श्रीरामचंद्र नंदनंदन अब दया करो
शरणमें पड़ो ध्यान तेरो आन आसरो ॥टेक॥
सिरपे सुवर्णका मुकुट मोरों की पांखका
गल मोतियोंकी माल है बनमाल गलधरो ॥१॥
हाथोंमें धनुष बाण हैं बन्सी अधर धरे
जनकसुता है संग रंग राधिका भरो ॥२॥
लंकापुरीमें जायके मथुरा गमन किया
रावणका किया नाश प्राण कंसको हरो ॥३॥
सरजके नीरमें खड़ा यमुनाके तीर पे
ब्रह्मानंद छवी युगल मेरे नैन में फिरो ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

जगतमें एक सार है धरम धरम धरम
करो परोपकारके करम करम करम ॥ टेक ॥
मानुष की देह पाय के हरिनाम ना लिया
बिरथा जनम गया दिया शरम शरम शरम ।१।
तेरे शरीरमें है दिव्य जोत ईशकी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

गुरुके वचनसे समझले मरम मरम मरम ॥२॥
दुनियांकी सबी वस्तु नाशवान थिर नहीं
स्वप्ने समान देखले भरम भरम भरम ॥३॥
व्यापक है सबी विश्व में परब्रह्म जानले
ब्रह्मानंद मिले मोक्षपद परम परम परम ॥४॥

(रेखता ताल दादरा)

कैसे करूं गुरुदेवकी महिमा खरी खरी
सब वेद ग्रन्थ पथमें गायन करी करी ॥ टेक॥
जन्म जन्मकी वडी विषयों की वासना
परब्रह्म ज्ञान बोध से मनमें हरी हरी ॥१॥
देव दैत्य मनुष जीव भेद भावना
सब दूर करके एकता दिलमें धरी धरी ॥२॥
भवसिंधु नीर बीच मेरी नाव फस रही
चरण कमल लहरसे पलमें तरी तरी ॥३॥
घटघटमें पूर्ण रूपको दिखला दिया मुझे
ब्रह्मानंद द्वैतभावना मनसे टरी टरी ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(भजन राग पहाड़ी)

निरंजन पदको साधु कोई पाता है ॥ टेक ॥
मूल द्वारसे खैंच पवनको उलटा पंथ लचाता है
नाभी पंकज इसमें सूती नागन जाय उठाता है ।१।
मेरुदंडकी सीढि बनाकर सुंन शिखर चढ़ जाता है
भ्रमरगुफामें नाथविराजे जगमग जोत जगाता है २
शशि मंडलमें अमृत टपके पीकर प्यास मिटाता है
गगनमहलमें जाकर सोवे सुरतासेज बिछाता है ३
सब कर्मनकी धूनी जलाकर तनमें भस्म रमाता है
ब्रह्मानंद स्वरूप मगन हो आपही आप समाता है४

(भजन राग पहाड़ी)

निरंजन धुनको सुनता है संत सुजान ॥टेक॥
बैठ इकंत जमाकर आसन मूँदलीये दोऊ कान
झीनी धुनमें सुरत लगावे करता नाद पिछान १
घंटाशंख बंसरी बीणा बाजे मधुरी तान
ताल मृदंग नगारा पौंके गर्जन मेघ समान २
दिनदिन सुन सुननाद धुनीको हो वे मन गलतान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्मजोत घटमें दरसावे बिसरे काया मान ३
तनमनकी दुविधा सब मेटे करे निरंतर ध्यान
ब्रह्मानंद मिटे भवबंधन पावे पद निर्वाण ४

(भजन राग पहाड़ी)

निरंजन घरका भेद सुनो सब संत ॥ टेक ॥
नहिंकाशी नहि पुरीद्वारका नहिंगिरिशिखररहंत
नहिंपताल नहिंस्वर्गलोकमें क्योंफिरताभरमंत १
काया नगरी बीच मनोहर त्रिकुटी महल सुहंत
तिसके ऊपर बसे निरंजन जगमग जोत जगंत २
नेत्र बंदकर दृष्टि जमावे निशिदिन ध्यानधरंत
आशन थिरकर साधन कीजे बैठ भवनइकंत ३
पहले पहले रविशशि तारे बिजलीकी चमकंत
ब्रह्मानंद स्वयंभू जाती फिर पीछे दरसंत ४

(भजन राग पहाड़ी

निरंजन माला घटमें फिरे दिनरात ॥टेक॥
ऊपर आवे नीचे जावे श्वास श्वास चल जात
संसारी नर समझे नाहीं बिरथा उमरबिहात १

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सोहं मंत्र जपे नित प्राणी बिन जिह्वा बिन दांत
अष्टपहर में सोवत जागत कबहुँ न पलक रुकात २
हंसा सोहं सोहं हंसा बार बार उलटात
सतगुरु पूरा भेद बतावे निश्चल मन ठहरात ३
जो योगी जन ध्यान लगावे बैठ सदा परभात
ब्रह्मानंद मोक्षपद पावे फेर जन्म नहिं आत ४

(भजन राग पहाड़ी)

निरंजन गुरु का ज्ञान सुनो नर नार ।।टेक।।
क्या खोजे बन पर्वत कंदर क्या खोजे जलधार
तेरे तनमें देव बिराजे उलट सुरत संभार ।।१।।
पांच तत्व की है जड़ काया चेतन जीव अधार
ईश्वरअंश जीवअविनाशी सतचितरूप बिचार ।।२।।
सुर नर दानव पशु पक्षी एक विश्व समाननिहार
अंदरबाहिर घटघट पूरण एक ब्रह्म निर्धार ।३।
ऊँच नीच सब भेद मिटाओ द्वैतभाव सब टार
ब्रह्मानंद सत संगतसे दृढ निश्चयमन धार ।।४।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(भजन राग पहाड़ी)

निरंजन पुरका पंथ कठिन है दूर ॥टेक॥
लाखों योजना पर्वत ऊँचा घाटी विकट करूर
करकर जतन फिरें बहुतेरे पहुँचे विरला शूर १
तेजपुंजमय शिखर बना है चमके अद्भुत नूर
चहुँदिश घोरघटा घन गाजे अनहदंदर २
सूरज चाँद जले जहाँ दीपक नाचें परियाँ हूर
गंगा जमुना निर्मल धारा वेग चले भरपूर ३
गगन मण्डल में तख्त बिछा है बैठे आप हजूर
ब्रह्मानंद जो चलकर जावे पावे मोक्ष जरूर ४

(भजन राग पहाड़ी)

लगाले प्यारे राम भजनसे प्रीत । टेक॥
माता पिता सुत बाँधव नारी सब दो दिनके मीत
परमेश्वर निज बंधु तुमारो सदा रहे संगीत १
अपने अपने स्वारथ लागे यह सब जगकी रीत
परमारथ के साधन कारण सब होवें विपरीत २
सकल जन्म के पाप निवारे हरिका नाम पुनीत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भवसागरके तारण कारण सुमरो मनको जीत ३
तन धन जोबनका मद त्यागो सबमे रहो विनीत
ब्रह्मानंद शरण पड़ प्रभकी सब दुखजावे बीत ४

(राग मांड ताल दादरा)

मेरी विनती सुनो नाथ तेरी शरणमें पड़ो ॥टेक
मात तात भाई बंधु स्वारथ के सब मीत
कोई सहायक है नही रे झूठी जगकी प्रीत ॥तेरी
भवसागरमें भटकिया रे पाया दुःख अपार
अबतो दया करके प्रभु लीजिये मुझे उबार ॥ तेरी
तीरथ बरत पुण्य दान किया नहीं शुभ काज
दास तुमारोजानके नी राखिये मेरी लाज ॥तेरी
अवगुण मेरे ना गिणोजी पतित पावनहार
ब्रह्मानंद तेरे बिना मेरा कौन करे निस्तार ॥तेरी

(राग मांड ताल दादरा)

तेरे उपर बीती जायरे प्राणी राम सुमरले ॥टेक
बूँद बूँद टपकता रे ज्यों अंजलिका नीर
पल पल छिन छिनमें तेरा रे छीजत जाय शरीर १

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

प्राणी राम सुमरले०
हाथी घोड़े पालकी रे दासी दास अनेक
महल खजाना नारियां तेरे संग न जाबे एक २
प्राणी राम सुमरले०
चार दिनाकी जिंदगी रे जासी हंस विलाय
करले जो कुछ हो सके रे फिर पीछे पछताय ३
प्राणी राम सुमरले०
खाली आया जगतमें रे खाली जावन हार
ब्रह्मानंद भजन बिना तेरा झूठा सभी विचार ४
प्राणी राम सुमरले०

(राग मांड ताल दादरा)

जगदीश्वर जगत बीच तेरा नाम सार है ॥ टेक
बड़े बड़े भूपति रे सेनाके सरदार
काल सबोंको खा गया रे रहा न एक अधार ॥
तेरा नाम सार है०
रूपवंती रानियां रे करती नित्य सिंगार
सो तन जर होगये रे दिये चितामें डार ॥ तेरा०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

रावण जैसा शूरमा रे जिनके मन हंकार
भूमीमें सब मिल गयारे पलक न लागी बार ॥
तेरा नाम सार है०
सूरज तारे चंद्रमा जी नश्वर सब संसार
ब्रह्मानंद सदा रहे प्रभु तूं सांचा करतार ॥तेरा

(राग माड ताल दादरा)

नर करलेरे सतसंग तेरा जन्म सफल होय ॥टेक॥
काशी गया दुवारका रे कोटिन तीरथ न्हाय
विन गुरुके उपदेशसें रे मनकी मैल न जाय १
तेरा जन्म सफल होय०
सिर पर जटा रखायके रे अंग विभूति रमाय
छाप तिलक तनमें किये रे मोक्ष कभी नहिं पाय २
तेरा जन्म सफल होय०
सदा रहे वनवासमें रे कीनो तप अपार
मनकी तृष्णा न मिटी रे मिली न सर्जनहार ३
तेरा जन्म सफल होय०
तजके मनकी भटकना रे संतनकी कर सेव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्मानंद मिटायगा तेरा भवबंधन गुरुदेव ॥तेरा०

(राग मांड ताल दादरा)

मनमोहन सुंदर श्याम प्यारे दरस दीजिये ।टेक।
बन बन ढूंडन जांयगी रे कर जोगनका वेश ॥१॥
प्यारे दरस दीजिये०
प्रेमरस पिलायके जी भूल गये ब्रजराज
तेरे कारण सांवरा जी गई हमारी लाज ॥२॥
प्यारे दरस दीजिये०
जैसे मछला जल विना रे तड़पत है दिन रैन
तेर दर्शनके विना जी नहीं हमें अब चैन ॥३॥
प्यारे दरस दीजिये०
सुना हमारा बीनता रे आय मिलो इक बार
ब्रह्मानंद प्रभ तुम्हारे चरणन की बलिहार ॥४॥
प्यारे दरस दीजिये०

(राग मांड ताल दादरा)

प्रभु हमारा सुनो पियारा अर्ज हमारी आज ।टेक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

तुं पिता सब जगतका जी सबका पालनहार
गति तुमारी मति हमारी लखे नहीं महराज १
भूमी पवन अगन गगन सूरज चांद सितार
तेरे बनाये लोक बसाये धन्य तुमारा साज २
देवदनुज मनुज जीव सबी तुमारे दास
सबसे न्यारा रूप तुमारा तूँ सबका सिरताज ३
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी आय पड़ा दयाल
काटो हमारे बंधन सारे राखो हमारी लाज ४

(राग मांड ताल दादरा)

हरि तुमारी छबी पियारी कब दिखाओगे ।टेक।
सिरपे मुकुट धारके जी रतनसे जड़ा
गलमें माल तिलक भालमें लगाओगे ॥१॥
मकर कुंडल पीत वसन कमर मेखला
कमलनैन मधुरबैन कब सुनाओगे ॥२॥
शंख चक्र गदा पद्म हाथ में धरे
लक्ष्मी संग श्यामरंग कब सुहाओगे ॥३॥
ब्रह्मानंद करके प्रभु दासपे दया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पगमें कड़े गरुड़चढ़े बेग आवोगे ॥ ४ ॥

(राग मांड ताल दादरा)

सुनभाईहमारा लछमन प्यारा बातकरमकी ॥टेक॥
मान वचन केकई रे दिया पिता बनवास
प्रण नभाया सत्य निभाया नीति धरमकी ॥१
राज्य तिलक त्यारियां रे कछु न आई काम
विधी विचारी गति नियारी कठिन मरमकी ।२।
कर्म लिखा सोई होत है रे कोई न मेटनहार
निष्फल मारी शांच तुमारी मनके भरकी ॥३॥
अपना किया भागना रे नहीं किसीका दोष
ब्रह्मानंद शरण पड़ो प्रभुनाथ परमकी ॥४॥

(राग मांड ताल दादरा)

तुम पढ़ोरेतोता क्या सुख सोता रामरामराम ।टेक।
पिंजरमें बैठके रे भूल गया निज धाम
लालचके वशमें पड़ा रे परवश आठों याम ॥१॥
साथी तेरे चले गये रे कोई न आया काम
जीव अकेला फस गया है छूट गया आराम ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मौत बिल्ली ताकमें रे बैठी बीच मुकाम
अवसर तेरा देखके रे करसी काम तमाम ॥३॥
बोली तेरी रसभरी रे रटो निरंजन नाम
ब्रह्मानंद मिटैं भव बंधन पावैं पद विश्राम ॥४॥

(राग मांड ताल दादरा)

तुमपढ़ोरीतोतामैना मधुर बैना हरिकानामसार टे.
तजके तेरा मालिया री जंगल करैं विहार
एक जगां थिर ना रहैं री फिरती डारनडार ॥१॥
मीठे मीठे फल पके री खावें चूंच पसार
बाज झपेटा मारसी तेरी छूटे प्राण बहार ॥२॥
कठिन लोह पिंजरा री बंद किये सब द्वार
मुशकिल तेरा छूटना री मनमें सोच विचार ॥३॥
कोटि जतन कर भोली होय नहीं निस्तार
ब्रह्मानंद भजो जगदीश्वर बंध छुड़ावनहार ॥४॥

(राग मांड ताल दादरा)

राम सुमर राम तेरे काम आयेगा ॥ टेक ॥
भाई बंधु राज पाट महल मालिया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अंतकालमें न कोई संग जायगा ॥ १ ॥
दुनियांके कारबारमें तुं भूलना फिरे
चिड़ियाको जैसे बाज तुझे काल खायगा ॥२॥
मनुष का शरीर बड़े भाग्यसे मिला
जबबीतगयाकाल तो फिर क्या बनायगा ॥३॥
करले जतन हजार हरी नामके बिना
कहता है ब्रह्मानंद नहीं मोक्ष पायगा ॥४॥

(राग मांड ताल दादरा)

राम सुमर राम उमर बीत जायगी ॥ टेक ॥
एक एक श्वास बड़े मोलका मिला
भजन बिना व्यर्थ देह नाश पायगी ॥ १ ॥
बारबार जीया जून भटकता फिरा
मोक्षकी खिड़की न फेर हाथ आयेगी ॥ २ ॥
करले प्रभुका भजन नहीं देर कर जरा
आवेगी जबी मौत पलक न रुकायगी ॥ ३ ॥
सुमरण करे जो रामनाम प्रेमभावसे
ब्रह्मानंद मोहपाश सहजमें कटायगी ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग मांड ताल दादरा)

मैं इनी सूरत शामकी कब नजर आयगी ॥टेक॥
राम शाम कर विलास मनको हरलिया
सखी बंसरीकी मधुर धुनी कब सुनायगी ॥१
प्रेमपाश डार गले वो चले गये
फिर आवनेकी खबर मुझे कब बतायगी ॥२॥
गोकुलमें फिर न आये नंदलाल जी कभी
बिन दरस तरस तरस मेरी जान जायगी ॥३॥
तज काम काज लाज धरो ध्यानचरणका
ब्रह्मानंद प्रेम भक्ति नामको मिलायगी ॥४॥

(राग भैरवी ताल चलित)

हरिनाम सुमरले हरिनाम सुमरले
हरिनाम सुमरले पछतायगा रे ॥ टेक ॥
मनुष काया दुर्लभ पाया
पलक बीच चल जायगा रे ॥ १ ॥ हरिनाम०
माल खजाना संग न जाना
चोर लूट कर खायगा रे ॥ २ ॥ हरिनाम०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सुत परिवारा बांधव प्यारा
अंत काम नहीं आयगा रे ॥ ३ ॥ हरिनाम०
ब्रह्मानंद शरण पड़ प्रभुकी
सब भवबंध मिटायगा रे ॥ ४ ॥ हरिनाम०

(भैरवी ताल चलित)

मेरी सुनले अरज मेरी सुनले अरज
मेरी सुनले अरजियां प्यारे राम ॥ टेक ॥
सब जग स्वामी अंतरयामी
विश्व चराचरके सुखधाम ॥ १ ॥ मेरी सुन०
नाम तुमारा भवभयहारा
सुमरण से हो पूरण काम ॥ २ ॥ मेरी सुन०
दीनदयाला जनप्रतिपाला
ध्यावत मुनिगण आठों याम ॥ ३ ॥ मेरी सुन०
ब्रह्मानंद शरणमें आयो
चरणकमलमें दे विश्राम ॥ ४ ॥ मेरी सुन०

(भैरवी ताल चलित)

मुझे लागी लगन मुझे लागी लगन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मुझे लागी लगन तेरे दर्शन की ॥ टेक ॥
जैसे वनमें पपिया मनमें
आश करे नित दरसन की ॥ १ ॥
गल वनमाला मुकुट विशाला
पीतवसन सुन्दर तनकी ॥ २ ॥
मणिकटि ऊपर चरणननूपर
करमें गद सुदर्शनकी ॥ ३ ॥
ब्रह्मानंद श्याम मनमांही
चरणकमलयुग परसनकी ॥ ४ ॥
भैरवी ताल चर्चित)
तेरी बीती उमर तेरी बीती उमर
तेरी बीती उमरिया जायगी रे ॥ टेक ॥
दिन दिन जावे काल सिहावे
फिरके गई नहीं आयगी रे ॥ १ ॥ तेरी
लाड लडाई सास बजाई
देह पड़ी रह जायगी रे ॥ २ ॥ तेरी बीती
महल अटारी सुन्दर नारी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

माया सकल विलायगी रे ॥ ३ ॥ तेरी बीती०
ब्रह्मानंद भजन कर हरिका
यमकी पाश कटायगी रे ॥ ४ ॥ तेरी बीती०

(भैरवी ताल चलित)

मेरो सुन ले वचन मेरो सुन ले बचन
मेरो सुन ले बचन नर हितकारी ॥ टेक ॥
जगमें आया नरतन पाया
वृथा उमर मत खो सारी ॥ १ ॥ मेरो सुन०
झूठी काया झूठी माया
झूठी जगतकी है यारी ॥ २ ॥ मेरी सुन०
यह संसारा नश्वर सारा
क्या ममता मनमें धारी ॥ ३ ॥ मेरी सुन०
ब्रह्मानंद भजन कर हरिका
सब सुखदायक दुखहारी ॥ ४ ॥ मेरी सुन०

(भैरवी ताल चलित)

प्रभु तेरी शरण प्रभु तेरी शरण
प्रभु तेरी शरणमें आया हूं ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भवजललहरी नदिया गहरी
कठिन वेग बहाया हुँ ॥ १ ॥ प्रभु तेरी०
परबल माया जाल बिछ्या
चारों तरफ फसाया हुँ ॥ २ ॥ प्रभु तेरी०
क्षण भंगारा विषय विकारा
जनम जनम भरमाया हुँ ॥ ३ ॥ प्रभु तेरी०
ब्रह्मानंद दास दासनका
चरणकमल लिपटाया हुँ ॥ ४ ॥ प्रभु तेरी०

(राग मारवाडी)

राम रटलेरे प्राणी पलपल उमरा जाय बिहानी
बूंदबूंद टपके जैसे अंजलिका पानी रे ॥टेक॥
गर्भवासमें बाहिरआया बड़ेभाग्य मानुषतनपाया
मायामोहमभलायगयो प्रभुसुधबिसरानी रे ॥१॥
हाथीघोड़े महलअटारी मालखजाना संपतभारी
श्वासदिवलजबगया पलकमें होयबिरानी ॥२॥
क्या सुख सोवे सेज बिछाई
काल खड़ा सिर दाव लगाई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जैसे बाज झपट चिड़िया लेजाय उड़ानीरे ॥३॥
रामनाम जो मननितगावे ब्रह्मानंद परमपदपावे
जन्ममरण दुखजाय सकलभवपाशमिटानीरे ४

(राग मारवाड़ी)

झूठसबजगतपसारा सोच समझनरदेखविचार
मूरख गर्व करे मनमें हरिनाम विसारा रे ॥टेक
बड़ेबड़े राजाअरुरानी हंसखजाने हुकुमदिवानी
खाकमें मिल गया रहानहि एक इशारा रे ॥१॥
अर्जुन भीम कर्णसे भारे शूरवीर रणगर्जनहारे
काल बलीसे हार सबी परलोक सिधारा रे ।२।
पंडितयोगीराजघनेरे रूपवंत गुणिगण बहुतेरे
अपनी गाय बजाय गयेजगमें दिन चारा रे ॥३।
धन जीवन गुण थिर नहि कोई ब्रह्मानंद नाश
सब कोई । परमेश्वरका नाम सुमर सबसे हो
न्यारा रे ॥ ४ ॥ झूठ०

(राग मारवाड़ी)

देख नजरोंसे भाई परमेश्वर तेरे तनमांही

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अंग अंग जैसें फूलनमें गंध समाई रे ॥ टेक ॥
क्या मथुरा क्या काशी जावे जाय हिमालय क्यों दुख पावे । कर सतसंग विचार भेद सतगुरु से पाई रे ॥ १ ॥ देख०
पहाड़मांपकापिंजर काया चेतन केवलफिरे फिराया बाजीगर जैसे पुतलीको नाच नचाई रे ॥ २ ॥
कस्तुरी मृगनाभ बिराजे घासमूँ घता बन बनधाजे बिन जाने मूरख बिरथा बाहिर भटकाइ रे ३
बिषयोंमें तु सुखको माने ब्रह्मानंदस्वरूप न जाने उलट सुरत संभाल भरम मनका मिट जाई रे

(राग मारवाड़ी)

नाथ मैं शरण तुमारी आज सुनीप्रभुअरजहमारी दीनदयाल दयानिधि भक्तनकेहितकारीरे ॥टेक॥
गजको पकड़ ग्राह वश कीना मनमें तुमारा सुमरण कीना । पहुँचे गरुड़ सवार पलकमें पाश निवारी रे ॥ १ ॥ नाथ०
राजाने ध्रुवको निकलाया बनमें जाकर ध्यान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लगाया। दे दर्शन कर दिया अचल पलमें अधिकारी रे ॥ २ ॥ नाथ०
प्रह्लाद भक्तने नाम उचारा पिता क्रोध चाबुकसे मारा। नरसिंह रूप बनाय दैत्यकी देह विदारी रे ॥ ३ ॥ नाथ०
भवसागरमें नीर अपारा ब्रह्मानंद करो प्रभु पारा। तुम बिन कौन सहाय करे जगदीश मुरारी रे ॥ ४ ॥ नाथ०

(राग मारवाड़ी)

सुनो जगदीशपियारा विनती हमारी पिता हमारा हम बालक तुम शरण पड़े हैं चरण महारा रे ॥टेक
तुमारी महिमा हम क्या जानें नेतिनेति कर वेद बखानें। ऋषि मुनिगण सब ध्यान धरे नहि पावत पारा रे ॥ १ ॥ सुनो०
सकल जगत तुमने उपजाया नानाविधि सब जीव बनाया। खेल रचा कर देख रहा सबसे हो न्यारा रे ॥ २ ॥ सुनो०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अचरज पखत तुमारी माया जिसमें सब जग फिरे भुलाया। दया नजर तुमारी बिन कबहुँ न होय उधारा रे ॥ ३ ॥ सुनो०

रूप तुमारा है अविनाशी ब्रह्मानंद सकल घटवासी। निर्मल निर्गुण निर्विकार सब विश्व आधारा रे ॥ ४ ॥ सुनो०

(राग मारवाड़ी)

करोमतसंगपियारा जन्म सफल होजाय तुमारा सफल सकलमिटायज्ञानका होय उजारारे ।टेक। मूरतपूजन में मन लावे कोटिन तीरथ में फिर आवे मनका भरम न जाय विना सतसंग विचारा रे ॥ १ ॥ करो०

यज्ञ दान जप तप बहु भारी छाप तिलक माला गलधारी। ज्ञान बिना नहिं मोक्ष होय कर जतन हजारा रे ॥ २ ॥ करो०

करे अनेक कर्म शुभ कोई सतसंगतसम फल नहिं होई। घड़ी पलक छिनमांहि होय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

भवसागरपारा रे ॥ ३ ॥ करो०
निशि दिन हरिचर्चा जहाँ होई ब्रह्मानंद संग शुभ सोई। परमेश्वरके ध्यान भजनसे हो निस्तारा रे ॥ ४ ॥

(राग मारवाड़ी)

सखी सुन हाल हमारा शामसुंदर मोहे लगे पियारा खानपान सुध भूल गई घरका काज बिसारा रे। टेक
मैं जमुनाजल भरके आई मगमें देखे आज कन्हाई। पीताम्बर तन मोर मुकुट सिर ऊपर धारा रे ॥ १ ॥ सखी०
बनमाला गल बीच सुहावे बंसी अधर लगाय बजावे। सुन मीठी धुन प्रेम मगन होगई अपारा रे ॥ २ ॥ सखी०
देख रूप मैं भई दिवानी मंद हसन मेरे मन भानी। नैनन बीच समाय गया वो नंद दुलारा रे ॥ ३ ॥ सखी०
किस विध मनमोहन घर लावुं ब्रह्मानंद दरस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मैं पाउं । जन्म सफल हो जाय मिटे भवबंधन सारा रे ॥ ४ ॥ सखी०

(राग मारवाड़ी)

सदाशिव शंकर दाता पूरणब्रह्म जगत पितुमाता भक्तनके हितकार सदा कैलास वसा तारे ।टेक।

अंग विभूत जटा सिर राजे मुंडमाल गलबीच विराजे । चन्द्रकला मस्तकमें लोचन माल सुहाता रे ॥ १ ॥ सदा०

गौर वर्ण शुभभुजा विशाल कर त्रिशूल कटि में मृगछाला । नीलकंठ नागोंके भूषण तन पहराता रे गणपति कार्तिक चमर डुलावे वाम अंग गिरि-सुता सुहावे । नंदीगण द्वारे पे सुरमुनिगण यश गाता रे ॥ ३ ॥ सदा०

सकल मनोरथ पूरण कारी गंगाधर भयहर त्रिपुरारी । ब्रह्मानंद सदा चरणनमें शीश नमाता रे ॥ ४ ॥ सदा०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(ठुमरी ताल चलित)

मुझे दे दर्शन गिरिधारी रे
तेरी सांवरी सूरत पर वारी रे ॥ टेक ॥
जमुनातट हरि धेनु चरावे मधुर मधुर स्वर
बैन बजावे । कांधे कमरिया कारी रे ॥ १ ॥
मोरमुकुट पीतांबर सोहे देख रूप मुनिगण
मन मोहे । कुंडलकी छवि न्यारी रे ॥ २ ॥
वृन्दावनमें रास रचावे गोप गोपिका संग
मिल गावे । नूपुरकी धुन प्यारी रे ॥ ३ ॥
भक्तहेत हरि रूप बनाया ब्रह्मानंद मेरे
मन भाया । चरण कमल बलिहारी रे ॥ ४ ॥

(ठुमरी ताल चलित)

हरि रसभरी बैन बजाई रे
मेरे तनकी सुध विसराई रे ॥ टेक ॥
सुन कर बंसी की धुन प्यारी चकित भई सब
ब्रजकी नारी । उठ वृन्दाबन धाई रे ॥ १ ॥
पक्षी मौन हुये बिरछनमें घास तजा गौवनने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

वनमें । जमुनानीर रुकाई रे ॥ २ ॥
सुर विमान चढ़ नभमें आये बंसीधुन सुन
मन हरषाये । पुष्पवृष्टि बरसाई रे ॥ ३ ॥
नारायण बैकुंठविलासी ब्रह्मानंद बने
ब्रजवासी । संतनके सुखदाई रे ॥ ४ ॥

(ठूमरी ताल चलित)

गुरुचरण कमल बलिहारी रे
मेरे मनकी दुबिधा टारी रे ॥ टेक ॥
भवसागरमें नीर अपारा डूब रहा नहि
मिले किनारा । पलमें लिया उबारी रे ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ लुटेरे जनम जनमके
बैरी मेरे । सबको दीना मारी रे ॥ २ ॥
द्वैतभाव सब दूर कराया पूरण ब्रह्म एक
दरसाया । घट घट जोत निहारी रे ॥ ३ ॥
जोग जुगत गुरुदेव बताई ब्रह्मानंद शांति
मन आई । मानुष देह सुधारी रे ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(ठुमरी ताल चलित)

हरिभजन बिना सुख नाहीं रे
नर क्यों बिरथा भटकाई रे ॥ टेक ॥
काशी गया द्वारका जावे चार धाम तीरथ
फिर आवे। मनकी मैल न जाई रे ॥ १ ॥
छाप तिलक बहुत भांत लगाये सिर पर जटा
विभूति रमाये। हिरदे शांति न आई रे ॥ २ ॥
वेद पुराण पढ़े बहु भारी खंडन मंडन
उमर गुजारी। बिरथा लोक बड़ाई रे ॥ ३ ॥
चार दिवस जग बीच निवासा ब्रह्मानंद छोड़
सब आशा। प्रभुचरणन चित लाई रे ॥ ४ ॥

(ठुमरी ताल चलित)

हरि दर्शनकी मैं प्यासी रे
मेरी सुनिये अरज अविनाशी रे ॥ टेक ॥
निर्गुण से मं हे सगुण सुहावे सुर नर मुनि गण
ध्यान लगावे। भक्तन के सुखराशी रे ॥ १ ॥
नहि गोकुल नहि मथुरा जाऊं अड़सठ तीरथ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मैं नहि नावुं । चरण कमल की दासी रे ॥२॥
जप तप योग नहीं बन आवे कैसे प्रभुके
मनमें भावे । करो न मुझे निराशी रे ॥ ३ ॥
करुणाकर मोहे दर्शन दीजे ब्रह्मानंद
शरणमें लीजे । काटो यमकी फांसी रे ॥ ४ ॥

(ठुमरी ताल चलित)

दर्शन बिन जियरा तरसे रे
मेरे नैन धार जल बरसे रे ॥ टेक ॥
मैं पापन अवगुणकी राशी कैसे करे प्रभु
निजकी दासी । काया कंपत डरसे रे ॥ १ ॥
पतित उधारण नाम तुमारा दीजे मुझको
चरण सहारा । देखो दया नजरसे रे ॥ २ ॥
शरण पड़ी मैं आय तुमारी माफ करो अब
भूल हमारी । भुजा गहो निज करसे रे ॥ ३ ॥
तुम बिन और न पालक मेरा ब्रह्मानंद
भरोसा तेरा । बिनती करूं जिगरसे रे ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(ठुमरी ताल चलित)

मेरा पिया मुझे दिखला दो रे
कोई आनके आज मिला दो रे ॥ टेक ॥
मैं विरहण नित रहूँ उदासी पिया मिलनकी
जान पियासी प्रेम का नीर पिला दो रे ॥१॥
वर्षा विन चातक दुख पावे नीर विना मछली
तरसावे । हाल मेरा बतला दो रे ॥ २ ॥
मैं गुणहीन कपट छल भरियां कैसे मुझ पर
होय नजरियां । दिलपर दया दिलादो रे ॥३॥
चरण कमलकी दासी तेरी ब्रह्मानंद अरज
सुन मेरी । सुखकी सेज सुला दो रे ॥ ४ ॥

(झझोटी ठुमरी ताल ३)

मिला दो सखी श्यामसुन्दर मोहे आज ॥टेक॥
रात दिवस मोहे चैन न आवे भूल गये सब काज १
खान पान पहरन न सुहावे विन देखे ब्रजराज २
जोगन बनकर बनबन ढूँढूँ छोड़ जगतकी लाज ३
ब्रह्मानंद विना हरिदर्शन विरथा साज समाज ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(झंझोटी ठुमरा ताल ३)

सुहाने सखी मोहनकी मोहे बेन ॥ टेक ॥
जमुना तटपर बनकुंजन में श्याम चराये धेन १
जबकिबंसिया श्रवण सुनी मैं कलनपड़त दिनरैन २
किसविध हरिके दर्शन पावुं सफल करूं निजनैन ३
ब्रह्मानंद चरणकी चेरी संतनके सुख देन ४

(झंझोटी ठुमरी ताल ३)

तुम है हरि शरण पड़ेकी लाज ॥ टेक ॥
मैं गुणहीन मलीन मंदमति कैसे बने अवकाज ॥
जपतप तीरथ नरतन कीने नहिकियो सत समाज ॥
तुम समान नहि पतित उधारन मैं पापीसिरताज २
ब्रह्मानंद करे नित विनती सुनिये गरीब निवाज ॥

झंझोटी ठुमरी ताल ३)

भजन बिन विरथा जनम गयो ॥ टेक ॥
बालपणो सब खेल गमायो जोबन काम बह्यो १
बूढ़े रोग ग्रसी सब काया परवश आप भयो २
जपतप तीरथ दान न कीनो ना हरिनाम लियो ३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्मानंद बिना प्रभु सुमरण जाकर नरक पयो ४

(झंझोटी ठुमरी ताल ३)

भजन बिन भवजल कौन तरे ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद ग्राह वसत हैं मारग में पकड़े १
कुच कंचन दोऊ घेर पड़त हैं सब जग डूब मरे २
यज्ञ दान तप निर्मल नौका अधबिच टूटपड़े ३
ब्रह्मानंद करो हरिसुमिरण सब दुख दूर करे ४

(झंझोटी ठुमरी ताल ३)

मुसाफिर क्या सोवे अब जाग ॥ टेक ॥
इनबिरछनकीथिर नहिं छाया देखलुभायाबाग १
इस सरायमें रहना नाहीं काहे करत है राग २
यह सब चोर लगेसंगतेरे इनसे बचकर भाग ३
ब्रह्मानंद देर मत कीजे अपने मारग लाग ४

(झंझोटी ठुमरी ताल ३)

मेरेमन अब तो समझकर चाल ॥ टेक ॥
बाल्य गयो जोबनपुनिबीतो श्वेत भया सबबाल
जो न तजे तु इनबिषन को आनखड़ासीकाल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जाना दूर मुसाफिर तुझको पास नहीं कछु माल ३
ब्रह्मानंद मिलनेके कारण छोड़ जगत जंजाल ४

(झझोटी ठुमरी ताल ३)

अरे मना अब तो सुमर हरिनाम ॥ टेक ॥
चौरासी लाख जीव जूनमें नहि पायो विश्राम १
कर्मनकेवशस्वर्गनरकमें भटकत फिरा निकाम २
मानुष देह मिली यह दुर्लभ मोक्षद्वार सुखधाम ३
ब्रह्मानंद चली सब जावे बिरथा उमर तमाम ४

(झझोटी ठुमरी ताल ३)

मैं तो प्रभु तुम चरणन को दास ॥ टेक ॥
दीनदयालदयाकेसागर सकल भुवनपरकाश १
सबजगकारण भयभवहारण घटघटबीचनिवास २
करुणाकर मोहे दर्शन दीजे पूरण कीजिये आस ३
ब्रह्मानंद शरणमें तुमरी मेटो यम की त्रास ४

(झझोटी ठुमरी ताल ३)

प्रभु तेरे चरणकमल बलिहार ॥ टेक ॥
तुमपितुमाताविश्वविधाता सबजीवनहितकार १

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

अचरजभारी रचना सारी सबजग पालनहार २
घटघटगामी अंतरयामी सकलभुवन आधार ३
ब्रह्मानंद सर्व सुखकंदा मेरी सुनो पुकार ४

(राग पहाड़ी ताल केरवा)

प्रभु सुन ले बिनतिया हमारी रे ॥ टेक ॥
भवसागर में डूब रहा हुँ लीजिये वेग उबारी रे
कामक्रोधमददुश्मनभारे निशदिन करतखुवारी रे
स्वारथके सबबंधु जगतमें केवल तुमहितकारी रे
ब्रह्मानंद आश तज सब की आयो शरण तुमारी रे

(राग पहाड़ी ताल केरवा)

मुझे लीजे रे ईश्वर तेरी शरणा ॥ टेक ॥
जन्मजन्मकोटासतुपारो दीन जानकर करकरुणा
नाथतुमारो सब सुखकारीजन्ममरण संकट हरणा
विश्वचराचर रचनातेरीतुमपालकसबजगभरणा
ब्रह्मानंद करे नित विनति मोक्ष धामनिर्मलचरणा

(राग पहाड़ी ताल केरवा)

मुझे [illegible]न दरस गिरधारी रे ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

शीशकिरीटगलेवनमाला कुंडलकीछबिन्यारीरे ॥
चतुरभुजा पीतांबर सोहे नूपुरधुन सुखकारी रे ॥
शंखचक्रकरपद्म बिराजे मंदहसन अति प्यारीरे ॥
ब्रह्मानंद दयाकर कीजे पूरण आस हमारी रे ॥

(राग पहाड़ी ताल फेरवा)

मत सोना मुसाफिर नींद भरी ॥ टेक ॥
तुम परदेशी भूलपड़े हो यह सब चोरन की नगरी ॥
घड़ी पल छिन छिन ताक लगावे
संपतमाल चुरा लगरी ॥ २ ॥ मत०
कोटकछुआयगयेतहुनेरे बिरला जाय बचा ठगरी ॥
ब्रह्मानंद करो सत्याचारी रैनबितायगई सगरी ॥

(राग पहाड़ी ताल फेरवा)

पिया चलो नगरिया हमारी रे ॥ टेक ॥
तुमबिन दारशिंगारनभावे सूनोमहल अटारी रे ॥
सुन्दरतनजोनवपद भूषणबिनमीतमलखारी रे ॥
मेरे अवगुणयाद न कीजे दासी जान तुमारी रे ॥
ब्रह्मानंद [illegible] बलिहारी रे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(राग पहाड़ी ताल केरवा)

आना आना रे मोहन मेरी गलियां ॥ टेक ॥
घिस घिस चंदन लेप लगावुं
धोवुं चरणनकी तलियां ॥ १ ॥ आना०
तेरे कारण हार बनावुं
चुन चुन फूलनकी कलियां ॥ २ ॥ आना०
प्रेमसहित मैं भोग लगावुं
माखन मिश्रीकी डलियां ॥ ३ ॥ आना०
ब्रह्मानंद दरसकी प्यासी
मोर मुकुट पर जावुं बलिया ॥ ४ ॥ आना०

(राग पहाड़ी ताल धमाल)

सजन तेरी उमरा बीतरही कैसे धरेमनधीर ॥टेक
दिन दिन घड़ि घड़ि पल पल जावे
जिम अंजलीका नीर ॥ १ ॥
गया वक्त फिर हाथन आवे लाखकरोतदवीर २
मोक्ष दुवार मिलीयहकाया करभजननरवीर ३
ब्रह्मानंद समर जगदीश्वर मिटे सकल भवपीर ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग पहाड़ी ताल धमाल)

समझमनझूठाहसंसार सुमरसदाहरिनाम ॥ टेक॥
क्षणभंगुरस्वप्नेकीमाया होवतनाशतमाम ॥१॥
लाखकरोड़ीमायाजोड़ी संगचलेनछदाम ॥२॥
सुतदाराघरमिनपियारे कोईनआवतकाम ॥३॥
ब्रह्मानंदशरणपड़प्रभुकी मिलेमोक्षसुखधाम ॥४॥

(राग पहाड़ी)

प्रभुमेरीअरजीआजसुनोसबजगसर्जनहार ॥टेक॥
तुमबिनऔरनपालकमेरो स्वारथकासंसार ॥१॥
भवसागरमें डूब रहा हूं लीजे मोहे उबार ॥२॥
दुस्तरमायाजाल फसाथा बेगकरो निस्तार ॥३॥
ब्रह्मानंद दयालदयाकर जन्ममरणदुखटार ॥४॥

(राग पहाड़ी)

सखीरीसुनबंसीबाजरही जलयमुनाकेतीर ॥ टेक।
चांदचांदनीरातमनोहर शीतलचलतसमीर ॥१॥
वृन्दावनहरि रासरचावे बालकसंगअहीर ॥२ ॥
मोरमुकुटपीतांबरसोहे सुन्दरश्यामशरीर ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्मानंदबिनाहरिदर्शन धरतनहींमनधीर ॥४॥

(राग पहाड़ी)

मुसाफिर चलजाना चलजाना रे
यह संसार सराय ॥ टेक ॥
इमसरायकीचाल पुरानीइकआवतइकजाय ॥१॥
राजरानी पंडितज्ञानी कोई रह नहि पाय ॥२॥
घडीपलकके रहने कारण मत सामान जमाय॥३॥
ब्रह्मानंद छोड़सबचिंता हरिचरणनचितलाय॥४॥

(राग टोड़ी ताल ३)

हरि तुम भक्तनके प्रनिपाल
शरणपड़ाहुं आय तुमारी कीजे दयादयाल ॥टेक
यह संसार स्वपनकी माया झूठा सब जाजंल
चरणकमलकीभक्तितुमारी दीजेनजरनिहाल ॥१॥
धन दारा सुत मीत पियारे कोई न जावे नाल
नाम तुमारा है अविनाशी संग रहे सब काल २
मानुष तन यह है क्षणभंगुर सिरपर कालकराल
कामक्रोधमदलोभजालमें लीजे मुझे निकाल ।३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जिनपर किरपाहोयतुमारी तिनकेभाग्यविशाल
ब्रह्मानंद दास चरणनका जन्ममरणदुख टाल ॥४॥

(राग टोड़ी ताल ३)

हरि तुम भक्तनके हितकारी । भवसागर
जल दुस्तर भारी लीजे मुझे उबार ॥ टेक ॥
गज अरु ग्राह लड़े जब जलमें गजने पाई हार
मनमें सुमरण किया तुमारा पहुँचे गरुड़ सवार १
तुमरे दर्शन कारण ध्रुवने तप कीनो मनधार
अचल राज्य तिसको प्रभुदीना दे अपनादीदार २
प्रीत देख प्रह्लाद भक्तकी निकले थंभ विदार
हिरणकशपको पकड़ केशसे पलमें दीना मार ३
द्रुपदसुताकी लाज सभामें राखी चीर वधार
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी मेरी सुनो पुकार ॥४॥

(राग टोड़ी ताल ३)

प्रभु सुन अरज हमारी आज ।
सकल जगतकेहोतुमस्वामी दीनबंधुमहाराज ॥टेक
हम बालक तुम शरण पड़े हैं रखिये हमारी लाज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

दयादृष्टिप्रभु हमपरकीजे पूरणहों सबकाज ॥१॥
तुमरी महिमा वेद बखाने ध्यान धरें मुनिराज
सकलव्यापक अंतर्यामी घटघटरहे बिराज ॥२॥
भूमी जल थल पर्वत सागर तुमरा है सब साज
देवदनुज नरपशुजीवनके तुमपालक सिरताज ।३।
तुमरेभजनविनासुखनाही कोटिन किये इलाज
ब्रह्मानंद करोकरुणाप्रभु सदागरीब निवाज ।४।

(राग तोड़ी ताल ३)

जगनपति ईश्वर करो सहाय. दीनदयाल
दयानिधि स्वामी अर्ज करूं सिरनाय ॥ टेक ॥
दुस्तर मायाजाल बिछाया सब जग रह्या फसाय
मैं शरणागत नाथतुमारी लीजेमुझेछुड़ाय ॥१॥
पांच विषयकी नदिया गारी जीवबह्या सबजाय
करिकिरपाप्रभुपकड़भुजामेमुझको लीजलगाय ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ लुटेरे खोसखोस करखाय
तुमबिनऔरनपालनमेरो लीजवेगबचाय ॥ ३ ॥
मेरे अवगुण नाथ न हेरो अपनी दया दिखाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ब्रह्मानंद शरणमें आयो लीजे दासबनाय ॥४॥

(राग टोड़ी ताल ३)

जगतपति ईश्वर तुं करतार । सकल जगतमें
जीव चराचर सब तुमारा परिवार ॥ टेक ॥
एक रूपसे बहुत बनावुं जब तुम किया बिचार
भवन चतुर्दश प्रकट होयकर फैलाया संसार ।१।
चौरासी लख जीव जूनमें जोड़ा है नर नार
सब वस्तुन के बीज बनाये पूर रहे भंडार ॥२॥
सागर नदियां पर्वत भारे सूरज चांद सितार
वृक्ष लता बन सरवर सुन्दर रचनाबड़ी अपार ।३।
अज अविनाशी जगतनियंता सब जीवनहितकार
ब्रह्मानंद दयाल दयाकर भवभय सकलनिवार ४

(राग टोडी ताल ३)

जगतपति ईश्वर तुं सुखनन्द । सत् चित
आनंद रूप तुमारो ध्यावत सुरमुनिवृन्द ॥टेक॥
मायाजाल विछा है भारी जीव किये सब बंद
जो जन सुमरे नाम तुमारो टूटें सबकी फंद ।१।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सकलजगतहै रचना तेरी गमन भूमि रवि चंद
तुमरी महिमा जान न पावें तर्क करें मतिमंद २
तुमरे भजनबिना जगमांही पंथ सबी हैं गंद
जिस मारगमें नाम तुमारो सो सुरभी मकरंद ३
तुमारा निर्णय कर कर हारे वेद ग्रन्थ सब छंद
भक्ति दानदीजे प्रभु मुझको याचक ब्रह्मानंद ४

(राग टोड़ी ताल ३)

जगतपति ईश्वर दयानिधान। सकल जगतका
कर्ता हर्ता व्यापक तुं भगवान ॥ टेक ॥
जलकी बून्द से देह बनाई जिसमें डारे प्राण
माताकुच में दूध बनाकर पाला जीव अजान १
अन्न शाक फल फूल सबनके बीच रचे परधान
तिनके बर्धन भोगन के हित हमको दीना ज्ञान २
भूमि पवन अगन जल अंबर सब तुमरा समान
हमरे कर्म किये क्या होवें विरथा सब अभिमान ३
नाम तुमारा भवभयभंजन दीजे हमको दान
ब्रह्मानंद दया कर प्रभुजी अरज हमारी मान ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग तोड़ी ताल ३)

सुमर नर रामनाम सुखधाम
जन्ममरणके बंधन छूटें पूरणहो सबकाम ॥टेक॥
लालच तज विषयोंका मनसे नहि इनमें आराम
हरिकेचरणकमलका चिंतन करले आठो याम १
दिनदिनपलपलछिनछिन उमरबीतीजाय तमाम
नश्वरकायाथिरकरमाने भूलाफिरेनिकाम ॥२॥
बिन हरिभजन मुक्ति नहि होवे
फिरफिरजन्म गुलाम
चौरासी लख जीव जूनमें नहि पावे बिश्राम ।३।
प्रभुका नाम जपो निज मनसे लगे नहीं कछुदाम
ब्रह्मानंद मोक्षपद पावे जो होवे निष्काम ॥४॥

(राग तोड़ी ताल ३)

जगतमें स्वारथ का व्यवहार । बिनस्वारथ कोई
बात न पूछे देखा खूब बिचार ॥ टेक ॥
पिताकहेमेरा पुत्रसपूता आवलंद हुशियार ॥१॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

नारी सुन्दर बस्तर भूषण मांगत बारंबार
जो लाकर घरमें नहि देवे मुखड़ा लेत बिगार ।२।
पुत्र भये नारीनके वशमें नित्य करें तकरार
आधो अपना भाग बटाकर होवें न्यारोन्यार ।३।
जिनको जानत मीत पियारे सब मतलबके यार
ब्रह्मानंद छोड़कर ममता सुमरो सर्जनहार ॥४॥

(राग टोड़ी ताल ३)

जगतमें रामनाम है सार । सोच समझ नर
देख पियारे नश्वर सब संसार ॥ टेक ॥
राजा रानी पण्डित ज्ञानी शूरवीर नर नार
सबही कालवलीके मुखमें जाय बने आहार ॥१॥
सूरज तारे पर्वत सारे सागर नीर अपार
अंतकालमें थिर नहि कोई यह निश्चय मनधार २
महल बगीचे हाथी घोड़े दासी दास हजार
मालखजाना संगनआना बिरथा सब हंकार ॥३॥
हरिकानाम सुमरनर निशदिन दिलमें नहीं बिसार
ब्रह्मानंद कटे भवबंधन छूटे सकल विकार ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

(राग टोड़ी ताल ३)

जगमें जीवन है दिन चार। सुकृत कर हरि
नाम सुमरले मानुष जन्म सुधार ॥ टेक ॥
सत्यधर्मसे करो कमाई भोगो सुख संसार
मातपिता गुरुजनकी सेवा कीजे पर उपकार ॥१॥
पशु पक्षी नर सब जीवनमें ईश्वर अंश निहार
द्वैतभाव मनसे बिसरावो सबसे प्रेम विहार ॥२॥
सकल जगतके अंदर बाहिर पूरणब्रह्म अपार
सतचित आनंदरूप पिछानो कर सतसंग विचार ३
यह संसार स्वप्नकी माया ममता मोह निवार
ब्रह्मानंद तोड़ भवबंधन पावो मोक्ष दुवार ॥४॥

(भजन ताल ३)

जपो हरिनाम यह उमर बिहानी रे ॥टेक॥
बालपणो सब खेल गमायो त्रिया मोह
जुवानी रे। बूढापणे रोग सतावे सुन्दर
काया तेरी होत है पुरानी रे ॥ १ ॥
दिन दिन पल पल छिन छिन जावे निम

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अंजलिका पानी रे । गया वक्त फिर के नहि आवे छुट गया तीर जैसे चढ़े न कमानी रे ॥२॥
हाथी घोड़े माल खजाना राज पाट पटरानी रे । श्वास निकल जब जाय बदनसे सबही संपत तेरी होयगी बिगानी रे ॥ ३ ॥
स्वप्न समान जगतकी रचना क्या भूला अभिमानी रे । ब्रह्मानंद भजन बिन प्रभुके व्यर्थ तेरी है नर सारी जींदगानी रे ॥ ४ ॥

(भजन ताल ३)

सुनो जगदीश प्रभु अरज हमारी रे ॥ टेक ॥
मानुष जन्म लिया जगमांही किरपा भई तुमारी रे । गर्भवासमें किया करारा बाहिर आया तेरी याद बिसारी रे ॥ १ ॥
माया मोह जालमें फसियो निकलन की नहि वारी रे । जन्ममरण भवचक्कर मांही फिरत फिरत भयो दीन दुखारी रे ॥ २ ॥
जप तप योग यज्ञ नहि कीनो नहि सतसंगत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्यारी रे। केवल शरण पड़ी मैं तुमरी अब तो दयाल मुझे कीजिये उबारी रे ॥ ३ ॥
तुमरे भजन बिना सुख नाही कीने जतन हजारी। ब्रह्मानंद दयाकर दीजे भक्ति तुम्हारी प्रभु परम सुखारी रे ॥ ४ ॥

(भजन ताल ३)

तजो अब नींद रे मुसाफिर करो त्यारी रे ॥टेक
इस नगरीके नौ दरवाजे खुली पड़ी सब बारी रे। दिन दिन लोक सभी चल जावें काहेको तैंने घरकी याद बिसारी रे ॥ १ ॥
राजा रानी पंडित ज्ञानी शूर वीर नर नारी रे। अपने अपने मारग जावें रहन न पावें करें जतन हजारी रे ॥ २ ॥
जाना दूर रात अंधियारी सिर पर गठरी भारी रे। चोर खड़े मारग में लूटे करलो जतन पीछे होयगी खवारी रे ॥ ३ ॥
प्रभुका नाम सुमरले प्यारे वो तेरा हितकारी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

रे । ब्रह्मानंद बिलंब न कीजे सिरपर खड़ी है तेरे कालकी सवारी रे ॥ ४ ॥

(राग जिला टोडी ताल ३)

प्रभुजी तेरी किसविध करूँ मैं बड़ाई ॥ टेक ॥

ब्रह्मा निशदिन वेद उचारे शंभु ध्यान समाधी धारे । सनकादिक नारद मुनि भारे अजहुँ पार नहीं पाई ॥ १ ॥

भूमी अगन पवन पवन जल अंबर सरवर सागर पर्वत कंदर । सूरज चाँद सितारे सुन्दर तुम सब सृष्टि बनाई ॥ २ ॥

देव दनुज मानव नर नारी पशु पक्षी जल थल नभ चारी । सकल जीव संतान तुम्हारी तुम पालक सुखदाई ॥ ३ ॥

विश्व बनाकर नाश करावे नाश कराकर फिर उपजावे । ब्रह्मानंद पार नहिं पावे अचरज खेल रचाई ॥ ४ ॥

१. तर्ज—सभा में भेदा तुमही करोगे निस्तारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(जिला ठोड़ी ताल ३

प्रभुजी मेरा तुमबिन कौन सहाई ॥ टेक ॥
मातपिता बाँधव सुत नारी जगमें सब स्वारथ की यारी। नहिं परलोक होय हितकारी सबसे होय जुदाई ॥ १ ॥
माल खजाना महल चुबारे कोई न जावे संग हमारे। चल चल जावें भोगन हारे जगमें थिर न रहाई ॥ २ ॥
लाड़ लड़ाकर पालन कीना अतर फुलेल सदा मलदीना बस्तर भूषण नित्य नवीना देह पड़ी रह जाई ॥ ३ ॥
तू सबका है पालनहारा तेरी महिमा बड़ी अपारा। ब्रह्मानंद दान दे प्यारा नाम तेरा सुखदाई ॥ ४ ॥

(राग टोंड़ी ताल ३)

हरिजी तुम भक्तन के रखवारे ॥ टेक ॥
हिरणकश्यपने चाबुक मारा प्रह्लाद भक्तने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

नाम उचारा। नरसिंह होकर दैत्य पछाड़ा देवनके दुख टारे ॥ १ ॥
मातावचन हिरदे धरलीना ध्रुवने बनमें जा तप कीना। गरुण चढ़े प्रभुजी दर्शन दीना अंत बैकुंठ सिधारे ॥ २ ॥
द्रुपदसुताकी लाज बचाई गौतमनारी विपत मिटाई। शबरीकी महिमा अधिकाई गजके बंद निधारे ॥ ३ ॥
जो जन नाम तुम्हारा गावे सो निश्चित निर्भय पद पावे। ब्रह्मानंद नित अर्ज सुनावे कीजिये भव जल पारे ॥ ४ ॥

मैं तो तेरा दास प्रभु जी मुझे न बिसारणा ॥टेक॥
जप तप दान नाहीं तीरथ स्नान नाहीं
वेद ग्रन्थ ज्ञान नाहीं नहीं योग धारणा ॥ १ ॥
दीननके नाथ स्वामी परम प्रकाश धामी
चराचर विश्व गामी सब सुखकारणा ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

शरण पड़ा हूं तेरी पूरो अब आश मेरी
कीजिये न नाथ देरी सुनिये पुकारणा ॥३॥
तेरे गुण नित्य गावुँ चरणन शीश नावुँ
ब्रह्मानंद रूप ध्यावुँ भवदुखहारणा ॥४॥

(राग सोरठ)

जिन्दगी सुधार बंदे येही तेरो काम है ॥टेक॥
मानुषकी देह पाई हरिसे न प्रीत लाई
विषयोंके जालमांही फसिया निकाम है ॥१॥
अंजलिको नीर जैसे जावत शरीर तैसे
धरे अब धीर कैसे बीतत तमाम है ॥२॥
भाई बंधु मीत नारी कोई न सहायकारी
काल यम पाशधारी सिरपे मुकाम है ॥३॥
गुरुकी शरण जाओ प्रभुका स्वरूप ध्याओ
ब्रह्मानंद मोक्ष पावो सबसुखधाम है ॥४॥

(राग सोरठ)

कोहे दूर जावे बंदे सांई तेरे पाश में ॥टेक॥
जिमी असमान मांहीं उसका मुकाम नाहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

प्रगट निशान नाहीं चाल चत्त वासमें ॥१॥
जंगल पहाड़ सारे नदियां समुंदर सारे
देखलो निहार प्यारे मिले न तलाशमें ॥२॥
नाभीमेंसुगंधधारी फिरे मृग दूर चारी
जाने बिना भेद भारी सूंघता है घासमें ॥३॥
फूलनमें वास जैसे घट घटवास वैसे
ब्रह्मानंद खास तैसे तन परकाशमें ॥४॥

(राग सोरठ)

जागरे मुसाफिर प्यारे रैन गई सारियां ॥टेक॥
संगके सहाई तेरे कर गये कूच डेरे
उठके सवेरे चलो नगरी तुमारियां ॥१॥
आलसको दूर छोड़ो रथमें समान जोड़ो
घोड़नकी बाग मोड़ो वेग करो त्यारिया ॥२॥
आयके विदेशमांही करी कछु ना कमाई
पीछे पछताई तेरी होयगी खुवारियां ॥३॥
परम सहायकारी सबी भयदोपहारी
ब्रह्मानंद रूपधारी काहेको बिसारियां ॥४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग पहाड़ी)

प्रेमनगर मत जाना मुसाफिर ॥ टेक ॥
प्रेमनगरका पंथ कठिन है
ऊंचे शिखर ठिकाना मुसाफिर ॥१॥ प्रेम०
प्रेमनगरकी नदिया गहरी
लाखों लोक डुबाना मुसाफिर ॥२॥ प्रेम०
प्रेमनगरकी सुन्दर परियां
सब जग देख लुभाना मुसाफिर ॥३॥ प्रेम०
ब्रह्मानंद कोई बिरला पहुंचे
पावे पद निर्बाना मुसाफिर ॥४॥ प्रेम०

(ठुमरी राग झंझोटी)

सांवरी सूरत तेरी मोहनी मूरत हरि
कमलनयन शशिवदन सुहावनी ॥१॥
कनकमुकुट भाल सोहे बनमाल गले
सुन्दर विशाल भुज कंकण धरावनी ॥२॥
कानन कुंडल पड़े कटि पट पीत धरे
चरण नूपुर धुनी मधुर बजावनी ॥३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

श्यामल कोमल अंग रमा बसे सदा संग
ब्रह्मानंद मंद हास मेरे मन भावनी ॥४॥

(ठुमरी राग झंजोठी)

पनिया भरन कैसे जावुं सुन प्यारी आली
आज वनमाली मोरी रोकत डगरिया ॥१॥
जमुनाके तट पनघट पर नटवर
ठाड़ा झपट पट खेंचत चुनरिया ॥२॥
संग लिये ग्वाल बाल रास करे नंदलाल
चलत कपट चाल फोड़त गगरिया ॥३॥
परम आनंदकंद हास करे मंद मंद
ब्रह्मानंद मुखचंद देख मन हरिया ॥४॥

(ठुमरी ताल झंझोटी)

दीनके दयाल प्रतिपाल सब जगतके
परम कृपालु हरि हरो भवबंधको ॥१॥
शंख चक्र गदा कर शीश पे मुकुट धर
कानन कुंडल वर सोहे मुखचंदको ॥२॥
चतुर्भुजा विशाल गले बीच वनमाल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अलक कुटिल भाल हास मंद मंदको ॥३॥
क्षीरसिंधुमें विलास शेषनागपे निवास
दीजिये दरस दास जान ब्रह्मानंदको ॥४॥

(ठुमरी राग झंझोटी)

देखले चतुर नर आप तो नजरभर
घड़ी पल छिन तेरी बीतत उमरिया ॥१॥
दीपककी लोय जैसे अंजलीको तोय जैसे
कबहुं न होय थिर जाय रे गुजरिया ॥२॥
पशु मृगराज धरे चिड़ियाको बाज हरे
तैसे यमराज करे पड़े न खबरिया ॥३॥
पापनसे डर नर हरिका भजन कर
ब्रह्मानंद मन धर बातरे हमरिया ॥४॥

(ठुमरी राग झंझोटी)

मानले वचन मेरो जानले स्वरूप तेरो
जाने बिना रूप भवसिंधुमें डूबावनो ॥१॥
पायके मनुष तन करले जतन नर
दारा सुत धन तेरे संगमें न जावनो ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

आवे जब काल तब रहे न संभाल कछु
करत हवाल बुरो फिर पछतावनो ॥ ३ ॥
करले उपाय सारे जप तप दान भारे
ब्रह्मानंद ज्ञान बिना मोक्ष नहि पावनो ॥ ४ ॥

(राग पहाड़ी ताल १)

मेरी मतिया, हरि हरि हरि गुण गा ॥टेक॥
नाम मुरारी भवभयहारी नहिनहिनहि बिसरा १
दुर्लभकाया जगमें पाया दिनदिनदिनन गमा २
करतलपानी उमरबिहानी पलपलपल चलभा ३
ब्रह्मानंद सब सुखकंदा नितनितनित चितला ४

(राग पहाड़ी ताल २)

मेरी मतिया, कर फर हरिभजना ॥ टेक ॥
सिरपर काला फिरत कराला डरडरडर मरणा १
लखचौरासी भवदुखराशी फिरफिरफिर फिरना २
दीनदयाला सब जगपाला पड़पड़पड़ शरणा ३
ब्रह्मानंद कर निज बंदा मम प्रभु प्रभु चरणा ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(राग पहाड़ी ताल)

मेरी सजनी सुन सुन सुन सुन सुन ॥ टेक ॥
अनहदबाजे गगनबिराजे माधुरी धुनधुनधुन १
अमृतधारा परम सुखारा टपकत पुनपुनपुन २
सुरत सुहाई सेज बिछाई फूलन चुनचुनचुन ३
ब्रह्मानंदा परमानंदा गुण गुण गुण निर्गुण ४

(राग पहाड़ी ताल २)

री गुजरिया पनिया भरन मति जा ॥ टेक ॥
आनाजाना रोकत कान्हा पनघट निकट खड़ा १
नटवर नागर पटकत गागर झटपटपट झटका २
बंसी बजावे सुध बिसरावे मीठीमीठीमीठी धुन गा
ब्रह्मानंदा चरणमुकुंदा जप जप नमन सदा ४

(राग पहाड़ी ताल २)

तुं मेरी गली आना रे कान्हा ॥ टेक ॥
शीशमुकुटधर भालतिलककर कुंडल लटकाना १
श्यामबदन घनपीत बसनतन नूपुर पहराना २
अधर लगाकर मुरली बजाकर मधुर मधुर गाना ३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्मानंदा रूपसुहंदा नैनन दिखलाना ॥ ४ ॥

(राग पहाड़ी ताल ३)

सखीरी सुन बाजत बंसरिया ॥ टेक ॥

निर्मल नीरे जमुना तीरे गावत सांवरिया ॥१॥

मुकुट विशाला गलबनमाला चरणन् घुरिया २

वृन्दावनमें घनकुंजनमें नाचत नटवरिया ॥३॥

ब्रह्मानंदा हरिमुखचंदा मुनिजनमन हरिया ॥४॥

(राग मंगल ताल ३)

घटहीमें उजियारा साधो घटहीमें उजियारा ।टेक।

पास बसे अरु नजर न आवे बाहिर फिरत गंवारारे

बिनसतगुरुके भेद न जाने कोटि जतनकर हारारे१

आसन पद्म बांधकर बैठो उलट नैनका तारा रे

त्रिकुटीमहलमें ध्यान लगाओदेखोखेल अपारा रे२

नहि सूरज नहि चांद चांदनी

नहि बिजली चमकारी रे

जगमगजोत जगेनिमबाहर पारब्रह्म विस्तारा रे ३

जो योगी जन दर्शन पावे उघडे मोक्ष दुवारा रे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ब्रह्मानंद सुनोरे अवधु जो है देख इसारा रे ४

(मंगल ताल ३)

घटहीमें अविनाशी साधो
घटहीमें अविनाशी रे ॥ टेक ॥
काहे रे नर मथुरा जावे काहे जावे काशी रे
तेरे तनमें बसे निरंजन जो बैकुंठ बिलासी रे १
नहिपनाळनहि स्वर्गलोकमें नहिसागर जलराशी रे
जोजनसुमख करतनिरंतर सदाबहे तिनपासीरे २
जो तुं उसको देखा चाहे सबसे होद उदासी रे
बैठ एकांत ध्यान नितकीजे होयजोत परकाशीरे ३
हिरदेमें जब दर्शन होवे सकल मोहतम नाशी रे
ब्रह्मानंद मोक्षपद पावे कटे जमकी फांसी रे ४

(मंगल ताल ४)

जोग जुगत हम पाई साधो
जोग जुगत हम पाई रे ॥ टेक ॥
मूलद्वारमें बंध लगायो उलटी पवन चलाई रे
परचक्रका [illegible] रे १

Kirtikant Sharma Collection, Nalasgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

नाभीसे पश्चिम के मारग मेरु दंड चढ़ाई रे
ग्रंथीखोलगगनपरचढ़िया दशमेंद्वार समाईरे २
भंवर गुफामें आसनसाधो कायासुधबिसराई रे
बिनचंदाबिनसूरजनिशदिनजगमगजोतजगाई रे ३
शिवशक्तिको मेलभयो जब सुंनमें सेजबिछाई रे
ब्रह्मानंदसतगुरुकिरपासे आवागमन मिटाई रे ४

(मंगल ताल १)

जोग जुगत हम जानी साधो
जोग जुगत हम जानी रे ॥ टेक ॥
खेंच अपान प्राणधर आपे नागन नींद जगानीरे
मेरु दंड खोलकर ऊपर भ्रमर गुफाठहरानी रे
जिह्वा उलट खेंचरी मुद्रा तालु बीच लगानी रे
त्रिकुटीमहलमें ध्यानजमायो ब्रह्मजोत दरसानी रे
अनहद नाद बजेघटभीतर गर्जन मेघ सुहानी रे
सुनसुनमस्तभयोमनमोरा कायासुध बिसरानी रे
सूंनशिखरसें अमृत टपके पीकर सुरत अघानीरे
ब्रह्मानंद [illegible] समाधे [illegible] पद निर्वानी रे ४

Kirtikant Sharma Collection, Prajagam

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(मंगल ताल ३)

अनहद की धुन प्यारी साधो
अनहद की धुन प्यारी रे ॥ टेक ॥
आसनपद्मलगाकर कर से मुंद कानकी बारीरे
झीनीधुनमें सुरत लगाओ होतनादझनकारीरे १
पहले पहले रलमिल बाजे पीछे न्यारीन्यारी रे
घण्टाशंखबंसरीबीणा तालमृदंग नगारी ॥२॥
दिनदिनसुनत नादजबविकसै कायाकंपतसारीरे
अमृतबून्दझरे मुखमांही योगीजनसुखकारी रे ३
तनकी सुधसब भूलजातहै घटमें होय उजारी रे
ब्रह्मानंदलीनमनहोवे देखीबातन्यारी रे ॥४॥

(राग मंगल ताल ३)

सुनो खेचरीबात साधो सुनो खेचरीबात रे ॥टेक॥
सबसे बड़ी खेचरी मुद्रा योगी जनकी भात रे
जोजन साधन करत निरंतर भवसागर तरजातरे१
जीभ तलेकी नाड़ कटे जब तब पीछे उलटातरे
धीरे धीरे गलके ऊपर छेदमांहि ठहरात रे ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पीछे ध्यान धरे भृकुटीमें कांपे सबही गात रे
ब्रह्मजोतिका दर्शन पावे झरे सुधा दिनरात रे३
दिनदिनध्यानकरेजनयोगी कायासुखबिसरात रे
ब्रह्मानंद स्वरूपभावे फेरजन्म नहिपात रे ॥४॥

(मंगल ताल ३)

सोहंशब्दविचारोमाधो सोहंशब्दविचारोरे ॥टेक॥

माला करसे फिरत नहीहै जीभ न वर्ण उचारोरे
अजपाजापहोतघटभांही ताकी ओर निहारो रे १
हं अक्षरसे स्वास उठाओ सो से जाय बिठाओ रे
हंसो उलट होत है सोहं योगीजन निरधारो रे२
सब इक्कोसहजारषिताकर छैसो होत शुमारो रे
अष्टपहरमें जागतसोवत मनमें ज्यो शुमारो रे ३
जो जनचिंतनकरतनिरंतर छोड़जगतव्यवहारो रे
ब्रह्मानंद परमपद पावे मिटे जनम संसारो रे ४

(मंगल ताल ३)

अचरज देखा भारी साधो
अचरज देखा भारी रे ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

गगन बीच अमृतका कूवा झरे सदासुखकारीरे
पंगु पुरुष चढे विनसीढ़ी पीवे भरभर झारी रे १
विना बजावे निशदिन बाजे घण्टा शंखनगारीरे
बहरासुनसुनमस्तहोतहै तनकीखबरविसारीरे २
बिन भूमिके महल बना है तामें जोत उजारी रे
अंधा देखदेख सुख पावे बात बतावे सारीरे ३
जीता मरकरके फिर जीवे बिन भोजन बलधारीरे
ब्रह्मानंद संतजन बिरला समझे बात हमारी रे ४

(राग मंगल ताल ३

मैं हुँ दासतुमारा प्रभुजी मैं हुँ दासतुमाराजी ॥टेक
सुत पितुमाता जगकानाता स्वारथकासांसारीजी
सबजगस्वपनाकोईनअपना तूं मेरारखवाराजी १
जपतपनाना धर्मनजाना नहिंसतसांतविचाराजी
सबगुणहीनाभजननकीना कैसेहोनिस्ताराजी २
परबलमायाजाल बिछायाफसियाजीवबिचाराजी
बिन तुम करुणा भवभयहरणा
नहिं होवे छुटकाराजी ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

अवगुण मेरे नाथ घनेरे नहि कछु पांरा वाराजी
ब्रह्मानंद शरणमें आयो कीजे भवजलपाराजी ४

(मंगल ताल १)

मैंहूंशरणतुमारीप्रभुजी मैं हूँ शरणतुमारीजी ।टेक।
सूरज तारे पर्वत भारे देव दनुज नर नारीजी
सागरसरवर भूमि तरुवर तेरी रचना सारीजी १
जलथलगामी अंतरयामी भुवनचतुरदशधारीजी
सबगुणखाना दयानिधाना
सब जीवन हितकारीजी ॥ २ ॥
ऋषिमुनिध्यावें पारनपावें महिमातुमरीभारीजी
किसविधगावुं भेदनपावुं दुर्बलबुद्धिहमारीजी ३
नाम तुमारा सब सुखकारा देत पदारथ चाराजी
ब्रह्मानंददानमोहेदीजे जन्ममरणभयहारीजी ॥४॥

(मंगल ताल ३)

सतसंगतजगसारसाधो सतसंगतजगसाररे ॥टेक॥
काशी न्हाये मथुरा न्हाये न्हाये हरिद्वार रे
चारधामतीरथ फिरआये मनका नहींसुधार रे १

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

वनमें जाय कियो तपधारी काया कष्ट अपार रे
इन्द्रियजीतकरी वश अपने हिरदेनहींविचार रे २
मंदिरजाय करैं नित पूजा राखे बड़ो आचार रे
साधु जनकी कदर नजाने मिले न सर्जनहार रे ३
बिनसतसंग ज्ञाननहीं उपजे करलेजतनहजार रे
ब्रह्मानंद खोजगुरु पूरा उतरो भवजल पार रे ४

(मंगल ताल ३)

गुरुबिन कौन मिटावे भवदुख
गुरुबिन कौन मिटावेरे ॥ टेक ॥
गहरी नदिया वेग बड़ो है बहत जीव सब जावेरे
कर किरपागुरुपकड़भुजाते खैंचतीरपरलावेरे १
कामक्रोधमद लोभ चारमिल लूटलूटकरखावे रे
ज्ञानखड्गदेकर करमांही सबको मार भगावेरे २
जाना दूर रात अंधियारी गैला नजर न आवे रे
सीधेमारगपर पगधरकर सुखसेधामपुगावे रे ३
तनमनधन सब अर्पणकरके जो गुरुदेव रिझावेरे
ब्रह्मानंद भवसागर दुस्तर जो भजे तरजावे रे ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(मंगल ताल ३)

गुरु बिन कौन सहाई नरकमें
गुरु बिन कौन छुड़ाई रे ॥ टेक ॥
माता पिता सुतबांधव नारी स्वारथ के सबभाईरे
परमारथका बंधु जगतमें सतगुरु बंध छुड़ाईरे १
भवसागर जल दुस्तरभारी ग्राह बसें दुखदाई रे
गुरुखेवटिया पार लगावे ज्ञानजहाजबिठाई रे २
जन्मजन्मका घेट अंधेरा संशय सकल नसाई रे
पारब्रह्म परमेश्वर पूरण घटमें दे दरसाईरे ३
गुरुके वचनधार हिरदेमें भाव भक्ति मन लाई रे
ब्रह्मानंदकरोनितसेवा मोक्षपदारथपाई रे ॥४॥

(मंगल ताल ३)

शिव भोला भंडारी साधो
शिव भोला भंडारी रे ॥ टेक ॥
भस्मासुरने करी तपस्या वर दीना त्रिपुरारी रे
जिसकेसिरपरहाथलगावे भस्महोयतनसारी रे १
शिवके सिरपरहाथधरनकी मनमें कुमतबिचारी रे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भागेफिरतचहुँदिशशंकर लगा दुःखडरभारी रे २
गिरजारूप धार हरि बोले बात असुरसे प्यारी रे
जो तूं मुझको नाचदिखावे होउं नार तुमारी रे ३
नाचकरतअपनेसिरकरधर भस्मभयोमतिमारी रे
ब्रह्मानंदहेतजोईयांगे शिवभक्तनहितकारी रे ४

(मंगल ताल ३)

निर्गुण पंथ निराला साधो
निर्गुण पंथ निराला रे ॥ टेक ॥
नहीं तिलकनहिंछापधारणानहिं कंठीनहिंमाला रे
निशदिनध्यानलगेगिरदेरमें प्रगटेजोतउजाला रे १
नहिंतीरथनहिंव्रतघनेरे नहिंतपकठिनकराला रे
सहजे सुमरणहोवतघटमें सोहं आपसुखाला रे २
नहिं सूरत नहिं है कछु सूरत रूप न रंगतवाला रे
सबजगव्यापकघटघटपूरणचेतनसुखविशाला रे ३
नहिं उत्तम नहिं नीच न मध्यम
सब समान जगवाला रे
ब्रह्मानंदरूप पहचानो तनोदयजनगाला रे ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(राग मंगल ताल ३)

घटाकाशरोविचारसाधोघटाकाशरोविचार रे टेक
घटमें गंगा घटमें जमना तिरबेनी की धारा रे
घटमें नदियां पर्वत सागर घटमें बागबहार रे १
घटमें सूरज घटमें तारे घटमें चंद्र उजार रे
घटमें बिजली चमकसुहावे गर्जतमेघअपार रे २
घटमें तीनों देव विराजे ब्रह्मा शंभुमुरार रे
घटमें पूरण ब्रह्म निरंजन सबजग सर्जनहार रे ३
जो ब्रह्मांडमें सोई पिंडमें मनमें निश्चय धार रे
ब्रह्मानंद उलटसूरती को देखो सकल निहार रे ४

(राग मंगल ताल ३)

देखा अजब खिलारी साधो
देखा अजब खिलारी रे ॥ टेक ॥
मिट्टी का सब खेल बनाये तिनमें पवन पसारीरे
बोलतचालत फिरत निरंतर कर्मकरे बलकारीरे
एक खंडके दो टुक कीने एक पुरुष इकनारीरे
देव दैत्य नर पशुपक्षीमय रूपअनेकविहारी रे २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

आप बनावे आप सजावे आपहि करे तियारी रे
आपहि भोगे आप भुगावे भुवनचतुर्दशचारी रे ३
गुप्तरूपसे प्रकट होयके नटवर मूरतधारी रे
ब्रह्मानंद गुप्त फिरहोवे महिमा अचरजभारी रे ४

(मंगल ताल ३)

कालगती बलवान साधो
कालगती बलवान रे ॥ टेक ॥
बड़ेबड़े पृथ्वीके राजा प्रियव्रत सागर समान रे
सबहीमिलेधरणीकेमांही रह्यानएकनिशान रे १
अर्जुन भीमसेन से योधा जिनके अचरजबाण रे
सभीकालकियेवशअपनेछूटा सब अभिमान रे २
योगी पीरपगंबर भारी साधक सिद्ध सुजान रे
जीतसकेनहिकालबलीको छोड़गयेसबप्राण रे ३
इसदुनियामें रहना नांहीयहनिश्चयकर जान रे
ब्रह्मानंद छोड़े सबचिंता सुमरोश्रीभगवान रे ४

(मंगल ताल ३)

नाथ निरञ्जन गावो साधो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

नाम निरंजन गावो रे ॥ टेक ॥
मानुषदेह मिली है दुर्लभ काहे वृथागमावो रे
नामजहाज बैठकर दुस्तर भवसागर तरजावोरे १
घरकी जीवनामनिनदामा फिरक्योंदेरवगावो रे
ऊठतबैठतसोवतजागत मनमें नहिबिसरावो रे २
ध्रुवप्रह्लादविभीषणनारद सनकादिकमनभावो रे
अजामेलगजगणिकातारे हरनिश्चयमनलावोरे ३
कलि केवल इक नामअधारा दूजाभरमभगावो रे
ब्रह्मानंदनामबिहरिके कबहुँमोक्षनहिपावो रे ४

(मंगल ताल ३)

मनकी बात न मानो साधो
मनकी बात न मानो रे ॥ टेक ॥
मन चंचलमर्कटसमनिशदिन रहेन एकठिकानो रे
छिनछिनकरतसदाविषयनको मायाभरमभुलानोरे १
तनधन सुतदाराके मांही रात दिवसलिपटानो रे
मोहमयीमदिराकोपीकर फिरतसदामस्तानोरे २
लाभहानि नहिसमझेमूरख करेजोमनकोमानो रे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सोजनकबहुँमोक्षनहिंपावे जन्ममरणभ्रमकानोरे ३
रोक जलनके मनविषयनमें हरिचरणमेंआनो रे
ब्रह्मानंद करेभवबंधन यह निश्चयकर जानोरे ४

(मगल ताल ३)

चेतन चमक नियारी साधो
चेतन चमक नियारी रे ॥ टेक ॥
हाड मांस की देह बनी है जामें लगी नवद्वारी रे
चेतनकेबलबोलतचालत सुखदुःखजाननहारी रे १
प्राण संग जब चेतन निकसे पड़ेमिपीपरभारी रे
बीचचिताकेजायजलावें भूलजायपधिहारी रे २
घटघटमें चेतन का वासा देव दनुज नर नारीरे
पशुपक्षीविरछनके मांही व्यापक है सुखकारीरे ३
इस चेतनको ईश्वर जानो परब्रह्म अविनाशी रे
ब्रह्मानंद भेद तब छोड़ो एकरूप निरधारी रे ४

(मगल ताल ३)

ऐसा ज्ञान हमारा साधो
ऐसा ज्ञान हमारा रे ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जड़ चेतन दो वस्तु जगतमें चेतनमूल आधा रे
चेतन से सब जग उपजत है नहि चेतनसे न्यारा रे
ईश्वर अंशजीव अविनाशी नहि कुछ भेदविकारा रे
सिंधु बिंदु सूरज दीपकमें एकही वस्तु निहारा रे
पशु पक्षी नर सब जीवनमें पूरण ब्रह्मअपारा रे
ऊँचनीच जग भेद मिटायो सब समान निर्धारा रे
त्यागग्रहणकछु कर्तबनाहीं संशयभ्रमनिवारा रे
ब्रह्मानन्द रूप सब भासे यह संसार पसारा रे ४

(राग मंगल पंजाबी काफी)

नहि आते हो नहि आते हो
क्यों अपना रूप छिपाते हो ॥ टेक ॥
फिरदा ढूँढन आवांतेनुं मारग कौनबतावे मैनुं
दिखलाइ यकहुंमैंकेनुं क्योंमुझकोभटकाते हो १
विरहो बाण लगाया दिलमें प्रेम फांस डारी
मुझ गलमें। बैठी याद करूँ पलपलमें सूरत
नहीं दिखाते हो ॥ २ ॥
जिम जल बिन मछली हैरानी बिन दर्शन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मैं फिरूँ दिवानी अब तो आकर मिलजा
जानी क्यों का देर लगाते हो ॥ ३ ॥
कैसी मनमें धारी ठिठाई दिलमें धेरीयारभुलाई
ब्रह्मानंद अकलजगमाहीं दीनबंधु कहलाते हो २

(पंजाबी काफी)

किन जावोगे किन जावोगे
छोडुं मैं सबघरकेकाजा दूरधरूँ सबजगकीलाजा
पकड रहूँ तेरा दरवाजा कैसे मुझे हटावोगे ॥१
जोगन बनकर ढूँढन जावुं घर घर मेरा खोज
लगावुँ । पीछे फिरकर कभी न आवुं कौन
जगा अटकावोगे ॥ २ ॥
तेरे कारण महल सजावुं चुन चुन कलियाँ
सेज बिछावुँ चरणकमलमें सिर लिपटावुं
क्यो नहीं अंग लगावोगे ॥ ३ ॥
गुरु मेरा जब भेद बतावे पकड हाथमें हाथ
मिलावे । ब्रह्मानंद रूप दरसावे फिर क्या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जतन करावोगे ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

कित जावुं मैं कित जावुँ मैं
अब कैसे प्रेम निभावुं मैं ॥ टेक ॥
मैंजानाथा प्रेमपियारा यहतो निकला दुश्मनभारा
घायल करकेमुझकोडारा किसकोहाल सुनावुं मैं १
जिसने प्रेम पिलाया पिया सो मरमर करके
फिर जीया । निशदिन काँपें मेरा हिया कैसे
कर समझावुं ॥ २ ॥
मजनुखैलाने भटकाया रांझा हीरफकीर बनाया ।
सूलीपरमनसूरचढ़ाया किसकिसकोबतलावुं मैं ३
सागर कठिन प्रेम का भारी विरला पहुँचे
हिम्मतधारी । ब्रह्मानंद परमसुखकारी कैसे
दर्शन पावुं मैं ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

अब जाना है अब जाना है
प्रीतमका रूप पिछाना है ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

गलबिच हीरा हारअमोली मैंढूं ढूं बाहिर में भोली
पड़दादरदूराजवखोली दामनबीच छिपाना है १
बालकभूलेबीचहिंडारा देती फिरूं मैं नगर ढंडोरा
जवमन निश्च यहोयाभोरा घरभीतर दरसानाहै २
मृगनाभीमैं है कस्तूरी सूंघत घासफिरे बनदूरी
बिनजानेनिज भेदजरूरी फिरधाफिरेभटकानाहै ३
सतगुरु पूरा भेद बताया मेरे मनका भरम मिटाया। ब्रह्मानंद पास दरसाया नैनसें नैन मिलाना है ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

अब पाया है अब पाया है
मुझे सतगुरु भेद बताया है ॥ टेक ॥
सोनाजेवर घड़ेसुनारा भांतभांत सब न्यारान्यारा
जब मैं बेचन गई बजारा भाव बराबर आया है १
बिट्टी चाक कुलालफिरावे वर्तननानाभाँतबनावे
किसमकिसमके रङ्ग लगावे एक अनेकदिखाया है
चतुर जुलाहे तणियातांना कुनिया बस्तर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बहुत सुहाना। एकही ताना एकही बाना
सबमें सूत लगाया है ॥ ३ ॥
सुर नर पशु सब जीव जहाना ऊंच नीच
सब भेद मिटाना। ब्रह्मानंद स्वरूप छिपाना
सब घट एक समाया है ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

तब पावोगे तब पावोगे
जब गुरु की शरण सिधावोगे ॥ टेक ॥
भरा समुंदर गहरा पानी
अब बिन नाव रहीं अटकानी। बिना मल्लाहके
चतुर सुजानी कैसे तरकर जावोगे ॥ १ ॥
परबत ऊपर शिखर मकाना मीलप पास खास
चलजाना। कौन बतावे राह ठिकाना जंगलमें
भटकावोगे ॥ २ ॥
नीलखतारा उगिया भारी सूरज चांद करें
उजियारी। ज्ञान बिना सब रैनअंधारी
किसबिध दर्शन पावोगे ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

गुरु भवसागर पार लगावे अगम अगोचर अलख लखावे। मनके सार भरम मिट जावे ब्रह्मानंद समझावेगे ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

बलहारी मैं बलहारी मैं
गुरुचरणकमल पर वारी मैं ॥ टेक ॥
तिमर भरे दोऊ नैनामेरे चहुँ दिश छाये घोर अंधेरे। सतगुरु अंजन भरभर मेरे निर्मल नजर अपारी मैं ॥ १ ॥
मैं परदेसन राह भुलानी बन जंगलमें फिरुं हिरानी। सतगुरु मिलिया रहबरजानी सीधे मारग डारी मैं ॥ २ ॥
गहरी नदिया वेग अपारा डूबत जाय रही मझधारा। देकर अपना बांहसहारा पलमें पार उतारी मैं ॥ ३ ॥
दुस्तर मायाजाल फसाई सतगुरु मेरी बंध छुडाई। ब्रह्मानंद स्वरूप लगाई घटघट जोत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

निहारी मैं ॥ ४ ॥

(पंजाबी काफी)

घर जाना है घर जाना है
प्रीतम के देश सिधाना है ॥ टेक ॥
प्रीतम तैनुं पास बुलावैं तुं नित गलियोंमें भटकावे
बिरथा रैन चली सब जावे फिर पीछे पछताना है १
करके आई कौल करारा अब क्यों दिलसे
ख्याल विसारा। चलनेका नहिं सोच विचारा
कब तक करे बहाना है ॥ २ ॥
सब गुणहीनी बदन मलीनी बीत गई सब
उमर नवीनी। हार सिंगार नहीं परबीनी
आखिर को शरमाना है ॥ ३ ॥
चलीगई सब संग सहेली तु क्यों बैठी रही अकेली
ब्रह्मानंद सुनो अलवेली और न कहीं ठिकाना है ४

(पंजाबी काफी)

मन भाती है मन भाती है
अनहदकी टेर सुनाती है ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

गगनमहलमें नौबतबाजे ऊपर शिखरघटा घनगाजे
चंचल बिजली चमक बिराजे बूँदसुधा बरसातीहै१
बिन दीपक जहाँ जोत उजारा क्रांति भानु
शशि चमके तारा। खेल करे नित प्रीतम
प्यारा सखियां मिलकर गाती हैं॥ २ ॥
उलटामारग कठिनदुहेला कोइकपहुँचे गुरुका चेला
सुरत शब्दका होवे मेला प्यालाप्रेम पिलाती है ३
भ्रमरगुफामें सेज बिछाई योगनींदतनसुध बिसराई
ब्रह्मानंद परम सुखदाई पूरण रूप समाती है ४

पंजाबी काफी)

उजियाला है उजियाला है
घट भीतर पंथ निराला है है ॥ टेक ॥
त्रिकुटी महलमें ठाकुर द्वारा तिसके अन्दर
चमके तारा चहुँ दिश परम तेज बिस्तारा
सुन्दर रूप बिशाला है ॥ १ ॥
सात खंडका बनामकाना सूक्ष्ममारग दुष्कर जाना
गुरु किरपासें चढ़े सुजाना पीवे अमृत प्याला है २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सुरत हंसनी चढ़ी अकाशा देखा अचरज सकल तमाशा। तीनों भुवन हुवा परकाशा, खुल गया निर्गुण ताला है ॥ ३ ॥
कर्मनका बंधन सब टूटा माया मोहभरा घट फूटा ब्रह्मानंदसकलभयछूटा मिटगयाभवभवजालाहै ४

(पंजाबी काफी)

पछतावेगा पछतावेगा
फिर वेला हाथ न आवेगा ॥ टेक ॥
रतन अमोलक मिलिया भारी कांच समझकर दीना डारी पीछे खोजत फिरे अनारी फेर कबी नहि पावेगा ॥ १ ॥
नदीकिनारे बाग लगाया फिलसोवेठण्डीछाया चुनचुनचिड़ियासबफलखाया खल्लीखेत रहावेगा
रेता का तु महल बनावे करकरजतनसमानभमावे पलमें परखाआन गिरावे हाथमसलरहजावेगा ३
वगाबजारनगरकेमांहीं सबहीवस्तु मिलेसुखदाई ब्रह्मानंद खरीदो भाई वेग दुकान उठावेगा ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(पंजाबी काफी)

मन भाया है मन भाया है
श्रीकृष्ण मेरे घर आया है ॥ टेक ॥
कोटि भानु शशि वदन उजारा तारागण
मणि मुकुट सितारा पीतांबर बिजली
चमकारा सुंदर रूप सुहाया है ॥ १ ॥
गगनमहलमें मुरलीबजावे मधुरमधुरधुनरागसुनावे
तनमनकीसबसुधबिसरावे परमानंदबढायाहै २
आप नचे सबलोक नचावे मिल सखियन
संग रास रचावे देख देख मेरो मन हरखावे
रूप अनेक बनाया है ॥ ३ ॥
घटघटखेलकरेगिरधारी अचरजसुन्दररचनाभारी
ब्रह्मानंदपरमसुखकारी सतगुरु दरसदिखायाहै ४

(पंजाबी काफी)

वाहवा क्या खेल रचाया है
तेरा भेद किसी नहि पाया है ॥ टेक ॥
कहींराजाहैकहींरानी है कहींयोगीपंडितज्ञानीहै

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

कहींवैद्य ज्योतिषीज्ञानी है कहींतापसवेषधारया है
कहींगुरुवचन कहींचेला है कहींनरनारीकामेला है
कहीं बैठा आप अकेला है कहीं कायरशूरकहायाहै
कहीं पशूपक्षीजलचारीहै कहीं देवदैत्यतनुधारी है
कहीं स्वर्ग पताल बिहारी है
कहीं भूतल बीच बसाया है ॥ ३ ॥
हींक भाईबंधुसुतनातीहै कहींनीचऊँचकुलजातिहै

(राग भैरवी ताल १)

ब्रह्मानंद कहींदिनराती है घटघटमें आपसमायाहै
मेरो प्रभुजी तुम बिन कौन सहाई ॥ टेक ॥
मातपितासुतबांधवनारीजी स्वारथहेतसगाई १
अन्तसमेकोईसंगनआवे जी परवशजीवसिधाई २
धनजोबन दिनचारसहाराजीदेखतहोचलजाई ३
ब्रह्मानंद पदारथसागरजी लीजियेमोहेबचाई ४

(भैरवी ताल १)

मेरो मनरे भजले चरणमुरारी ॥ टेक ॥
दीनदयालजगतप्रतिपालकरे भक्तनके हितकारी १

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

हरिकोनामजहाजजगतमेरे भवसागर जलतारी २
क्यामायामें फिरतभुलायोरे सिरपरकालसवारी ३
ब्रह्मानंद भजनबिनहरिकेरे जन्ममरणभयभारी ४

(भैरवी ताल ३)

तेरो प्रभुजी किस विधि दर्शन पावुं ॥ टेक ॥
मैंमतिमंदसकल गुणहीनाजीसन्मुखहोतलजावुं ॥
जपतपयोगयज्ञ नहिंकीनेजी कैसे पात्रकहावुं ॥
मैंअनाथतुमनाथजगतकेजी क्योंकरतोहेरिझावुं ॥
ब्रह्मानंद दयालदयाकरजी भवसार तरजावुं ॥

(भैरवी ताल ३)

मेरी आली री श्याम सुन्दर दिखलादे ॥ टेक ॥
बिनदर्शन मोहे चैनन आवे री चंद्रवदननिरलादे ॥
सांवरीसूरतमोहनीसूरतरी मुझकोआजमिलादे ॥
जमुनातटपर बंशी बजावे री मधुरी टेर सुनावे ॥
ब्रह्मानंदचरण बलिहारीरी नैनसफलकरवादे ॥

(राग सोरठ)

मेरो मनरे भजले रामरे ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

यहनरजन्म बहुरनहिंआवे कोटिनयतनकरे ॥१॥
सिरपर कालखड़ा निसवासर नेकन मूढ डरे ।२।
दीपक लेकर करके मांहि काहे कूप पड़े ॥३॥
ब्रह्मानंदबिनाहरिसुमरण भवदुखकबीनटरे ॥४॥

(राग सोरठ)

मेरो मनरे क्यों न भजे हरिनाम ॥ टेक ॥
हरिकोनामसदासुखदायकसफलकरेसबकाम ॥१।
काया कष्टनहींहै तुझको लगतनहींकछुदाम ।२।
मानुषतन दुर्लभ जगमांही बीतनजायनमाम ॥३॥
ब्रह्मानंद सुमरनिसवासर मोक्षधाम निष्काम ।४।

(राग सोरठ)

हरिभजरे उमरा बीतचली ॥ टेक ॥
दिनदिनघड़िघड़िपलपलजावेजैसेजलअंजली ।१।
जिम सूरज रथ धावत नभमें छायाजाय ढली ।२
यहमायाचंचल क्षणभंगुरजिमबादलबिजली ॥३॥
ब्रह्मानंदभजन बिनहरिके [illegible] ॥४।

Kirtikant Sharma Collection, Vajangarh

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

(राग सोरठ)

कैसे सखरी मनुवा धीर धरे ।। टेक ।।
जिनकेसंगबिबिधसुखलीने सो हमसें बिछुरे ।१।
हमसें प्रीत लगाकर ओरन मथुरावासकरे ।।२।।
उनके रासविलास सुमरकर नैनन नीरभरे ।३।।
ब्रह्मानंद बहुरनहिं आये हमरीसुधबिसरे ।।४।।

(राग सोरठ)

चालो सखीरी सन्तनसंगकरें ।। टेक ।।
सतसंगतहै सारजगतमें क्यों अवसर बिसरें ।।१।
छोड़काजपुनलाजजगतकीहरिपदध्यानधरें ।।२।।
संशय सकल दूर कर मनसें ज्ञानप्रकाशकरें ३
ब्रह्मानंद स्वरूप जानकर भवजल सिंधु तरें ४

(राग विहाग)

मनुवारे हरिगुण गान करो ।। टेक ।।
कलिकेवलहरिनामपरमपद मूरखक्योंबिसरो ।।१।
यहसंसार स्वप्नकी माया बिरथा बचनभरो ।२।
कालघटासिरऊपरगर्जत फिर किमधीरधरो ।३।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्मानंद शरण पड़ प्रभुकी भवभय हरो ।।४।।

(राग बिहाग)

मनुवारे रामभजन जग सार ।। टेक ।।
बड़े-बड़े पृथ्वीके राजा छोड़ गये दरबार ।।१।।
चारदिवसजगबीचनिवासाबिरथासकलपसार २
कंचन जैसी सुन्दरकाया पलमें होतछार ।।३।।
ब्रह्मानंदकरोहरिसुमरण उतरोभवजलपार ।४।।

(राग बिहाग)

मनुवारे तजा विषयनको संग ।। टेक ।।
क्षणभगुरसब वस्तुजगनमेंजिमजलबीचतरङ्ग ।१।
मृगतृष्णाजलक्योंभटकावे जैसेमूढकुरङ्ग ।।२।।
पापमैल भरा तनमांही कैसे चढ़ेहरिरङ्ग ।।३।।
ब्रह्मानंदसुमरजगदीश्वर होयसकलभयभंग ।।४।।

(राग बिहाग)

सुनो सखीरी आज स्वप्नकी बात ।। टेक ।।
स्वपनेमें हरिदर्शन दीना तेजपुंजमयगात ।।१।।
शीशकिरीटश्रवणमणिकुंडलगलबनमालसुहात २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

शंखचक्रकरपद्मविराजे चंद्रवदनमुसकान ॥३॥
ब्रह्मानंदनिरखछविसुन्दर हर्षहिये नसमात ॥४॥

(राग विहाग)

सुनो सखीरी अनहद नाद बजे ॥ टेक ॥
गगनमहलमें नौबत बाजे साजअनेक सजे ॥१॥
घंटा शंख मृदंग बंसरी गर्जन मेघ गजे ॥२॥
झिलमिलझिलमिल जोतजगालासूर चांदलजे ३
ब्रह्मानंद मगन मन होवे भवभय दूरभजे ॥४॥

(राग मलार ताल ३)

सुनो सखी अब वर्षा ऋतु आई । सुन्दर मेघ गगनपर छाये शीतल पवन सुहाई ॥ टेक ॥
बिजलीचमकडरावत मनको गरगर्ज बरसाई १
पर्वतसे जल झरतनिरंतर नदियां बेगसवाई २
चहुंदिशिवृक्षलतावनफूलेसकलभूमिहरपाई ॥३॥
ब्रह्मानंदजगतहितकारण ईश्वर वृष्टि बनाई ॥४॥

(राग मलार ताल ३)

सुन सखी अब वर्षा दिन आये । पूरब पवन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

चलो निस बासर घुमट घुमट घन छाये ॥टेक॥
गर्जन सुनकर पपिया बोले मोरन शोर मचाये १
रिमझिम बूँद पड़त आंगनमें ग्रीषम ताप मिटाये २
सखियां मिलकर झूलत बनमें गावतगीत सुहाये ३
ब्रह्मानंद जगतपति ईश्वर जीवनमुखउपजाये ४

(राग मलार ताल ३)

सुन सखि वर्षाऋतु मन भाई। कामकाज सब छोड़ जगतके निशदिन सुरत जमाई ॥ टेक ॥
त्रिकुटीमहलमेंचढ़करदेखाबिजली चमक लखाई १
अनहद गर्जन होत गगनमें सुनसुन मन हरषाई २
अमृतबूँदपड़तसुखदायक भयभयतपतमिटाई ३
ब्रह्मानंद स्वरूप समायो तनमन सुध बिसराई ४

(राग भैरवी प्रभाती)

नर क्या सुख सोवे संग वली
तेरे सिरपर ठाड़ो काल बली ॥ टेक ॥
पलपल छिनछिन रैन बितावे,
जैसे टपकत जल अंजली ॥ १ ॥ नर०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

साथी तेरे गये सबेरे,
अब नहि गाफिल नींद भली ॥ २ ॥ नर०
मारग विकट चोर भय भारी
लूट लेत संपत सकली ॥ ३ ॥ नर०
ब्रह्मानंद छोड़कर आलस,
संग सहायक ले असली ॥ ४ ॥ नर०

(राग होरी ताल धमाल)

कृष्णने कैसी होरीमचाई अचरज लखियो न जाई
असत सतकर दिखलाई ॥ टेक ॥
एक समय श्रीकृष्ण देवके होरी खेलन मन आई । एक से होरी मचे नहिं कबहुँ यातें करूँ बहुताई । येही प्रभुने ठहराई ॥ १ ॥ कृष्ण०
पांच भूतकी धातु मिलाकर अंड पिचकारी बनाई । चौदह भुवन रंग भीतर भरकर नानारूप धराई । प्रगट भये कृष्ण कन्हाई ॥ २ ॥ कृष्ण०
पांचवियकी गुलाल बनाकर बीच ब्रह्मांड छुड़ाई । जिस जिस आंख गलाल पड़ी सो सुधबुध सब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बिसराई । नहीं सुरत अपनाई ॥ ३ ॥ कृष्ण०
ब्रह्मज्ञान अंजनकी सिलाका जिसने नैन में
पाई । ब्रह्मानंद सबी तम नाश्यो सूझे पड़ी
अपनाई । भरमकी धूलउड़ाई ॥ ४ ॥ कृष्ण०

होरी ताल धमाल)

सांवरो कैसी खेलत होरी अचरज खुब बनोरी
कोइ जन भेद लहोरी ॥ टेक ॥

तनरंग भूमि बनी अतिसुन्दर बालनबाग लगोरी
नाड़ी अनेक गली जहां शोभत खेलत हांकान
डोरी संग वृषभान किशोरी ॥ १ ॥ सांवरो०
पांचसखी मिलपांच रंग भरदेतवहोरी वहोरी ।
राधिका लेकर डारो शामपर सवतन ढीन
भिगोरी । कृष्णमन मोद भयोरी ॥२॥ सांवरो०
होरीमें मोद मानकर शामने राधिकावेष धरोरी
मिल सखियन संग फाग मचायो खेलतमगन

१. ब्रह्माण्ड, २. आत्मा, ३. बुद्धि,
४. इन्द्रिय, ५. बुद्धि, ६. विषय ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भयोरी। आप सुधि भूल गयोरी॥३॥ सांवरो०
खेलत-खेलत जान न पायो दीर्घकाल गयोरी
वन बन फिरत रूप जब जानो सखियन-संग
बिछोरी। ब्रह्मानंद मिलोरी॥४॥ सांवरो०

(होरी ताल धमाल)

शामके संग खेलोरी होरी जन्म सफल कर
लोरी सखी मिल आज चलोरी॥ टेक॥
धर्म हेत हरि ब्रजमंडल में आकर प्रगट भयोरी
धन्य भाग्य यशुमति रानी के जिन घर जन्म
लियोरी। आप प्रभु दरस दियोरी॥१॥ शाम०
गल वनमाला बिराजत सुन्दर शीश कीरीट
धरोरी। कानन में मकराकृति कुंडल कमर पटी-
लड़ डोरी। चरण नूपर झणकोरी॥२॥ शाम०
जमुनातटपर वंसी वनमें ग्वालन संग खड़ोरी
मुरली अधर मधुर धुन गावे नाचत मोद
भरोरी। मनोहर रूप बनोरी॥ ३ ॥ शाम०
सुरनर मुनिजन दर्शन करकर मनमें हर्षबढ़ोरी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्मानंद चरण बलिहारी भक्तिदान दीजोरी।
सकल भवबंध हरोरी ॥ ४ ॥ श्याम०

(होरी काफी ताल धमाल)

आयो बसंत सखीरी मिल खेलिये होरी ॥टेक॥
परके भूल गई गृहकाजन मनमें ताप रहोरी
जिन२खेली होरी श्यामसंग तिनबड़भाग्यभयोरी१
तज सबकाज आज घरकेरे लाजको दूर धरोरी।
फागनकेदिन बीतजात फिरपीछे पछतोरी ॥२॥
सतसंगति वृन्दावन जाकर श्यामको खोजकरोरी
कर विचार जुगतिसे घेरो जानन पावे बहोरी॥३॥
मनपिचकारीपकड़कर सुन्दरध्यानसेरंगभरोरी।
प्रेमगुलाल मलोमुख ऊपर ब्रह्मानंद रस लोरी ४

(होरी काफी ताल धमाल)

देख सखी जगदीशरी कैसी होरी रचाई ॥टेक॥
पृथ्वी रंगभूमि सुखदायक गगन कनात लगाई
वृक्ष बगीचे पर्वत सागर नदियां नीरभराई ॥१॥
एक ही रूप अनेक भांत कर सूरत सुगल बनाई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

पशुपक्षीनरदेव दनुजसब मिलकर फाग मनाई २
बीजसे बीज बनां कर नूतन रंगत खूब जमाई।
एकसेएक मिलननहीपावे यह प्रभुका चतुराई ।३।
पांचविषयके रंगमनोहर नाना किस्म सुहाई
ब्रह्मानंद जीवसब भरभर खेल करत सुखदाई ४

(होरी काफी ताल धमाल)

होरी कुंज गलिन में खेलत नंद कुमाररी ॥टेक॥
मोरमुकुट सिर ऊपर सोहे गलफूलन के हाररी
पीतांबर कटिबीचविराजे पग नूपुर झणकाररी
ग्वालबाल सब मिलकर खेलें खेलें ब्रजकी नाररी
भरभर रंग परस्पर छोड़े पिचकारिनकी धाररी ॥
लाल गुलाल अबीर उड़ावें केसर छुतटफुंवाररी
भूषण वसनवदनसबभीने चालचलतंलचकाररी ॥
हाथमिलाय मिलाकर नाचे राधाकृष्णमुराररी
ब्रह्मानंद जुगल छबिसुंदर चरणकमल बलिहाररी

होरी काफी ताल धमाल)

मैं तो गुरु अपने से होरी खेलुं मनधाररी ॥टेक॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

प्रेमभावका रंग बनावु भक्ति गुलाल सधारी
ज्ञानविवेक भरु पिचकारी छोडु बारम्बाररी ॥
योग युक्तिका चंदन लेपु ध्यान पुष्प गलहाररी
अनहदनादबजावु सुन्दर सुरतनिरत सिभाररी॥
निगमागमके वाक्यमनोहरगायन करु बिचारी
मिलसत्संगत फागमचाउं संशयरकलनिवारी
एकरूप सब जग में देखु भेदभाव सब टाररी
ब्रह्मानंदगनमनंनिशदिन छुटेसकल विकाररी ॥

(राग काफी ताल धमाल)

दीनानाथ रमापति भवदुख हमारा हरोरे ॥टेक॥
करमेंचक्रसंदर्शनपकड़ो शीश किरीटधरोरे ॥१॥
गल बैजंती माला डालकरपीतवसनपहरोरे ॥२॥
बाम अंकमेंलेकमलाको गरुडसवारी करोरे ॥३॥
ब्रह्मानंद बिलंबनकीजे शरण तुमारीपडोरे ॥४॥

(काफी ताल धमाल)

दीनानाथ रमापति मैं हुँ शरण तुमारी जी ।टेक।
कामक्रोध मदलोभ छुटेरे रखिये लाज हमारी जी

Kuldeep Sharma Collection, Rajnagar

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

स्वारथकेसबमित्रजगत में केवल तुमहितकारी जी
भवसागर में डूब रहाहुँ लीजिये वेग उबारी जी
ब्रह्मानंद दान मोहे दीजे नाथतेरा सुखकारी जी

(काफी ताल धमाल)

नाम निरंजन गावोरे सब छोड़ भरमणा ॥टेक॥
नामनिरंजनसबदुखभंजननामनसे बिसरावोरे ॥
विषयारस मृगतृष्णापानीक्योंविरथा भटकावोरे
क्यामथुरा क्यापुरी द्वारिका क्याकाशीपुर जावोरे
ब्रह्मानंदसकलजगपूरण घटमें दर्शनपावोरे ॥४॥

(काफी ताल धमाल)

अब जाग मुसाफिर नींद न करोपियारीरे ॥टेक॥
घड़ि२ पल२ छिन२ करकेरैनगुजरियासारीरे ।१।
जाना आजजरूरी तुझको उठकरकरोतियारीरे २
कोई नसंगसहायकतेरोपंथकठिन भय भारीरे ३
ब्रह्मानंद सुमर जगदीश्वर जो तेरा हितकारीरे ४

(काफी ताल धमाल)

कमलेश स्वामि निशिवासर हर निमतोषी ।टेक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

जन्ममरणभवचक्करमांही फिरतफिरतअवहारोजी
अवतपयोग-नहीं कछु मेरे केवलदासतुमारोजी २
मेरे अवगुणनाथनहेरो अपनोबिदरविचारोजी ३
ब्रह्मानंद शरणमें तेरी दीजियेचरणसहारोजी ४

(काफी ताल धमाल)

यह संसार असारकी काहे प्रीत लगावे ।।टेक।।
जिसमें पीतकरे तुं प्यारी कोई न रहवनहार री १
सुत धनधामसंगनहिंजावे झूठासकल पसाररी २
मानुषजन्ममिला जगमांहिकरहरिभजनसुधाररी ३
ब्रह्मानंद छोड़कर ममता करो जगत व्यवहाररी ४

(काफी ताल धमाल)

चरखा कात सुधार री सुन चतुरसियानी ।।१।।
यह चरखा लकड़ीका तेरा किसकेचलतसहारर,
इस चरखेमें जोड़ घनेरे कौन मिलावन हार री
इस चरखकी माल पुराणी टूटे लगत न वाररी
ब्रह्मानंद गुंज चरखेकी सुनले मनको मार री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(रंभा-शुकसंवाद (लावणी)

भजन में क्यों चित धरियो रे।
रंभा शुकसे कहे मानलो वचन हमारी रे ॥टेक॥
परमेश्वर ने जगत बनाया।
नर नारी का योग मिलाया।
भोगो सुख संसार तजो मन संकट भारीरे ॥भ०
यह संसार स्वपन की माया।
क्षणभंगुर जोवन धन काया।
परमेश्वरका नाम सुमर भवसागर तारी रे ॥भ०
नारी सुखसम सुख नहिं कोई।
सुरनर ऋषि मुनि भोगत सोई।
बिरथा भवजंजाल तिलकमाला बाँधरियो रे ॥भ०
नारी सुख दुख रूप बिकारी।
जन्म मरण भव बंधनकारी।
पामरलोक लुभायरहा हरिनामबिसरियो रे ॥भ०
चन्द्रकिरण मुखपंकज नैनी।
कोमल गात मधुर पिक बैनी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

नहींभोगीजिननारवृथा जगमें अवतरियो रे ॥भ०
शीश किरीट गले वनमाला।
चतुरभुजा कर गदा विशाला।
धरानहींजिनध्यान वृथाजगमें पचमरियो रे ॥ भ०
सुन्दर तन जोबन रस भीनी।
हार सिंगार विहार प्रवीनी।
कंठलगीनहीं वामकामनिष्फलसवकरियो रे ॥भ०
कमलनयन पीतांबरधारी।
कमल मेखला भवभयहारी।
सुमरोनहींजिननामनरकमें जाकरगिरियो रे ॥भ०
अलक भाल गल मोतिन हारा।
कटिकरजघ कठिन कुचभारा।
नारी सुखकी लानजानसब छोड़ भगरियो रे भ०
तिलक भाल गल कौस्तुभ राजे।
वाम अंग में लक्ष्मी विराजे।
परमानंद निवान सकलभवबंधनहरियो रे ॥भ०
कंचन देह परम सुख देनी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अतर फुलेल सुगंधित बेनी ।
गल फूलन के हार रूप दीखे मनहरियो रे ।।भ०
हाड़ मांस का बना शरीरा ।
भीतर भरा रुधिरल नीरा ।
बिनविचारबाहिरसेदीखत है सुन्दरियो रे ।। भ०
ऊंचे महल पवन सुखदाई ।
चुनचुन फूलन सेज बिछाई ।
करोकामनोभोगयोगमें क्यासखपड़ियो रे ।।भ०
गंगा तट गिरि गुफा सहाई ।
मृगछाला तल कुशा बिछाई ।
करोसमाधीयोगभोग भवजालविदड़ियो रे ।।भ०
नारीसे सब जग उपजाई ।
ब्रह्मा शिव हरि अंग लगाई ।
तुम बालक नहींजानो विषयानंदलहरियो रे ।।भ०
तुम अपने घर जावो नारी ।
हमको वांछा नहीं तुम्हारी ।
ब्रह्मानंद [illegible] रे ।।भ०

Kirtikant Sharma Collection, Nalagarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(लवणी रसल)

कहे भक्तप्रह्लादपिताजी हरीभजनमुझेकरनेदे
मानुष देह मिली दृढ़नौका भवसागरजलतरनेदे
रामनामधरतन अमोलक गुप्त खजाना भरनेदे
प्रभुके चरणकमलमें मेरे निश्चलमनको धरनेदे १
बात हमारी मानो बेटा रामनाम मत याद करो
हमारी आज्ञासिरपरधारोनहिंबिरथा संवाद करो
मारखड्गउड़ाऊँ सिरकोफिर किससेफरियादकरो
तुम बच्चेहोमेरे आगेमत ज्यादा बकवाद करो २
राज्यपाट सुखभोगपिताजी क्षणभंगुरकहलाते हैं
जीव अकेला आवेजावे कोई संग नहीं जाते हैं
हरिका नाम जपेंजो निशदिनसोई मोक्षपद पाते हैं
मारणहाराकौन जगतमें जिनकोराम रखाते ३
सबदेवनको जीत युद्धमें राज्यजगतका पाया है
स्वर्गलोक पाताल जिमींपर मेरा हुक्म चलाया है
मेरी बात न माने मूरख काल तेरे सिर छाया है
एकपलकमें मार गिराऊँ कोईनहोयसहाया है ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मतकर गर्वगुमान पिताजी नश्वर तन धन सारे हैं
बड़े बड़े पृथ्वी के राजा काल बली ने मारे हैं
मेरी मेरी करत गये सब खाली हाथ पसारे हैं
सोईअमररहे जग मांही जो मन राम सहारे हैं ५
कठिन तपस्या करके मैंने वर ब्रह्मा से धारा है
अमरहोयकरराज्य करूं मैं जबलग सूरजतारा है
मेरा नाम सुनत सब कांपे देव दैत्य गण सारा है
कौन जगत के अंदर मुझको दूजा मारणहारा है ६
ब्रह्मा इन्द्र कोटि चल जावे कायम नहीं रहाते हैं
फिर कैसे जगमें थिर होवे जो उनसे वर पाते हैं
राजपाट धन माल खजाने सभी छोड़करजाते हैं
वर्ष अनेक रहे जगमांही अन्तकाल वश आते हैं ७
कहाँ तेरा वो है रखवारा जिसका तुझे सहारा है
बारबार समझाउं तुझको माने नहीं गवारा है
एकखड्गसे करूं तुम्हारा धड़से शीशनियारा है
अबमैं देखूं कौन जगतमें तुझे बचावनहारा है ८
सकलजगतकावोहै स्वामि जिसका तुझे सहारा है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

तांमें मोंमें खड्गखंभ में व्यापक विश्व अधारा है
खंभफोड़कर प्रगटभये नरसिंह रूप हरिधारा है
ब्रह्मानंद पकड़पलमांही फाड़दैत्यको मारा है ९

(लावणी सरल)

नारायणका नामसदानर निशंअन्दरलाना चहिये
मानुषतन है दुर्लभजगमें इसका फलपाना चहिये
दुर्जनसंग नरकका मारग उनसे दूर जान चहिये
सतसंगतमेंबैठहमेशा हरिके गुण गाना चहिये
धर्म कमाई करके अपने हाथों की खाना चाहिये
दुखीदीनजनदेख दयाकरकेकुछ दिलवाना चहिये
परनारी को अपनी माता के समान जाना चहिये
सब जीवन दुख सुख अपनेतन जैसे माना चहिये
झुठकपटकी बात सदा कहने में शरमाना चहिये
सत्यबोलनेकी आदतको मनमें अटकाना चहिये
आशगंजकाखेलतमाशा सबकोछिटकाना चहिये
कथापुराण संतसंगमें दिलको बहलाना चहिये
मातापिता अरु [illegible] आज्ञा सदाबजाना चहिये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

करे जो नर उपकारसदा उसकागण सुमरानाच०
कामशुरु जो कियाहोय शुभ उसकी निपटानाच०
बुरेकामका होय विचारतो मनमें तरकानाचहिये
पापकर्महोजाय सदाफिर दिलमें पछतानाचहिये
करके पुण्यकाकाम नामउसका फिरबिसरानाच०
विद्याअरुशुभगुण के कारण धनकोखरचानाचहिये
नाचरंगअरुपानभोगमें दिलकोसकुचाना चहिये
अन्नदानसमदान न दूजा उसकोबरताना चहिये
सदा सुपातर अरु दुखियोंको भोजनकरवानाच०
पशुपक्षी सबजीवजंतुको सखनित पहुँचानाच०
घटघटमें ईश्वर व्यापक है एकरूप माना चहिये
अपनी जोनर करे बुराई उसको सहजाना चहिये
कालखड़ा है सिरकेऊपर मनमें डर लानाचहिये
परउपकार सदाकरनेको मनमें हरषानचहिये
सबसे मिलजुलके दुनियामें उमरागुजरानाच०
नितउठके प्रभातसमेमें ईश्वरको ध्याना चहिये
भोगविलासछोड़ दुनियांके मनको ठहरानाच०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ज्ञानसीख सतगुरुसे रूप अपनेको पहचाना चहिये
ब्रह्मानंद लीन होय भवसागर तरजाना चहिये

(लावणी सरल)

हरिका नामसुमरनर प्यारे कभी भुलाना ना चहिये
पाकर मानुष तन दुनियांमें मुफ्त गमाना नाच०
झूठकपट अरु पापकर्मसे धनको कमाना नाचहिते
परनारीसे कभी भूलकर प्रीत लगाना ना चहिये
देकरके विश्वास किसीको फिर हरजाना नाचहिये
दुर्जनजनको अपने पासमें कभी बिठाना नाचहिये
सांचे मित्र से दिलकी कोई बातछिपाना नाचहिये
अपनेघरका भेदकभी दुश्मनको बताना नाचहिये
आमदसे पैसेका ज्यादा खर्च बढाना नाचाहिये
लोक बड़ाईमें कर आकर धनकोलुटाना नाचहिये
वेदशास्त्रके धर्म सनातनको बदलाना नाचहिये
नये नये पंथोंकी बातें सुनके फसाना नाचहिये
आश पराई बुरी हमेशा मनमें लगाना नाचहिये
अपना पुरुषार्थ करनेमें दिल शरमाना नाचहिये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

पुण्यकर्म करके पीछे मनमें पछताना नाचहिये
पापकर्मकीतरफ कभी मनको ललचाना नाचहिये
जहाँन आदर होयकभी उसघरमें जाना नाचहिये
अपनेघरमें आये उनके दिलको दुखाना नाचहिये
विनामालिककेहुक्म किसीकीवस्तु उठानानाचहिये
घरके झगड़े कारण राजसभामें जाना नाचहिये
विनजाने परिणाम किसी कारजको बनाना ना०
अपना करना भरनादोष दूजेको लगाना नाचहिये
रणभूमी में जाकर मरने से डराना नाचहिये
विपत पड़ेजो आयकभी मनमें घबराना नाचहिये
ईश्वरअंश जीव है मारे दुख उपजाना नाचहिये
अपनेगुरु अरु मातपितासे कपट चलानाचहिये
परमेश्वर है तनमें बनमें खोजन जाना नाचहिये
कर संतसंग विचार सदा दिलसे बिसराना ना०
यह इन्द्रिय दुश्मन हैं तेरे वशमें आना नाचहिये
ज्ञानविवेक योग मारगसे दिलको हटाना नाचहिये
सबजग मिथ्याजानधरो नितध्यान डुबाना ना०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ब्रह्मानंदको पाकर फिर भवमें भरमाना नाचहिये

(लावणी लंगड़ी)

पुरुषार्थको करो सदा नर कर्मकर्न तुं क्या गावे
ऐसी वस्तु नहीं दुनियामें पुरुषार्थसे नहिं पावे
पुरुषार्थबिन होय दरिद्री दोष कर्मका बतलावे
सकल कामना सिद्ध होय जो पुरुषार्थ मनमें लावे
किरपा करके जगदीश्वरने मानुष तनयहदीना है
हाथ पांव सब अङ्ग मनोहर एकसे एक नवीना है
सबही जीव जूनके अन्दर सुन्दर एक नगीना है
पुरुषार्थ बिन व्यर्थ गमावे मूर्ख कदर नाचीना है
परमेश्वरने जगत बगीचा तुमरे काज बनाया है
किसिमकिसिमके फलफूलनसे सुन्दर खूबसजाया है
पुरुषार्थ वाले पुरुषोंने तोड़ तोड़ फल खाया है
मूढ़ आलसी बैठे देख बिरथा मन ललचाया है
बालपणे नहिं विद्या सीखे बिरथावखत गमाता है
जोबनमें पुरुषार्थ करके धनको नहीं कमाता है
भावीबात कभी नहिं सोचे बिरथा खरच कराता है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

बिनाद्रव्य कोई बात न पूछे मूढ़पणा पछताता है
पुरुषार्थ करनेसे ध्रुवने राज्य पिताका पाया है
गंगानदी भगीरथ राजा पुरुषारथसे लाया है
रामचंद्रने जाकर लंका रावण नाश कराया है
विश्वामित्र भी पुरुषारथसे ब्रह्मऋषि कहलाया है
पुरुषार्थ करनेसे भी जो काम नहीं बन आता है
उसको फिरफिरकरसोचकर अन्तवही बनजाता है
बिन बिचारके जतन करेजो सो पीछे पछताता है
हिमत हारहे नहीं पीछेसो निश्चय फल पाता है
कर्मगतीकी बात जो वेद पुराण ग्रन्थ में गाई है
वोतो मनके शोच फिकरके रोकनको समझाई है
सूते पड़े सिहके मुखमें नहीं शिकार समाई है
पूरे गुण अरु न्यायधर्मसे खूब करो चतुराई है
बालपड़ेमें बिद्या सीखो जोवन करो कमाई है
मातपिता नारीसुत बांधव सबके बनो सहाई है
वृद्ध पड़ेमें परमेश्वरका भजन करो सुखदाई है
ब्रह्मानंद मोक्षपद पावो जन्म सुफल हो जाई है ८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

(लावणी चलत)

काहे गर्व करे नर मूरख यह सबदुनियांफानी है
विनश जाय स्वपनेकी माया जिम अञ्जलिका पानी है
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र चल जावें क्या तेरी जिंदगानी है
पलमें नाश होय यह काया व्यर्थ बना अभिमानी है
कहांगये वो हिरणकश्यपजी दैत्यवीरबलवानबड़े
सकलजगतका राज्यजीतकरमनमेंगर्वगुमानभरे
कष्टदियो प्रहलाद भक्तको तबरक्षाभगवानकरे
नरसिंघरूपधरकारहरिने एकपलमें प्राणहरे २
कहांगये वो बलिराजा जिनरणमेंइन्द्रहराया था
स्वर्गलोकपातालजिमीपर अपनाराज्यचलाया था
सकलजगतमें यश करनेको भारी यज्ञरचाया था
तीनचरणपृथ्वीकेकारण हरि पातालबठाया था
कहां गये वो दशसिररावण तीनलोकवशकीनेथे
कठिन तपस्या करके जिसने शंकरसे वरलीनेथे
माल खजाने सेना भारी सुन्दर महल नगीनेथे
इन्द्र कुबेर वरुण यमराजा जिनके सभी अधीनेथे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कहांगये वो रामचंद्र जिन लंका नाशकराईथी
बानरकुलसे करी मित्रता सागर पुल बनवाईथी
पार समुंदर जाकर सारी राक्षसेना गिराईथी
जनकसुताकी बंधछुड़ाकर मनकीशोचमिटाइथी
कहाँ गये वोहरिश्चंद्रजिन सबधनदानकराथाया
सत्यधर्मके कारणअपना सकलकुटुंबविकाथाथा
भारीविपत पड़ीसिरऊपर मनकोनहींडुलायाथा
धर्मपरीक्षा पूरणकीनी तीनलोकयशछायाथा ६
कहांगये दुर्योधनराजा जिनके मन हंकारभरे
डारकपटका पासा जिसने सब भूमीका राज्यहरे
द्रुपदसुताको पकड़केशसे बीच सभाके नगनकरे
भीष्मद्रोणकर्णदुःशासन जिसकीआज्ञाशीशधरे
कहां गये वो पांचों पांडव सूरवीर बलकारीथे
जिनके हाथ अगाध भुजाबल दुष्टनके संहारीथे
सत्यवचननितधर्मपरायण साधुजनहितकारीथे
सदासहायक आपजिनोंके कृष्णचद्र गिराधारीथे
यहसंसार [illegible] जाता है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

पंडितयोगी सिद्धसरभा कोई रहननहि पाता है
भाईबंधु सुतधील विचारे झूठ जगत का नाता है
ब्रह्मानंद सुमरजगदीश्वर सब भवबंधमिटाता है ९

(राग विहार ताल ३ तर्ज वनआये गोपीनाथ)

श्रीकृष्ण कहे सुन अर्जुन बात हमारी
तुझको समझाउं ब्रह्मज्ञान निर्धारी ॥ टेक ॥
यह चेतनजीव बसे नित तिनके मांही ।
जिम राजा नगरी बीच निवास कराई ।
दश इन्द्रिय अरु मन सेवक हैं सुखदाइ ।
सब प्राण खड़े दरवान करें निगराई ।
अन्दर बैठा नित देखे रचना सारी ॥ १ ॥
यह पांच भूतका बना शरीर तुमारा ।
क्षणभंगुर है जड़रूप विनाशन हारा ।
बालापण जोबन जराशरीर विकारा ।
यामें साक्षी है जीव रहे नित न्यारा ।
कर जुदादेह अरुजीव तुं देख विचारी ॥२॥
जिम पंछी खोभकर पिंजरा मांहि फसाया ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

तिम जीव कर्म वश धारण कीनी काया ।
विषयों की लालच देख फिरे भरमाया ।
अपनो सुखचेतन सत्स्वरूप बिसराया ।
भवबंधन जीव पड़ा बिनज्ञान अनारी ॥३॥
जिम वस्त्र पुराणे छोड़ नये नर धारे ।
तिम जीव एकसे दूजी देह सिधारे ।
मरणा जनना है देहधर्म सुन प्यारे ।
अजरामर चेतन जीव मरे नहि मारे ।
यह है अविनाशी अचलरूप अविकारी ॥४॥
सब जीव अंश मेरे निश्चय कर जानो ।
घट घट में एक स्वरूप मुझे पहचानो ।
गौ कूकर ब्राह्मण श्वपच भेद नहिजानो ।
सबके सुख दुख को अपने समकर मानो ।
तज कामक्रोध अरलोभ मोह दुःखकारी ॥५॥
मुझको सब जीव बराबर है देखन में ।
पर भजे मुझको मजु तिनें मैं मनमें ।
यह बात सत्य है सुनी कहूं अर्जुन मैं ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मुझ भक्त पड़े नहिं फेर जन्म बन्धन में ।
निशदिन मनमें मुझ परम भक्ति करप्यारी ॥६॥
परमेश्वर पूरण ब्रह्म जगत उपजावे ।
माया चक्कर में जीव चढ़ाय फिरावे ।
युग बीत गये बेअन्त अन्त नहिं आवे ।
जो उसकी जावे शरण मोक्षपद पावे ।
कर भजन ईशका मिटे सकल भवभारी ॥७॥
सब सार ज्ञानका सुन अर्जुन अब प्यारा ।
मम शरण पड़ो नित और जर्म तज सारा ।
मैं सब पापोंको मेट करूँ भवपारा ।
मत करो जरा तुम मनमें शोचविचारा ।
तूँ ब्रह्मानंद स्वरूप सदा मनधारी ॥८॥

(राग बिहाग)

श्रीराम कहे सुन लछमन वचन हमारा
मत सोच करो मनबीच किसी परकारा ॥टेक॥
है कर्मगति बलवान जान दिल मांहीं ।
जो लिखे विधिके अंक मिटे वो नांहीं ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कर देखो जलन हमार पार नहि पाई ।
जो भावी परबल होय वही हो जाई ।
मूरख जन मनमें बिरथा करे बिचारा ॥१॥
जो मात केकईने अपना वर लीना ।
कर धर्म बिचार करार पिता ने दीना ।
मुझको बनवास मिला यह कर्म अधीना ।
नहि है इसमें कुछ दोष किसीका कीना ।
यह बात हमारी मान तजो हंकारा ॥२॥
जब कर्म आपना फल देने को आवे ।
अनजाने उसका हेतु खड़ा हो जावे ।
वो बड़े अकलमंदों की बुद्धि फिरावे ।
परवश माया के चक्कर में भरमावे ।
नहि समझ पड़े कर्मन की गति अपारा ॥३॥
राजा हो जावे रंक रंक नृप भारी ।
योगी भोगी हो जाय गही बनचारी ।
ज्ञानी नर मूरख होय मूढ मतिधारी ।
कायर होवे बलवान [illegible] ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सब रीत होय विपरीत कर्म आधारा ॥४॥
सब पांडव धर्मपरायण राज्य हराया।
हरिचन्द्र धर्मात्म नीच कुटुम्ब बिकाया।
नल राजाको वन जंगलमें भटकाया।
मुझको भी कर्मनने यह समय दिखाया।
तज राज्य तिलक वन कंदमूल आहारा ॥५॥
यह ऊँच नीच जग ईश्वर ने उपजाया।
निज कर्मन के अनुसार विचार बनाया।
जैसा जिसका है कर्म वही फलपाया।
है परमेश्वर का नियम न मिटे मिटाया।
इस कर्म डोरसे बांधा सब संसारा ॥६॥
यह पांच तत्व की देह बनी है भाई।
सुख दुख फल भोगन के हित कर्म रचाई।
जो चेतन जीव रहे हिरदे के मांही।
वो परमेश्वर का अंश वेद बतलाई।
उसमें चेतन हो रहा शरीर तुम्हारा ॥७॥
जब इस शरीर से जीव जुदा कर माना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सब व्यापक पूर्ण ब्रह्म रूप पहिचाना ।
तब मिटे कर्म का बंधन आवन जाना ।
सब मिले तत्त्वमें तत्त्व मोक्षपद पाना ।
यह ब्रह्मानंद विचार सार निर्धारा ॥८॥

(गुरु आरती)

जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी ।
जय जय मोहविनाशक भवबंधनहारी ॥
जय देव गुरु देव ॥१॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव गुरु मूरतिधारी ।
वेदपुराण बखानत गुरु महिमा भारी ॥२॥
जप तप तीरथ संयम दान विविधि दीने ।
गुरुबिन ज्ञाननहोवे कोटि जतन कीने ॥३॥
माया मोह नदी जल जीव बहे सारे ।
नाम जहाज बिठाकर गुरु पलमें तारे ॥४॥
काम क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारे ।
ज्ञान खड्ग दे करमें गुरु सब संहारे ॥५॥
नानापंथ जगतमें निज निज गुण गावे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सबका सार बता कर गुरु मारग लावे ॥६॥
गुरुचरणामृत निर्मल सब पातक हारी ।
वचन सुनत तम नाशे सब संशय टारी ॥७॥
तन मन धन सब अर्पण गरुचरणन कीजे ।
ब्रह्मानंद परम पद मोक्ष गती लीजे ॥८॥

(शिव आरती)

जय शिव शिव शिवशंकर जय गिरजाधीशा ।
जय जय करुणासागर पशुपति जगदीशा ॥
जय देव महादेव ॥१॥
जटा जूट सिर ऊपर सुरसरि धार चले ।
चंद्रकला मस्तक में मुंडन हार गले ॥२॥
भाल त्रिलोचन सुंदर कुंडल काननमें ।
भूषण नाग बिराजित बाघाम्बर तनमें ॥३॥
अंग बिभूति मनोहर गौर शरीर लसे ।
कर त्रिशूल परशुधर गिरिजासंग बसे ॥४॥
गिरि कैलास शिखर शुभ सिंहासन राजे ।
नन्दी गण गणनायक शोभित दरवाजे ॥५॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ऋषि मुनि सुरगण मिलकर महिमा गान करे।
योगी जन हिरदेमें निश दिन ध्यान धरे ॥६॥
सकल मनोरथ दायक दीनन दुख हर्ता।
जन्म मरण भवबंधन हारण सुख कर्ता ॥७॥
पूरण ब्रह्म निरंजन निर्गुण गुणराशी।
सकल जगत प्रतिपालक कारण अविनाशी ॥८॥
जो जन शिवकी आरति गायन नित्य करे।
ब्रह्मानंद सहज में सो भवसिन्धु तरे ॥९॥

(विष्णु आरती)

जय जगदीश्वर ईश्वर करुणानिधि स्वामी।
जय जय सब जगपालक प्रभु अंतर्यामी॥
जय देव हरिदेव ॥१॥
श्याम स्वरूप मनोहर पीत वसन धारी।
शशि मण्डल मुखशोभा मंदहसन प्यारी ॥२॥
शीश मुकुट मकराकृति कुंडल काननमें।
मस्तक तिलक बिराजे बनमाला तनमें ॥३॥
चतुर भुजा बाजुबंद कंकण सुखदाई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

शंख चक्र गदा पद्म विराजे कर माही ॥४॥
कटिमें मणिमय सुंदर मेखल राज रही ।
चरणनमें नूपुर धुनि छन छन वाज रही ॥५॥
वाम अंकमें कमलाजाको मुख पंकज सोहे ।
निरख युगल छविसुंदर ऋषिमुनि मनमोहे ॥६॥
स्वर्ण सिंधासन विस्तर कोमल सुखकारी ।
शेषनाग फण छत्र विराजे सिर भारी ॥७॥
गरुड खडे करजोडे पार्षद चमर करे ।
शिव सनकादिक नारद शारद ध्यान धरे ॥८॥
दीनदयाल दयानिधि भक्तन हितकारी ।
शरणागत प्रतिपालक भवबंधनहारी ॥९॥
जो जन हरिकी आरति प्रेमसहित गावे ।
ब्रह्मानंद परमपद सो निश्चय पावे ॥१०॥

॥ जय देव हरिदेव ॥

इति श्रीब्रह्मानंदस्वामिविरचिता भजनमाला समाप्ता

—।०।—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh